

1 शमूएल

एल्काना और उसका परिवार शीलो में आराधना करता है

1 एल्काना नामक एक व्यक्ति था। वह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के रामातैमसोपीम का निवासी था। एल्काना सूप परिवार का था। एल्काना यरोहाम* का पुत्र था। यरोहाम एलीहू का पुत्र था। एलीहू तोहू का पुत्र था और तोहू सूप का पुत्र था, जो एप्रैम के परिवार समूह से था।
²एल्काना की दो पत्नियाँ थीं। एक का नाम हन्ना था और दूसरी का नाम पनिन्ना था। पनिन्ना के बच्चे थे, किन्तु हन्ना के कोई बच्चा नहीं था।

³एल्काना हर वर्ष अपने नगर रामातैमसोपीम को छोड़ देता था और शीलो नगर जाता था। एल्काना सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना शीलो में करता था और वहाँ यहोवा को बलि भेंट करता था। शीलो वह स्थान था, जहाँ होप्नी और पीनहास यहोवा के याजक के रूप में सेवा करते थे। होप्नी और पीनहास एली के पुत्र थे।
⁴जब कभी एल्काना अपनी बलि भेंट करता था, वह भेंट का एक अंश अपनी पत्नी पनिन्ना को देता था। एल्काना भेंट का अंश पनिन्ना के बच्चों को भी देता था।
⁵एल्काना भेंट का एक बराबर का अंश* हन्ना को भी सदा दिया करता था। एल्काना यह तब भी करता रहा जब यहोवा ने हन्ना को कोई सन्तान नहीं दी थी। एल्काना यह इसलिये करता था कि हन्ना उसकी वह पत्नी थी जिससे वह सच्चा प्रेम करता था।

पनिन्ना हन्ना को परेशान करती है

⁶पनिन्ना हन्ना को सदा खिन्नता और परेशानी का अनुभव कराती थी। पनिन्ना यह इसलिये करती थी क्योंकि हन्ना कोई बच्चा पैदा नहीं कर सकती थी।⁷ हर

यरोहाम या "जेरहमीला"
 बराबर का अंश "दूना अंश।"

वर्ष जब उनका परिवार शीलो में यहोवा के आराधनालय में जाता, पनिन्ना, हन्ना को परेशानी में डाल देती थी। एक दिन जब एल्काना बलि भेंट अर्पित कर रहा था। हन्ना परेशानी का अनुभव करने लगी और रोने लगी। हन्ना ने कुछ भी खाने से इन्कार कर दिया।⁸उसके पति एल्काना ने उससे कहा, "हन्ना, तुम रो क्यों रही हो? तुम खाना क्यों नहीं खाती? तुम दुःखी क्यों हो? मैं, तुम्हारा पति, तुम्हारा हूँ। तुम्हें सोचना चाहिए कि मैं तुम्हारे लिए तुम्हारे दस पुत्रों से अच्छा हूँ।"

हन्ना की प्रार्थना

⁹खाने और पीने के बाद हन्ना चुपचाप उठी और यहोवा से प्रार्थना करने गई। यहोवा के पवित्र आराधनालय के द्वार के निकट कुर्सी पर याजक एली बैठा था।¹⁰हन्ना बहुत दुःखी थी। वह बहुत रोई जब उसने यहोवा से प्रार्थना की।¹¹उसने परमेश्वर से विशेष प्रतिज्ञा की। उसने कहा, "सर्वशक्तिमान यहोवा, देखो मैं कितनी अधिक दुःखी हूँ। मुझे याद रखो! मुझे भूलो नहीं। यदि तुम मुझे एक पुत्र दोगे तो मैं पूरे जीवन के लिये उसे तुमको अर्पित कर दूँगी। यह नाजीर पुत्र होगा: वह दाखमधु या तेज मंदिरा नहीं पीएगा* और कोई उसके बाल नहीं काटेगा।"¹²

¹²हन्ना ने बहुत देर तक प्रार्थना की। जिस समय हन्ना प्रार्थना कर रही थी, एली ने उसका मुख देखा।¹³हन्ना अपने हृदय में प्रार्थना कर रही थी। उसके होंठ हिल रहे थे, किन्तु कोई आवाज नहीं निकल रही थी।¹⁴एली ने समझा

वह दाखमधु ... पीएगा यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है और कुमरान से मिले दण्ड में लिपटे प्राचीन पत्रकों में से एक में है किन्तु यह मानक हिब्रू पाठ में नहीं है।

और कोई ... काटेगा वे लोग जो अपने बाल न काटने और दाखमधु न पीने की प्रतिज्ञा कर 5ते थे, नाजीर कहे जाते थे। देखें गिनती 6:5 ये लोग अपना जीवन परमेश्वर को सौंपते थे।

कि हन्ना दाखमधु से मत है। एली ने हन्ना से कहा, “तुम्हारे पास पीने को अत्याधिक था! अब समय है कि दाखमधु को दूर करो।”

¹⁵हन्ना ने उत्तर दिया, “मैंने दाखमधु या दाखरस नहीं पिया है। मैं बहुत अधिक परेशान हूँ। मैं यहोवा से प्रार्थना करके अपनी समस्याओं का निवेदन कर रही थी। ¹⁶मत सोचो कि मैं बुरी स्त्री हूँ। मैं इतनी देर तक इसलिए प्रार्थना कर रही थी कि मुझे अनेक परेशानियाँ हैं और मैं बहुत दुःखी हूँ।”

¹⁷एली ने उत्तर दिया, “शान्तिपूर्वक जाओ। इझ्राएल का परमेश्वर तुम्हें वह दे, जो तुमने मांगा है।”

¹⁸हन्ना ने कहा, “मुझे आशा है कि आप मुझसे प्रसन्न हैं।” तब हन्ना गई और उसने कुछ खाया। वह अब दुःखी नहीं थी।

¹⁹दूसरे दिन सवेरे एल्काना का परिवार उठा। उन्होंने परमेश्वर की उपासना की और वे अपने घर रामा को लौट गए।

शमूएल का जन्म

एल्काना ने अपनी पत्नी हन्ना के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया, यहोवा ने हन्ना की प्रार्थना को याद रखा। ²⁰हन्ना गर्भवती हुई और उसे एक पुत्र हुआ। हन्ना ने उसका नाम शमूएल* रखा। उसने कहा, “इसका नाम शमूएल है क्योंकि मैंने इसे यहोवा से माँगा है।”

²¹उस वर्ष एल्काना बलि-भेंट देने और परमेश्वर के सामने की गई प्रतिज्ञा को पूरा करने शीलो गया। वह अपने परिवार को अपने साथ ले गया। ²²किन्तु हन्ना नहीं गई। उसने एल्काना से कहा, “जब लड़का ठोस भोजन करने योग्य हो जायेगा, तब मैं इसे शीलो ले जाऊँगी। तब मैं उसे यहोवा को दूँगी। वह एक नाज़ीर बनेगा* और वह शीलो में रहेगा।”

शमूएल इस नाम का अर्थ “उसका नाम परमेश्वर है। किन्तु हिब्रू में यदि आप एक वर्ण हटा दें तो यह “माँगना” शब्द की तरह या “शाऊल” नाम की तरह होगा। शमूएल में कई स्थान हैं जहाँ “शाऊल” नाम, शमूएल और माँगना में श्लेष के रूप में आया है।

वह एक नाज़ीर बनेगा यह हिब्रू का मानकपाठ नहीं है किन्तु यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। और कुमरान से प्राप्त दण्ड में लिपटे प्राचीन हिब्रू पत्रकों में से एक में है।

²³हन्ना के पति एल्काना ने उससे कहा, “वही करो जिसे तुम उत्तम समझती हो। तुम तब तक घर में रह सकती हो जब तक लड़का ठोस भोजन करने योग्य बड़ा नहीं हो जाता। यहोवा वही करे जो तुमने कहा है।” इसलिये हन्ना अपने बच्चे का पालन पोषण तब तक करने के लिये घर पर ही रह गई जब तक वह ठोस भोजन करने योग्य बड़ा नहीं हो जाता।

हन्ना शमूएल को शीलो में एली के पास ले जाती है

²⁴जब लड़का ठोस भोजन करने योग्य बड़ा हो गया, तब हन्ना उसे शीलो में यहोवा के आराधनालय पर ले गई। हन्ना अपने साथ तीन वर्ष का एक बैल, बीस पौंड आटा और एक मशक दाखमधु भी ले गई।

²⁵वे यहोवा के सामने गए। एल्काना ने यहोवा के लिए बलि के रूप में बैल को मारा जैसा वह प्रायः करता था* तब हन्ना लड़के को एली के पास ले आई। ²⁶हन्ना ने एली से कहा, “महोदय, क्षमा करें। मैं वही स्त्री हूँ जो यहोवा से प्रार्थना करते हुए आप के पास खड़ी थी। मैं वचन देती हूँ कि मैं सत्य कह रही हूँ। ²⁷मैंने इस बच्चे के लिये प्रार्थना की थी। यहोवा ने मुझे यह बच्चा दिया ²⁸और अब मैं इस बच्चे को यहोवा को दे रही हूँ। यह पूरे जीवन यहोवा का रहेगा।”

तब हन्ना ने बच्चे को वहीं छोड़ा* और यहोवा की उपासना की।

हन्ना धन्यवाद देती है

2 हन्ना ने कहा:

“यहोवा में, मेरा हृदय प्रसन्न है!

मैं अपने परमेश्वर में शक्तिमती*

अनुभव करती हूँ!

मैं अपनी विजय से पूर्ण प्रसन्न हूँ!

और अपने शत्रुओं की हँसी उड़ाई हूँ।”

वे यहोवा ... करता था यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद और कुमरान से प्राप्त दण्ड में लिपटे प्राचीन पत्रकों में से एक है। यह हिब्रू के मानक पाठ में नहीं है।

तब ... छोड़ा यह कुमरान से प्राप्त दण्ड में लिपटे प्राचीन हिब्रू पत्रकों में से एक में है। यह हिब्रू के मानक पाठ में नहीं है। **शक्तिमती** “यहोवा की उपासना में मेरा सिंगा ऊँचा उठा है।” सिंगा शक्ति का प्रतीक है।

- 2 यहोवा के सदृश कोई पवित्र परमेश्वर नहीं।
तेरे अतिरिक्त कोई परमेश्वर नहीं।
परमेश्वर के अतिरिक्त कोई
आश्रय शिला* नहीं।
- 3 बन्द करो डीगों का हाँकना!
घमण्ड भरी बातें न करो!
क्यों? क्योंकि यहोवा परमेश्वर
सब कुछ जानता है,
परमेश्वर लोगों को राह दिखाता है
और उनका न्याय करता है।
- 4 शक्तिशाली योद्धाओं के धनुष टूटते हैं!
और दुर्बल शक्तिशाली बनते हैं!
- 5 जो लोग बीते समय में बहुत भोजन वाले थे,
उन्हें अब भोजन पाने के लिये
काम करना होगा।
किन्तु जो बीते समय में भूखे थे,
वे अब भोजन पाकर मोटे हो रहे हैं!
जो स्त्री बच्चा उत्पन्न नहीं कर सकती थी
अब सात बच्चों वाली है!
किन्तु जो बहुत बच्चों वाली थी, दुःखी है
क्योंकि उसके बच्चे चले गये।
- 6 यहोवा लोगों को मृत्यु देता है,
और वह उन्हें जीवित रहने देता है।
यहोवा लोगों को मृत्युस्थल व अधोलोक को
पहुँचाता है, और पुनः वह उन्हें
जीवन देकर उठाता है।
- 7 यहोवा लोगों को दीन बनाता है,
और यहोवा ही लोगों को धनी बनाता है।
यहोवा लोगों को नीचा करता है,
और वह लोगों को ऊँचा उठाता है।
- 8 यहोवा कंगालों को धूल से उठाता है।
यहोवा उनके दुःख को दूर करता है।
यहोवा कंगालों को राजाओं के
साथ बिठाता है।
यहोवा कंगालों को प्रतिष्ठित
सिंहासन पर बिठाता है।

पूरा जगत अपनी नींव तक यहोवा का है!
यहोवा जगत को उन
खम्भों पर टिकाया है!

- 9 यहोवा अपने पवित्र लोगों की रक्षा करता है।
वह उन्हें ठोकर खाकर गिरने से बचाता है।
किन्तु पापी लोग नष्ट किये जाएंगे।
वे घोर अंधेरे में गिरेंगे।
उनकी शक्ति उन्हें विजय प्राप्त करने में
सहायक नहीं होगी।
- 10 यहोवा अपने शत्रुओं को नष्ट करता है।
सर्वोच्च परमेश्वर लोगों के विरुद्ध
गगन में गरजेगा।
यहोवा सारी पृथ्वी का न्याय करेगा।
यहोवा अपने राजा को शक्ति देगा।
वह अपने अभीष्टिक राजा को
शक्तिशाली बनायेगा।”

¹¹एल्काना और उसका परिवार अपने घर रामा
को गया। लड़का शीलो में रह गया और याजक एली
के अधीन यहोवा की सेवा करता रहा।

एली के बुरे पुत्र

¹²एली के पुत्र बुरे व्यक्ति थे। वे यहोवा की परवाह
नहीं करते थे। ¹³वे इसकी परवाह नहीं करते थे कि
याजकों से लोगों के प्रति कैसे व्यवहार की आशा की
जाती है। याजकों को लोगों के लिये यह करना चाहिए:
जब कभी कोई व्यक्ति बलि-भेंट लाये, तो याजक
को एक बर्तन में माँस को उबालना चाहिये। याजक
के सेवक को अपने हाथ में विशेष काँटा जिसके
तीन नोक हैं, लेकर आना चाहिए। ¹⁴याजक के सेवक
को काँटे को बर्तन या पतिले में डालना चाहिए। काँटे
से जो कुछ बर्तन के बाहर लाये वह माँस याजक का
होगा। यह याजकों द्वारा उन इज्राएलियों के लिये किया
जाना चाहिये जो शीलो में बलि-भेंट करने आये।

¹⁵किन्तु एली के पुत्रों ने यह नहीं किया। चर्बी को
वेदी पर जलाये जाने के पहले ही उनके सेवक लोगों
के पास बलि-भेंट करते जाते थे। याजक के सेवक
कहा करते थे, “याजक को कुछ माँस भूनने के लिये
दो। याजक तुमसे उबला हुआ माँस नहीं लेंगे।”

आश्रय शिला परमेश्वर के लिये एक नाम। यह बताता
है कि वह किले या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

¹⁶बलि-भेंट करने वाला व्यक्ति यह कह सकता था, "पहले चर्बी जलाओ,* तब तुम जो चाहो ले सकते हो।" यदि ऐसा होता तो याजक का सेवक उत्तर देता: "नहीं, मुझे अभी माँस दो, यदि तुम मुझे यह नहीं देते हो तो मैं इसे तुमसे ले ही लूँगा।"

¹⁷इस प्रकार, होप्नी और पीनहास यह दिखाते थे कि वे यहोवा को भेंट की गई बलि के प्रति श्रद्धा नहीं रखते थे। यह यहोवा के विरुद्ध बहुत बुरा पाप था!

¹⁸किन्तु शमूएल यहोवा की सेवा करता था। शमूएल सन का बना एक विशेष एपोद पहनता था। ¹⁹हर वर्ष शमूएल की माँ एक छोटा चोंगा शमूएल के लिये बनाती थी। वह हर वर्ष जब अपने पति के साथ बलि-भेंट करने शीलो जाती थी तो वह छोटा चोंगा शमूएल के लिए ले जाती थी।

²⁰एली, एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देता था। एली ने कहा, "यहोवा तुम्हें हन्ना द्वारा सन्तान देकर बदला दे। ये बच्चे उस लड़के का स्थान लेंगे जिसके लिये हन्ना ने प्रार्थना की थी और यहोवा को दिया था।"

तब एल्काना और हन्ना घर लौटे, और ²¹यहोवा ने हन्ना पर दया की। उसके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं और लड़का शमूएल यहोवा के पास बड़ा हुआ।

एली अपने पापी पुत्रों पर नियन्त्रण करने में असफल

²²एली बहुत बूढ़ा था। वह बार-बार उन बुरे कामों के बारे में सुनता था जो उसके पुत्र शीलो में सभी इब्राएलियों के साथ कर रहे थे। एली ने यह भी सुना कि जो स्त्रियाँ मिलापवाले तम्बूके द्वार पर सेवा करती थी, उनके साथ वे सोते थे।

²³एली ने अपने पुत्रों से कहा, "तुमने जो कुछ बुरा किया है उसके बारे में लोगों ने यहाँ मुझे बताया है। तुम लोग ये बुरे काम क्यों करते हो? ²⁴पुत्रों, इन बुरे कामों को मत करो। यहोवा के लोग तुम्हारे विषय में बुरी बातें कह रहे हैं। ²⁵यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के विरुद्ध पाप करता है, तो परमेश्वर उसकी मध्यस्थता कर सकता है। किन्तु यदि कोई व्यक्ति

यहोवा के ही विरुद्ध पाप करता है तो उस व्यक्ति की मध्यस्थता कौन कर सकता है?"

किन्तु एली के पुत्रों ने एली की बात सुनने से इन्कार कर दिया। इसलिए यहोवा ने एली के पुत्रों को मार डालने का निश्चय किया।

²⁶बालक शमूएल बढ़ता रहा। उसने परमेश्वर और लोगों को प्रसन्न किया।

एली के परिवार के विषय में भयंकर भविष्यवाणी

²⁷परमेश्वर का एक व्यक्ति एली के पास आया। उसने कहा, "यहोवा यह बात कहता है, 'तुम्हारे पूर्वज फ़िरौन के परिवार के गुलाम थे। किन्तु मैं तुम्हारे पूर्वजों के सामने उस समय प्रकट हुआ। ²⁸मैंने तुम्हारे परिवार समूह को इब्राएल के सभी परिवार समूहों में से चुना। मैंने तुम्हारे परिवार समूह को अपना याजक बनने के लिये चुना। मैंने उन्हें अपनी वेदी पर बलि-भेंट करने के लिये चुना। मैंने उन्हें सुगन्ध जलाने और एपोद पहनने के लिये चुना। मैंने तुम्हारे परिवार समूह को बलि-भेंट से वह माँस भी लेने दिया जो इब्राएल के लोग मुझको चढ़ाते हैं। ²⁹इसलिए तुम उन बलि-भेंटों और अन्नबलियों का सम्मान क्यों नहीं करते। तुम अपने पुत्रों को मुझसे अधिक सम्मान देते हो। तुम माँस के उस सर्वोत्तम भाग से मोटे हुए हो जिसे इब्राएल के लोग मेरे लिये लाते हैं।'

³⁰इब्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह वचन दिया था कि तुम्हारे पिता का परिवार ही सदा उसकी सेवा करेगा। किन्तु अब यहोवा यह कहता है, 'वैसा कभी नहीं होगा! मैं उन लोगों का सम्मान करूँगा जो मेरा सम्मान करेंगे। किन्तु उनका बुरा होगा जो मेरा सम्मान करने से इन्कार करते हैं। ³¹वह समय आ रहा है जब मैं तुम्हारे सारे वंशजों को नष्ट कर दूँगा। तुम्हारे परिवार में कोई बूढ़ा होने के लिये नहीं बचेगा। ³²इब्राएल के लिये अच्छी चीजें होंगी, किन्तु तुम घर में बुरी घटनाएँ होती देखोगे। तुम्हारे परिवार में कोई भी बूढ़ा होने के लिये नहीं बचेगा। ³³केवल एक व्यक्ति को मैं अपनी वेदी पर याजक के रूप में सेवा के लिये बचाऊँगा। वह बहुत अधिक बुढ़ापे तक रहेगा। वह तब तक जीवित रहेगा जब तक उसकी आँखें और उसकी शक्ति बची रहेगी। तुम्हारे शेष वंशज तलवार के घाट उतारे जाएंगे। ³⁴मैं तुम्हें एक संकेत दूँगा जिससे यह ज्ञात होगा कि ये बातें सच होंगी। तुम्हारे दोनों

पहले चर्बी जलाओ चर्बी जानवर का वह भाग थी जो परमेश्वर का था। याजकों से आशा की जाती थी कि वे परमेश्वर की भेंट के रूप में उसे वेदी में जलायें।

पुत्र होप्नी और पीनहास एक ही दिन मरेंगे।³⁵ मैं अपने लिये एक विश्वसनीय याजक ठहराऊँगा। वह याजक मेरी बात मानेगा और जो मैं चाहता हूँ, करेगा। मैं इस याजक के परिवार को शक्तिशाली बनाऊँगा। वह सदा मेरे अभिषिक्त राजा के सामने सेवा करेगा।³⁶ तब सभी लोग जो तुम्हारे परिवार में बचे रहेंगे, आएंगे और इस याजक के आगे झुकेंगे। ये लोग थोड़े धन या रोटी के टुकड़े के लिए भीख मांगेंगे। वे कहेंगे, “कृपया याजक का सेवा कार्य हमें दे दो जिससे हम भोजन पा सकें।” ”

शमूएल को परमेश्वर का बुलावा

3 बालक शमूएल एली के अधीन यहोवा की सेवा करता रहा। उन दिनों, यहोवा प्रायः लोगों से सीधे बातें नहीं करता था। बहुत कम ही दर्शन हुआ करता था।

²एली की दृष्टि इतनी कमजोर थी कि वह लगभग अन्धा था। एक रात वह बिस्तर पर सोया हुआ था।

³शमूएल यहोवा के पवित्र आराधनालय में बिस्तर पर सो रहा था। उस पवित्र आराधनालय में परमेश्वर का पवित्र सन्दूक था। यहोवा का दीपक अब भी जल रहा था।⁴ यहोवा ने शमूएल को बुलाया। शमूएल ने उत्तर दिया, “मैं यहाँ उपस्थित हूँ।”⁵ शमूएल को लगा कि उसे एली बुला रहा है। इसलिए शमूएल दौड़कर एली के पास गया। शमूएल ने एली से कहा, “मैं यहाँ हूँ। आपने मुझे बुलाया।”

किन्तु एली ने कहा, “मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। अपने बिस्तर में जाओ।”

शमूएल अपने बिस्तर पर लौट गया।⁶ यहोवा ने फिर बुलाया, “शमूएल!” शमूएल फिर दौड़कर एली के पास गया। शमूएल ने कहा, “मैं यहाँ हूँ। आपने मुझे बुलाया।”

एली ने कहा, “मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, अपने बिस्तर में जाओ।”

⁷शमूएल अभी तक यहोवा को नहीं जानता था। यहोवा ने अभी तक उससे सीधे बात नहीं की थी।

⁸यहोवा ने शमूएल को तीसरी बार बुलाया। शमूएल फिर उठा और एली के पास गया। शमूएल ने कहा, “मैं आ गया। आपने मुझे बुलाया।” तब एली ने समझा कि यहोवा लड़के को बुला रहा है।⁹ एली ने शमूएल से कहा, “बिस्तर में जाओ। यदि वह तुम्हें फिर बुलाता है तो कहो, ‘यहोवा बोल! मैं तेरा सेवक हूँ और सुन रहा हूँ।’”

सो शमूएल बिस्तर में चला गया।¹⁰ यहोवा आया और वहाँ खड़ा हो गया। उसने पहले की तरह बुलाया। उसने कहा, “शमूएल, शमूएल!” शमूएल ने कहा, “बोल! मैं तेरा सेवक हूँ और सुन रहा हूँ।”

¹¹यहोवा ने शमूएल से कहा, “ मैं शीघ्र ही इब्राएल में कुछ करूँगा। जो लोग इसे सुनेंगे उनके कान झन्ना उठेंगे।¹² मैं वह सब कुछ करूँगा जो मैंने एली और उसके परिवार के विरुद्ध करने को कहा है। मैं आरम्भ से अन्त तक सब कुछ करूँगा।¹³ मैंने एली से कहा है कि मैं उसके परिवार को सदा के लिये दण्ड दूँगा। मैं यह इसलिए करूँगा कि एली जानता है कि उसके पुत्रों ने परमेश्वर के विरुद्ध बुरा कहा है, और किया है, और एली उन पर नियन्त्रण करने में असफल रहा है।¹⁴ यही कारण है कि मैंने एली के परिवार को शाप दिया है कि बलि-भेंट और अन्नबलि उनके पापों को दूर नहीं कर सकती।”

¹⁵शमूएल सवेरा होने तक बिस्तर में पड़ा रहा। वह तड़के उठा और उसने यहोवा के मन्दिर के द्वार को खोला। शमूएल अपने दर्शन की बात एली से कहने में डरता था।¹⁶ किन्तु एली ने शमूएल से कहा, “मेरे पुत्र, शमूएल!” शमूएल ने उत्तर दिया, “हाँ, महोदय।”

¹⁷एली ने पूछा, “यहोवा ने तुमसे क्या कहा? उसे मुझसे मत छिपाओ। परमेश्वर तुम्हें दण्ड देगा, यदि परमेश्वर ने जो सन्देश तुमको दिया है उसमें से कुछ भी छिपाओगे।”¹⁸ इसलिए शमूएल ने एली को वह हर एक बात बताई। शमूएल ने एली से कुछ भी नहीं छिपाया। एली ने कहा, “वह यहोवा है। उसे वैसा ही करने दो जैसा उसे अच्छा लगता है।”

¹⁹शमूएल बड़ा होता रहा और यहोवा उसके साथ रहा। यहोवा ने शमूएल के किसी सन्देश को असत्य नहीं होने दिया।²⁰ तब सारा इब्राएल, दान से लेकर बर्षा तक, समझ गया कि शमूएल यहोवा का सच्चा नबी है।²¹ शीलो में यहोवा शमूएल के सामने प्रकट होता रहा। यहोवा ने शमूएल के आगे अपने आपको वचन* के द्वारा प्रकट किया।

वचन कभी-कभी यहोवा के वचन का अर्थ परमेश्वर का संदेश भी होता है। किन्तु कभी-कभी उसका अर्थ यह भी होता है कि यह परमेश्वर का एक विशेष प्रकार या रूप होता है जिसे वह उस समय काम में लाता है जब वह अपने नबियों के साथ बात करता है।

4 शमूएल के विषय में समाचार पूरे इम्राएल में फैल गया। एली बहुत बूढ़ा हो गया था। उसके पुत्र यहोवा के सामने बुरा काम करते रहे।*

पलिशतियों ने इम्राएलियों को हराया

उस समय, पलिशती इम्राएल के विरुद्ध युद्ध करने के लिये तैयार हुए। इम्राएली पलिशतियों के विरुद्ध लड़ने गए। इम्राएलियों ने अपना डेरा एबेनेज़ेर में डाला। पलिशतियों ने अपना डेरा अपेक में डाला।²पलिशतियों ने इम्राएल पर आक्रमण करने की तैयारी की। युद्ध आरम्भ हो गया। पलिशतियों ने इम्राएलियों को हरा दिया। पलिशतियों ने इम्राएल की सेना के लगभग चार हजार सैनिकों को मार डाला।³इम्राएलियों के बाकी सैनिक अपने डेरे में लौट गए। इम्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) ने पूछा, “यहोवा ने पलिशतियों को हमें क्यों पराजित करने दिया? हम लोग शीलो से वाचा के सन्दूक को ले आये। इस प्रकार, परमेश्वर हम लोगों के साथ युद्ध में जायेगा। वह हमें हमारे शत्रुओं से बचा देगा।”

⁴इसलिये लोगों ने व्यक्तियों को शीलो में भेजा। वे लोग सर्वशक्तिमान यहोवा के वाचा के सन्दूक को ले आए। सन्दूक के ऊपर करुब (स्वर्गदूत) हैं और वे उस आसन की तरह हैं जिस पर यहोवा बैठता है। एली के दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास सन्दूक के साथ आए।

⁵जब यहोवा के वाचा का सन्दूक डेरे के भीतर आया, तो इम्राएलियों ने प्रचण्ड उद्घोष किया। उस उद्घोष से धरती काँप उठी।⁶पलिशतियों ने इम्राएलियों के उद्घोष को सुना। उन्होंने पूछा, “हिब्रू लोगों के डेरे में ऐसा उद्घोष क्यों है?”

तब पलिशतियों को ज्ञात हुआ कि इम्राएल के डेरे में वाचा का सन्दूक आया है।⁷पलिशती डर गए। पलिशतियों ने कहा, “परमेश्वर उनके डेरे में आ गया है! हम लोग मुसीबत में हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।⁸हमें चिन्ता है! इन शक्तिशाली परमेश्वर से हमें कौन बचा सकता है? ये वही परमेश्वर है जिसने मिश्रियों को वे बीमारियाँ और महामारियाँ दी थी।⁹पलिशतियों साहस करो! वीर पुरुषों की तरह लड़ो! बीते समय में हिब्रू लोग हमारे दास थे। इसलिए वीरों की तरह लड़ो नहीं तो तुम उनके दास हो जाओगे।”

¹⁰पलिशती वीरता से लड़े और उन्होंने इम्राएलियों को हरा दिया। हर एक इम्राएली योद्धा अपने डेरे में भाग गया। इम्राएल के लिये यह भयानक पराजय थी। तीस हजार इम्राएली सैनिक मारे गए।¹¹पलिशतियों ने उनसे परमेश्वर का पवित्र सन्दूक छीन लिया और उन्होंने एली के दोनों पुत्रों, होप्नी और पीनहास को मार डाला।

¹²उस दिन बिन्यामीन परिवार का एक व्यक्ति युद्ध से भागा। उसने अपने शोक को प्रकट करने के लिये अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और अपने सिर पर धूल डाल ली।¹³जब यह व्यक्ति शीलो पहुँचा तो एली अपनी कुर्सी पर नगर द्वार के पास बैठा था। उसे परमेश्वर के पवित्र सन्दूक के लिये चिन्ता थी, इसीलिए वह प्रतीक्षा में बैठा हुआ था। तभी बिन्यामीन परिवार समूह का वह व्यक्ति शीलो में आया और उसने दुःखभरी सूचना दी। नगर के सभी लोग जोर से रो पड़े।¹⁴⁻¹⁵एली अट्टानवे वर्ष का बूढ़ा और अन्धा था, एली ने रोने की आवाज सुनी तो एली ने पूछा, “यह जोर का शोर क्या है?”

वह बिन्यामीन व्यक्ति एली के पास दौड़ कर गया और जो कुछ हुआ था उसे बताया।¹⁶बिन्यामीनी व्यक्ति ने कहा कि “मैं आज युद्ध से भाग आया हूँ!” एली ने पूछा, “पुत्र, क्या हुआ?”

¹⁷बिन्यामीनी व्यक्ति ने उत्तर दिया, “इम्राएली पलिशतियों के मुकाबले भाग खड़े हुए हैं। इम्राएली सेना ने अनेक योद्धाओं को खो दिया है। तुम्हारे दोनों पुत्र मारे गए हैं और पलिशती परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को छीन ले गये हैं।”

¹⁸जब बिन्यामीनी व्यक्ति ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक की बात कही, तो एली द्वार के निकट अपनी कुर्सी से पीछे गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई। एली बूढ़ा और मोटा था, इसलिये वह वहीं मर गया। एली बीस वर्ष* तक इम्राएल का अगुवा रहा।

गौरव समाप्त हो गया

¹⁹एली की पुत्रवधू, पीनहास की पत्नी, उन दिनों गर्भवती थी। यह लगभग उसके बच्चे के उत्पन्न होने का समय था। उसने यह समाचार सुना कि परमेश्वर का पवित्र सन्दूक छीन लिया गया है। उसने यह भी सुना कि उसके

बीस वर्ष यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद और जोसेफस से है। मानक हिब्रू पाठ में चालीस वर्ष है।

ससुर एली की मृत्यु हो गई है और उसका पति पीनहास मारा गया है। ज्यों ही उसने यह समाचार सुना, उसको प्रसव-पीड़ा आरम्भ हो गई और उसने अपने बच्चे को जन्म देना आरम्भ किया।²⁰ उसके मरने से पहले जो स्त्रियाँ उसकी सहायता कर रही थीं उन्होंने कहा, “दुःखी मत हो! तुम्हें एक पुत्र उत्पन्न हुआ है।”

किन्तु एली की पुत्रवधू ने न तो उत्तर ही दिया, न ही उस पर ध्यान दिया।²¹ एली की पुत्रवधू ने कहा, “इम्राएल का गौरव अस्त हो गया!”* इसलिये उसने बच्चे का नाम ईकाबोद* रखा और बस वह तभी मर गई। उसने अपने बच्चे का नाम ईकाबोद रखा क्योंकि परमेश्वर का पवित्र सन्दूक चला गया था और उसके ससुर एवं पति मर गए थे।²² उसने कहा, “इम्राएल का गौरव अस्त हुआ।” उसने यह कहा, क्योंकि पलिशती परमेश्वर का सन्दूक ले गये।

पवित्र सन्दूक पलिशतियों को परेशान करता है

5 पलिशतियों ने परमेश्वर का पवित्र सन्दूक एबनेजेर से उसे अशदोद ले गए।² पलिशती परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दागोन* के मन्दिर में ले गए। उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दागोन की मूर्ति के बगल में रखा।³ अशदोदी के लोग अगली सुबह उठे। उन्होंने देखा कि दागोन मुँह के बल पड़ा है। दागोन यहोवा की सन्दूक के सामने गिरा पड़ा था। अशदोद के लोगों ने दागोन की मूर्ति को उसके पूर्व-स्थान पर रखा।⁴ किन्तु अगली सुबह जब अशदोद के लोग उठे तो उन्होंने दागोन को फिर जमीन पर पाया। दागोन फिर यहोवा के पवित्र सन्दूक के सामने गिरा पड़ा था। दागोन के हाथ और पैर टूट गए थे और डेवड़ी पर पड़े थे। केवल दागोन का शरीर एक खण्ड के रूप में था।⁵ यही कारण है, कि आज भी दागोन के याजक या अशदोद में दागोन के मन्दिर में घुसने वाले अन्य व्यक्ति डेवड़ी पर चलने से इन्कार करते हैं।

⁶ यहोवा ने अशदोद के लोगों तथा उनके पड़ोसियों के जीवन को कष्टपूर्ण कर दिया। यहोवा ने उनको कठिनाईयों

एली ... गया यह वाक्य प्राचीन ग्रीक अनुवाद में नहीं है। ईकाबोद इस नाम का अर्थ “गौरवहीन” है।

दागोन कनानी लोग इस असत्य देवता की आराधना इस आशा से करते थे कि यह अच्छी फसल देगा। संभवतः यह पलिशती लोगों के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता था।

में डाला। उसने उनमें फोड़े उठाए। यहोवा ने उनके पास चूहे भेजे। चूहे उनके सभी जहाजों और भूमि पर दौड़ते थे। नगर में सभी लोग बहुत डर गए थे।⁷ अशदोद के लोगों ने देखा कि क्या हो रहा है। उन्होंने कहा, “इम्राएल के परमेश्वर का सन्दूक यहाँ नहीं रह सकता! परमेश्वर हमें और हमारे देवता, दागोन को भी दण्ड दे रहा है।”

⁸ अशदोद के लोगों ने पाँच पलिशती शासकों को एक साथ बुलाया। अशदोद के लोगों ने शासकों से पूछा, “हम लोग इम्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक का क्या करें?”

शासकों ने उत्तर दिया, “इम्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को गत नगर ले जाओ।” अतः पलिशतियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को हटा दिया।

⁹ किन्तु जब पलिशतियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को गत को भेज दिया था, तब यहोवा ने उस नगर को दण्ड दिया। लोग बहुत भयभीत हो गए। परमेश्वर ने सभी बच्चों व बूढ़ों के लिये अनेक कष्ट उत्पन्न किये। परमेश्वर ने गत के लोगों के शरीर में फोड़े उत्पन्न किये।¹⁰ इसलिए पलिशतियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को एक्रोन भेज दिया। किन्तु जब परमेश्वर का पवित्र सन्दूक एक्रोन आया, एक्रोन के लोगों ने शिकायत की। उन्होंने कहा, “तुम लोग इम्राएल के परमेश्वर का सन्दूक हमारे नगर एक्रोन में क्यों ला रहे हो? क्या तुम लोग हमें और हमारे लोगों को मारना चाहते हो?”¹¹ एक्रोन के लोगों ने सभी पलिशती सेनापतियों को एक साथ बुलाया। एक्रोन के लोगों ने सेनापतियों से कहा, “इम्राएल के परमेश्वर के सन्दूक को, उसके पहले कि वह हमें और हमारे लोगों को मार डाले इसके पहले के स्थान पर भेज दो।” एक्रोन के लोग बहुत भयभीत थे। परमेश्वर ने उस स्थान पर उनके जीवन को बहुत कष्टमय बना दिया।¹² बहुत से लोग मर गए और जो लोग नहीं मरे उनको फोड़े निकले। एक्रोन के लोगों ने जोर से रोकर स्वर्ग को पुकारा।

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक अपने घर लौटाया गया

6 पलिशतियों ने पवित्र सन्दूक को अपने देश में सात महीने रखा।² पलिशतियों ने अपने याजक और जादूगरों को बुलाया। पलिशतियों ने कहा, “हम यहोवा के सन्दूक का क्या करें? बताओ कि हम कैसे सन्दूक को वापस इसके घर भेजें?”

³याजकों और जादूगरों ने उत्तर दिया, “यदि तुम इज़्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को भेजते हो तो, इसे बिना किसी भेंट के न भेजो। तुम्हें इज़्राएल के परमेश्वर को भेंट चढ़ानी चाहिये। जिससे इज़्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पापों को दूर करेगा। तब तुम स्वस्थ हो जाओगे। तुम पवित्र हो जाओगे। तुम्हें यह इसलिये करना चाहिए जिससे कि परमेश्वर तुम लोगों को दण्ड देना बन्द करे।”*

⁴पलिशतियों ने पूछा, “हम लोगों को कौन सी भेंट, अपने को क्षमा कराने के लिये इज़्राएल के परमेश्वर को भेजनी चाहिये?”

याजकों और जादूगरों ने कहा, “यहाँ पाँच पलिशती प्रमुख हैं। हर एक नगर के लिये एक प्रमुख है। तुम सभी लोगों और तुम्हारे प्रमुखों की एक ही समस्या है। इसलिए तुम्हें पाँच सोने के ऐसे नमूने जो पाँच फोड़ों के रूप में दिखने वाले बनाने चाहिये और पाँच नमूने पाँच चूहों के रूप में दिखने वाले बनाने चाहिए।⁵ इस प्रकार फोड़ों के नमूने बनाओ और चूहों के नमूने बनाओ जो देश को बरबाद कर रहे हैं। इज़्राएल के परमेश्वर को इन सोने के नमूनों को भुगतान के रूप में दो। तब यह संभव है कि इज़्राएल के परमेश्वर तुमको, तुम्हारे देवताओं को, और तुम्हारे देश को दण्ड देना रोक दे।⁶ फ़िरौन और मिश्रियों की तरह हठी न बनो। परमेश्वर ने मिश्रियों को दण्ड दिया। यही कारण था कि मिश्रियों ने इज़्राएलियों को मिश्र छोड़ने दिया।

⁷“तुम्हें एक नई बन्द गाड़ी बनानी चाहिए और दो गायें जिन्होंने अभी बछड़े दिये हो लानी चाहिए। ये गायें ऐसी होनी चाहियें जिन्होंने खेतों में काम न किया हो। गायों को बन्द गाड़ी में जोड़ो और बछड़ों को घर लौटा ले जाओ। बछड़ों को गौशाला में रखो। उन्हें अपनी माताओं के पीछे न जाने दो।⁸ यहोवा के पवित्र सन्दूक को बन्द गाड़ी में

रखो। तुम्हें सोने के नमूनों को थैले में सन्दूक के बगल में रखना चाहिये। तुम्हारे पापों को क्षमा करने के लिये सोने के नमूने परमेश्वर के लिये तुम्हारी भेंट हैं। बन्द गाड़ी को सीधे इसके रास्ते पर भेजो।⁹ बन्द गाड़ी को देखते रहो। यदि बन्द गाड़ी बेतशमेश की ओर इज़्राएल की भूमि में जाती है, तो यह संकेत है कि यहोवा ने हमें यह बड़ा रोग दिया है। किन्तु यदि गायें बेतशमेश को नहीं जातीं, तो हम समझेंगे कि इज़्राएल के परमेश्वर ने हमें दण्ड नहीं दिया है। हम समझ जायेंगे कि हमारी बीमारी स्वतः ही हो गई।”

¹⁰पलिशतियों ने वही किया जो याजकों और जादूगरों ने कहा। पलिशतियों ने वैसी दो गायें लीं जिन्होंने शीघ्र ही बछड़े दिये थे। पलिशतियों ने गायों को बन्द गाड़ी से जोड़ दिया। पलिशतियों ने बछड़ों को घर पर गौशाला में रखा।¹¹ तब पलिशतियों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को बन्द गाड़ी में रखा।¹² गायें सीधे बेतशमेश को गईं। गायें लगातार रंभाती हुई सड़क पर टिकीं रहीं। गायें दायें या बायें नहीं मुड़ीं। पलिशती शासक गायों के पीछे बेतशमेश की नगर सीमा तक गए।

¹³बेतशमेश के लोग घाटी में अपनी गेहूँ की फसल काट रहे थे। उन्होंने निगाह उठाई और पवित्र सन्दूक को देखा। वे सन्दूक को फिर देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वे उसे लेने के लिये दौड़े।¹⁴⁻¹⁵ बन्द गाड़ी उस खेत में आई जो बेतशमेश के यहोशू का था। इस खेत में बन्द गाड़ी एक विशाल चट्टान के सामने रूकी। बेतशमेश के लोगों ने बन्द गाड़ी को काट दिया। तब उन्होंने गायों को मार डाला। उन्होंने गायों की बलि यहोवा को दी। लेवीवंशियों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को उतारा। उन्होंने उस थैले को भी उतारा जिसमें सोने के नमूने रखे थे। लेवीवंशियों ने यहोवा के सन्दूक और थैले को विशाल चट्टान पर रखा। उस दिन बेतशमेश के लोगों ने यहोवा को होमबलि चढ़ाई।

¹⁶पाँचों पलिशती शासकों ने बेतशमेश के लोगों को यह सब करते देखा। तब वे पाँचों पलिशती शासक उसी दिन एक्रोन लौट गए।

¹⁷इस प्रकार, पलिशतियों ने यहोवा को अपने पापों के लिये, अपने फोड़ों के सोने के नमूने भेंट के रूप में भेजे। उन्होंने हर एक पलिशती नगर के लिये फोड़े का एक सोने का नमूना भेजा। ये पलिशती नगर अशदोद, अज्जा, अशकलोन, गत और एक्रोन थे।¹⁸पलिशतियों ने चूहों

तुम्हें यह ... बन्द करें यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद से और कुमरान के दण्ड में लिपटे हिब्रू पत्रकों में से एक में है। “मानक हिब्रू में तब तुम समझोगे कि परमेश्वर ने तुम्हें दण्ड देना बन्द क्यों नहीं किया।”

उन्हें ... जाने दो पलिशतियों ने सोचा कि यदि गायों ने अपने बछड़ों को खोजने की कोशिश नहीं की और बेतशमेश को सीधे चली गई तो यह सिद्ध हो जायेगा कि परमेश्वर उन्हें ले जा रहा है। यह प्रकट करेगा कि परमेश्वर ने भेंट स्वीकार कर ली।

के सोने के नमूने भी भेजे। सोने के चूहे की संख्या उतनी ही थी जितनी संख्या पाँचों पलिशती शासकों के नगरों की थी। इन नगरों के चारों ओर चहारदीवारी थी और हर नगर के चारों ओर गाँव थे।

बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को एक चट्टान पर रखा। वह चट्टान अब भी बेतशेमेश के यहोशू के खेत में है।¹⁹ किन्तु जिस समय बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को देखा उस समय वहाँ कोई याजक न था। इसलिये परमेश्वर ने बेतशेमेश के सत्तर व्यक्तियों को मार डाला। बेतशेमेश के लोग विलाप करने लगे क्योंकि यहोवा ने उन्हें इतना कठोर दण्ड दिया।²⁰ इसलिये बेतशेमेश के लोगों ने कहा, “याजक कहाँ है जो इस पवित्र सन्दूक की देखभाल कर सके? वहाँ से सन्दूक कहाँ जाएगा?”

²¹ किर्यत्यारीम में एक याजक था। बेतशेमेश के लोगों ने किर्यत्यारीम के लोगों के पास दूत भेजे। दूतों ने कहा, “पलिशतियों ने यहोवा का पवित्र सन्दूक लौटा दिया है। आओ और इसे अपने नगर में ले जाओ।”

7 किर्यत्यारीम के लोग आए और यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले गए। वे यहोवा के सन्दूक को पहाड़ी पर अबीनादाब के घर ले गए। उन्होंने अबीनादाब के पुत्र एलीआज़ार को यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने के लिये तैयार करने हेतु एक विशेष उपासना की।² सन्दूक किर्यत्यारीम में बहुत समय तक रखा रहा। यह वहाँ बीस वर्ष तक रहा।

यहोवा इज़्राएलियों की रक्षा करता है:

इज़्राएल के लोग फिर यहोवा का अनुसरण करने लगे।³ शमूएल ने इज़्राएल के लोगों से कहा, “यदि तुम सचमुच यहोवा के पास सच्चे हृदय से लौट रहे हो तो तुम्हें विदेशी देवताओं को फेंक देना चाहिये। तुम्हें अशतोरेत* की मूर्तियों को फेंक देना चाहिए और तुम्हें पूरी तरह यहोवा को अपना समर्पण करना चाहिये! तुम्हें केवल यहोवा की ही सेवा करनी चाहिये। तब यहोवा तुम्हें पलिशतियों से बचायेगा।”

अशतोरेत कनानी लोग विश्वास करते थे कि यह असत्य देवी लोगों को सन्तान देने योग्य बनायेगी। वह उनकी प्रेम-देवी थी।

⁴ इसलिये इज़्राएलियों ने अपने बाल* और अशतोरेत की मूर्तियों को फेंक दिया। इज़्राएली केवल यहोवा की सेवा करने लगे।

⁵ शमूएल ने कहा, “सभी इज़्राएली मिस्पा में इकट्ठे हों। मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूँगा।”

⁶ इज़्राएली मिस्पा में एक साथ इकट्ठे हुए। वे जल लाये और यहोवा के सामने वह जल चढ़ाया। इस प्रकार उन्होंने उपवास का समय आरम्भ किया। उन्होंने उस दिन भोजन नहीं किया और उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया। उन्होंने कहा, “हम लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।” इस प्रकार शमूएल ने मिस्पा में इज़्राएल के न्यायाधीश के रूप में काम किया।

⁷ पलिशतियों ने यह सुना कि इज़्राएली मिस्पा में इकट्ठा हो रहे हैं। पलिशती शासक इज़्राएलियों के विरुद्ध आक्रमण करने गये। इज़्राएलियों ने सुना कि पलिशती आ रहे हैं, और वे डर गए।⁸ इज़्राएलियों ने शमूएल से कहा, “हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना हमारे लिये करना बन्द मत करो। यहोवा से माँगें कि वह पलिशतियों से हमारी रक्षा करे!”

⁹ शमूएल ने एक मेमना लिया। उसने यहोवा की होमबलि के रूप में मेमने को जलाया। शमूएल ने यहोवा से इज़्राएल के लिये प्रार्थना की। यहोवा ने शमूएल की प्रार्थना का उत्तर दिया।¹⁰ जिस समय शमूएल बलि जला रहा था, पलिशती इज़्राएल से लड़ने आये। किन्तु यहोवा ने पलिशतियों के समीप प्रचण्ड गर्जना उत्पन्न की। इसने पलिशतियों को अस्त-व्यस्त कर दिया। गर्जना ने पलिशतियों को भयभीत कर दिया और वे अस्त-व्यस्त हो गये। उनके प्रमुख उन पर नियन्त्रण न रख सके। इस प्रकार पलिशतियों को इज़्राएलियों ने युद्ध में पराजित कर दिया।¹¹ इज़्राएल के लोग मिस्पा से बाहर दौड़े और पलिशतियों का पीछा किया। उन्होंने लगातार बत कर तक उनका पीछा किया। उन्होंने पूरे रास्ते पलिशती सैनिकों को मारा।

इज़्राएल में शान्ति स्थापित हुई

¹² इसके बाद, शमूएल ने एक विशेष पत्थर स्थापित किया। उसने यह इसलिये किया कि लोग याद रखें कि

बाल कनानी लोग विश्वास करते थे कि यह असत्य देवता आंधी-वर्षा लाता है। वे यह भी समझते थे कि यह भूमि को अच्छी फसल देने वाली बनाता है।

परमेश्वर ने क्या किया। शमूएल ने पत्थर को मिस्या और शेन के बीच रखा। शमूएल ने पत्थर का नाम "सहायता का पत्थर"* रखा। शमूएल ने कहा, "यहोवा ने लगातार पूरे रास्ते इस स्थान तक हमारी सहायता की।"

¹³पलिशती पराजित हुए। वे इझ्राएल देश में फिर नहीं घुसे। शमूएल के शेष जीवन में, यहोवा पलिशतियों के विरुद्ध रहा। ¹⁴पलिशतियों ने इझ्राएल के नगर ले लिये थे। पलिशतियों ने एक्रोन से गत तक के क्षेत्र के नगरों को ले लिया था। किन्तु इझ्राएलियों ने इन्हें जीतकर वापस ले लिया और इझ्राएल ने इन नगरों के चारों ओर की भूमि को भी वापस ले लिया।

¹⁵शमूएल ने अपने पूरे जीवन भर इझ्राएल का मार्ग दर्शन किया।

¹⁶शमूएल एक स्थान से दूसरे स्थान तक इझ्राएल के लोगों का न्याय करता हुआ गया। हर वर्ष उसने देश के चारों ओर यात्रा की। वह गिलगाल, बेतेल और मिस्या को गया। अतः उसने इन सभी स्थानों पर इझ्राएली लोगों का न्याय और उन पर शासन किया। ¹⁷किन्तु शमूएल का घर रामा में था। इसलिए शमूएल सदा रामा को लौट जाता था। शमूएल ने उसी नगर से इझ्राएल का न्याय और शासन किया और शमूएल ने रामा में यहोवा के लिये एक वेदी बनाई।

इझ्राएल एक राजा की माँग करता है

8 जब शमूएल बूढ़ा हो गया तो उसने अपने पुत्रों को इझ्राएल के न्यायाधीश बनाया। ²शमूएल के प्रथम पुत्र का नाम योएल रखा गया। उसके दूसरे पुत्र का नाम अबिव्याह रखा गया था। योएल और अबिव्याह बेशेबा में न्यायाधीश थे। ³किन्तु शमूएल के पुत्र वैसे नहीं रहते थे जैसे वह रहता था। योएल और अबिव्याह घूस लेते थे। वे गुप्त रूप से धन लेते थे और न्यायालय में अपना निर्णय बदल देते थे। वे न्यायालय में लोगों को ठगते थे। ⁴इसलिये इझ्राएल के सभी अग्रज (प्रमुख) एक साथ इकट्ठे हुए। वे शमूएल से मिलने रामा गये। ⁵अग्रजों (प्रमुखों) ने शमूएल से कहा, "तुम बूढ़े हो गए और तुम्हारे पुत्र ठीक से नहीं रहते। वे तुम्हारी तरह नहीं हैं। अब, तुम अन्य राष्ट्रों की तरह हम पर शासन करने के लिये एक राजा दो।"

⁶इस प्रकार, अग्रजों (प्रमुखों) ने अपने मार्ग दर्शन के लिये एक राजा माँगा। शमूएल ने सोचा कि यह विचार बुरा है। इसलिए शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। ⁷यहोवा ने शमूएल से कहा, "वही करो जो लोग तुमसे करने को कहते हैं। उन्होंने तुमको अस्वीकार नहीं किया है। उन्होंने मुझे अस्वीकार किया है! वे मुझको अपना राजा बनाना नहीं चाहते। ⁸वे वही कर रहे हैं जो सदा करते रहे। मैंने उनको मिश्र से बाहर निकाला। किन्तु उन्होंने मुझको छोड़ा, तथा अन्य देवताओं की पूजा की। वे तुम्हारे साथ भी वैसे ही कर रहे हैं। ⁹इसलिए लोगों की सुनों और जो वे कहें, करो। किन्तु उन्हें चेतावनी दो। उन्हें बता दो कि राजा उनके साथ क्या करेगा। उनको बता दो कि एक राजा लोगों पर कैसे शासन करता है।"

¹⁰उन लोगों ने एक राजा के लिये माँग की। इसलिये शमूएल ने लोगों से वे सारी बातें कहीं जो यहोवा ने कही थी। ¹¹शमूएल ने कहा, "यदि तुम अपने ऊपर शासन करने वाला राजा रखते हो तो वह यह करेगा: वह तुम्हारे पुत्रों को ले लेगा। वह तुम्हारे पुत्रों को अपनी सेवा के लिये विवश करेगा। वह उन्हें सैनिक बनने के लिये विवश करेगा, उन्हें उसके रथों पर से लड़ना पड़ेगा और वे उसकी सेना के घुड़सवार होंगे। तुम्हारे पुत्र राजा के रथ के आगे दौड़ने वाले रक्षक बनेंगे। ¹²राजा तुम्हारे पुत्रों को सैनिक बनने के लिये विवश करेगा। उनमें से कुछ हजार व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी होंगे और अन्य पचास व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी होंगे। राजा तुम्हारे पुत्रों में से कुछ को अपने खेत को जोतने और फसल काटने को विवश करेगा। वह तुम्हारे पुत्रों में से कुछ को अस्त्र-शस्त्र बनाने को विवश करेगा। वह उन्हें अपने रथ के लिये चीजें बनाने के लिये विवश करेगा।

¹³राजा तुम्हारी पुत्रियों को लेगा। वह तुम्हारी पुत्रियों में से कुछ को अपने लिये सुगन्धद्रव्य चीजें बनाने को विवश करेगा और वह तुम्हारी पुत्रियों में से कुछ को रसोई बनाने और रोटी पकाने को विवश करेगा।

¹⁴राजा तुम्हारे सर्वोत्तम खेत, अगूर के बाग और जैतून के बागों को ले लेगा। वह उन चीजों को तुमसे ले लेगा और अपने अधिकारियों को देगा। ¹⁵वह तुम्हारे अन्न और अगूर का दसवाँ भाग ले लेगा। वह इन चीजों को अपने सेवकों और अधिकारियों को देगा। ¹⁶वह राजा तुम्हारे दस-दसियों को ले लेगा। वह तुम्हारे सर्वोत्तम

पशु और गधों को लेगा। वह उनका उपयोग अपने कामों के लिये करेगा ¹⁷ और वह तुम्हारी रेवड़ों का दसवाँ भाग लेगा।

“और तुम स्वयं इस राजा के दास हो जाओगे। ¹⁸ जब वह समय आयेगा तब तुम राजा को चुनने के कारण रोओगे। किन्तु उस समय यहोवा तुमको उत्तर नहीं देगा।”

¹⁹ किन्तु लोगों ने शमूएल की एक न सुनी। उन्होंने कहा, “नहीं! हम लोग अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं। ²⁰ तब हम वैसे ही हो जायेंगे जैसे अन्य राष्ट्र। हमारा राजा हम लोगों का मार्ग दर्शन करेगा। वह हम लोगों के साथ जायेगा और हमारे युद्धों को लड़ेगा।”

²¹ शमूएल ने जब लोगों का सारा कहा हुआ सुना तब उसने यहोवा के सामने उनके कथनों को दुहराया। ²² यहोवा ने उत्तर दिया, “उनकी बात सुनो! उनको एक राजा दो।” तब शमूएल ने इम्राएल के लोगों से कहा, “ठीक है! तुम्हारा एक नया राजा होगा। अब, आप सभी लोग घर को जायें।”

शाऊल अपने पिता के गधों की तलाश करता है

9 कीश बिन्यामीन परिवार समूह का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। कीश अबीएल का पुत्र था। अबीएल सरोर का पुत्र था। सरोर बकोरत का पुत्र था। बकोरत बिन्यामीन के एक व्यक्ति अपीह का पुत्र था। ² कीश का एक पुत्र शाऊल नाम का था। शाऊल एक सुन्दर युवक था। वहाँ शाऊल से अधिक सुन्दर कोई न था। खड़ा होने पर शाऊल का सिर इम्राएल के किसी भी व्यक्ति से ऊँचा रहता था।

³ एक दिन, कीश के गधे खो गए। इसलिए कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, “सेवकों में से एक को साथ लो और गधों की खोज में जाओ।” ⁴ शाऊल ने गधों की खोज आरम्भ की। शाऊल एप्रैम की पहाड़ियों में होकर घूमा। तब शाऊल शलीशा के चारों ओर के क्षेत्र में घूमा। किन्तु शाऊल और उसका सेवक, कीश के गधों को नहीं पा सके। इसलिए शाऊल और सेवक शालीम के चारों ओर के क्षेत्र में गये। किन्तु गधे वहाँ नहीं मिले। इसलिये शाऊल ने बिन्यामीन के प्रदेश में होकर यात्रा की। किन्तु वह और उसका सेवक गधों को तब भी न पा सके।

⁵ अन्त में, शाऊल और उसका सेवक सूफ नामक नगर में आए। शाऊल ने अपने सेवक से कहा, “चलो,

हम लौटें। मेरे पिता गधों के बारे में सोचना बन्द कर देंगे और हम लोगों के बारे में चिन्तित होने लगेंगे।”

⁶ किन्तु सेवक ने उत्तर दिया, “इस नगर में परमेश्वर का एक व्यक्ति है। लोग उसका सम्मान करते हैं। वह जो कहता है सत्य होता है। इसलिये हम इस नगर में चले। संभव है कि परमेश्वर का यह व्यक्ति हमें बताये कि इसके बाद हम लोग कहाँ जायें।”

⁷ शाऊल ने अपने सेवक से कहा, “हम नगर में चल सकते हैं। किन्तु हम लोग उस व्यक्ति को क्या दे सकते हैं? हम लोगों के थैले का भोजन समाप्त हो चुका है। हम लोगों के पास कोई भी भेंट परमेश्वर के व्यक्ति को देने के लिये नहीं है। हमारे पास उसे देने को क्या है?”

⁸ सेवक ने शाऊल को फिर उत्तर दिया, “देखो, मेरे पास थोड़ा सा धन* है। हम परमेश्वर के व्यक्ति को यही दें। तब वह बतायेगा कि हम लोग कहाँ जायें।”

⁹⁻¹¹ शाऊल ने अपने सेवक से कहा, “अच्छा सुझाव है! हम चलें!” वे नगर में वहाँ गए जहाँ परमेश्वर का व्यक्ति था।

शाऊल और उसका सेवक पहाड़ी पर चढ़ते हुए नगर को जा रहे थे। रास्ते में वे कुछ युवतियों से मिले। युवतियाँ बाहर से पानी लेने जा रही थी। शाऊल और उसके सेवक ने युवतियों से पूछा, “क्या भविष्यवक्ता यहाँ है?” (प्राचीन काल में इम्राएल के निवासी नबियों को “भविष्यवक्ता” कहते थे। इसलिये यदि वे परमेश्वर से कुछ माँगना चाहते थे तो वे कहते थे, “हम लोग भविष्यवक्ता के पास चलें।”)

¹² युवतियों ने उत्तर दिया, “हाँ, भविष्यवक्ता यहीं है। वह ठीक इसी सड़क पर आगे है। वह आज ही नगर में आया है। कुछ लोग वहाँ एक साथ इसलिये इकट्ठे हो रहे हैं कि आराधनालय पर मेलबलि में भाग ले सकें। ¹³ आप लोग नगर में जाएँ, और आप उनसे मिल लेंगे। यदि आप लोग शीघ्रता करेंगे तो आप उनसे आराधनालय पर भोजन के लिये जाने के पहले मिल लेंगे। भविष्यवक्ता बलि-भेंट को आशीर्वाद देते हैं। इसलिये लोग तब वे तक भोजन करना आरम्भ नहीं करेंगे जब तक वे वहाँ न पहुँचें। इसलिये यदि आप लोग शीघ्रता करें, तो आप भविष्यवक्ता को पा सकते हैं।”

थोड़ा सा धन शाब्दिक 1/4 शकेल चाँदी। यह लगभग 1/10 औंस चाँदी थी।

¹⁴शाऊल और सेवक ने ऊपर पहाड़ी पर नगर की ओर बढ़ना आरम्भ किया। जैसे ही वे नगर में घुसे उन्होंने शमूएल को अपनी ओर आते देखा। शमूएल नगर के बाहर उपासना के स्थान पर जाने के लिये अभी आ ही रहा था।

¹⁵एक दिन पहले यहोवा ने शमूएल से कहा था, ¹⁶“कल मैं इसी समय तुम्हारे पास एक व्यक्ति को भेजूँगा। वह बिन्यामीन के परिवार समूह का होगा। तुम्हें उसका अभिषेक कर देना चाहिये। तब वह हमारे लोग इज़्राएलियों का नया प्रमुख होगा। यह व्यक्ति हमारे लोगों को पलिशितियों से बचाएगा। मैंने अपने लोगों के कष्टों को देखा है। मैंने अपने लोगों का रोना सुना है।”

¹⁷शमूएल ने शाऊल को देखा और यहोवा ने उससे कहा, “यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था। यह मेरे लोगों पर शासन करेगा।”

¹⁸शाऊल द्वार के पास शमूएल के निकट आया। शाऊल ने शमूएल से पूछा, “कृपया बतायें भविष्यवक्ता का घर कहाँ है।”

¹⁹शमूएल ने उत्तर दिया, “मैं ही भविष्यवक्ता हूँ। मेरे आगे उपासना के स्थान पर पहुँचो। तुम और तुम्हारा सेवक आज हमारे साथ भोजन करोगे। मैं कल सवेरे तुम्हें घर जाने दूँगा मैं तुम्हारे सभी प्रश्नों का उत्तर दूँगा। ²⁰उन गधों की चिन्ता न करो जिन्हें तुमने तीन दिन पहले खो दिया। वे मिल गये हैं। अब, तुम्हें सारा इज़्राएल चाहता है। वे तुम्हें और तुम्हारे पिता के परिवार के सभी लोगों को चाहते हैं।”

²¹शाऊल ने उत्तर दिया, “किन्तु मैं बिन्यामीन परिवार समूह का एक सदस्य हूँ। यह इज़्राएल में सबसे छोटा परिवार समूह है और मेरा परिवार बिन्यामीन परिवार समूह में सबसे छोटा है। आप क्यों कहते हैं कि इज़्राएल मुझको चाहता है?”

²²तब शमूएल, शाऊल और उसके सेवक को भोजन के क्षेत्र में ले गया। लगभग तीस व्यक्ति एक साथ भोजन के लिये और बलि-भेंट में भाग लेने के लिये आमन्त्रित थे। शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को मेज पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया। ²³शमूएल ने रसोइये से कहा, “वह माँस लाओ जो मैंने तुम्हें दिया था। यह वह भाग है जिसे मैंने तुमसे सुरक्षित रखने के लिये कहा था।”

²⁴रसोइये ने जांघ* ली और शाऊल के सामने मेज पर रखी। शमूएल ने कहा, “यही वह माँस है जिसे मैंने तुम्हारे लिये सुरक्षित रखा था। यह खाओ क्योंकि यह इस विशेष समय के लिये तुम्हारे लिये सुरक्षित था।” इस प्रकार उस दिन शाऊल ने शमूएल के साथ भोजन किया।

²⁵जब उन्होंने भोजन समाप्त कर लिया, वे आराधनालय से उतरे और नगर को लौटे। शमूएल ने छत पर शाऊल के लिये बिस्तर लगाया और शाऊल सो गया।

²⁶अगली सुबह सवेरे, शमूएल ने शाऊल को छत पर जोर से पुकारा। शमूएल ने कहा, “उठो। मैं तुम्हें तुम्हारे रास्ते पर भेजूँगा।” शाऊल उठा, और शमूएल के साथ घर से बाहर चल पड़ा।

²⁷शाऊल, उसका सेवक और शमूएल एक साथ नगर के सिरे पर चल रहे थे। शमूएल ने शाऊल से कहा, “अपने सेवक से हम लोगों से कुछ आगे चलने को कहो। मेरे पास तुम्हारे लिये परमेश्वर का एक सन्देश है।” इसलिये दास उनसे कुछ आगे चलने लगा।

शमूएल शाऊल का अभिषेक करता है

10 शमूएल ने विशेष तेल की एक कुप्पी ली। शमूएल ने तेल को शाऊल के सिर पर डाला। शमूएल ने शाऊल को चुम्बन किया और कहा, “यहोवा ने तुम्हारा अभिषेक अपने लोगों का प्रमुख बनाने के लिये किया है। तुम यहोवा के लोगों पर नियन्त्रण करोगे। तुम उन्हें उन शत्रुओं से बचाओगे जो उनको चारों ओर से घेरे हैं। यहोवा ने तुम्हारा अभिषेक (चुनाव) अपने लोगों का शासक होने के लिये किया है। एक चिन्ह प्रकट होगा जो प्रमाणित करेगा कि यह सत्य है।* ²जब तुम मुझसे अलग होंगे, तो तुम राहेल के कन्न के पास दो व्यक्तियों से, बिन्यामीन की धरती के सिवाने पर, सेलसह में मिलोगे। वे दोनों व्यक्ति तुमसे कहेंगे, ‘जिन गधों की खोज तुम कर रहे थे उन्हें किसी व्यक्ति ने प्राप्त कर लिया है। तुम्हारे

जांघ कदाचित् यह बायीं जांघ थी जो महत्वपूर्ण अतिथियों के लिये सुरक्षित रखी जाती थी। दायीं जांघ उस याजक के लिये सुरक्षित थी जो जानवर की बलि भेंट करता था। याजक जानवर को मारने में और जानवर की चर्बी को वेदी पर परमेश्वर की भेंट के रूप में चढ़ाने में सहायता करता था। तुम यहोवा ... सत्य हैं ये पक्तियाँ प्राचीन ग्रीक अनुवाद में हैं। वे हिब्रू पाठ में नहीं है।

पिता ने गधों के सम्बन्ध में चिन्ता करना छोड़ दिया है। अब उसे तुम्हारी चिन्ता है। वह कह रहा है: मैं अपने पुत्र के विषय में क्या करूँ?”

³शमूएल ने कहा, “अब तुम तब तक चलते रहोगे जब तक तुम ताबोर में बांज के विशाल पेड़ तक पहुँच नहीं जाते। वहाँ तुमसे तीन व्यक्ति मिलेंगे। वे तीनों व्यक्ति बेतेल में परमेश्वर की उपासना के लिये यात्रा पर होंगे। एक व्यक्ति बकरियों के तीन बच्चों को लिये होगा। दूसरा व्यक्ति तीन रोटियाँ लिये हुए होगा और तीसरा व्यक्ति एक मशक दाखमधु लिये हुए होगा। ⁴ये तीनों व्यक्ति कहेंगे, ‘आपका स्वागत है।’ वे तुम्हें दो रोटियाँ देंगे। तुम उनसे उन दो रोटियों को स्वीकार करोगे। ⁵तब तुम गिबियथ-एलोहिम जाओगे। उस स्थान पर पलिशितियों का एक किला है। जब तुम उस नगर में पहुँचोगे तो कई नबी निकल आयेंगे। ये नबी आराधनास्थल से नीचे उपासना के लिये आयेंगे। वे भविष्यवाणी* करेंगे। वे वीणा, खंजड़ी, और तम्बूरा बजा रहे होंगे। ⁶तब तत्काल तुम पर यहोवा की आत्मा उतरेगी। तुम बदल जाओगे। तुम एक भिन्न ही पुरुष हो जाओगे। तुम इन भविष्यवाक्ताओं के साथ भविष्यवाणी करने लगोगे। ⁷इन बातों के घटित होने के बाद, तुम जो चाहोगे, करोगे। परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।

⁸‘मुझसे पहले गिलगाल जाओ। मैं तुम्हारे पास उस स्थान पर आऊँगा। तब मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाऊँगा। किन्तु तुम्हें सात दिन प्रतीक्षा करनी होगी। तब मैं आऊँगा और बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना है।’

शाऊल का नबी जैसा होना

⁹जैसे ही शाऊल शमूएल को छोड़ने के लिये मुड़ा, परमेश्वर ने शाऊल का जीवन बदल दिया। ये सभी घटनायें उस दिन घटीं। ¹⁰शाऊल और उसका सेवक गिबियथ-एलोहिम गए। उस स्थान पर शाऊल नबियों के एक समूह से मिला। परमेश्वर की आत्मा शाऊल पर तीव्रता से उतरी और शाऊल ने नबियों के साथ भविष्यवाणी की। ¹¹जो लोग शाऊल को पहले से जानते थे उन्होंने

नबियों के साथ उसे भविष्यवाणी करते देखा। वे लोग आपस में पूछ-ताछ करने लगे, “कीश के पुत्र को क्या हो गया है? क्या शाऊल नबियों में से एक है?”

¹²एक व्यक्ति ने जो गिबियथ-एलोहिम में रहता था, कहा, “हाँ! और ऐसा लगता है कि यह उनका मुखिया है।” * यही कारण है कि यह प्रसिद्ध कहावत बनी: “क्या शाऊल नबियों में से कोई एक है?”

शाऊल घर पहुँचता है

¹³अन्ततः उसने नबियों की तरह बोलना बन्द किया और एक उच्च स्थान पर चला गया।

¹⁴बाद में शाऊल के चाचा ने उससे और उसके सेवक से कहा, “तुम कहाँ गए थे?” उसने उत्तर दिया, “हम गधों को देखने गए थे और उनकी खोज में चले ही जा रहे थे, किन्तु वे कहीं नहीं मिले। इसलिए हम लोग शमूएल के पास गए।”

¹⁵यह सुनकर शाऊल के चाचा ने कहा, “कृपया तुम लोग मुझे बताओ कि शमूएल ने तुम दोनों से क्या कहा?”

¹⁶शाऊल ने अपने चाचा को उत्तर दिया, “उसने पूरी सच्चाई से बताया कि गधे मिल गये हैं।” और उसने राज्य के बारे में जो शमूएल से सुना था उसे नहीं बताया।

शमूएल, शाऊल को राजा घोषित करता है

¹⁷शमूएल ने इब्राएल के सभी लोगों से मिस्या में यहोवा से मिलने के लिये एक साथ इकट्ठा होने को कहा। ¹⁸शमूएल ने कहा, “इब्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘मैंने इब्राएल को मिश्र से बाहर निकाला। मैंने तुम्हें मिश्र की अधीनता से और उन अन्य राष्ट्रों से भी बचाया जो तुम्हें चोट पहुँचाना चाहते थे।’ ¹⁹किन्तु आज तुमने अपने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया है। तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें तुम्हारे सभी कष्टों और समस्याओं से बचाता है। किन्तु तुमने कहा, ‘नहीं हम अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं।’ अब आओ और यहोवा के सामने अपने परिवारों और अपने परिवार समूहों में खड़े हो जाओ।”

भविष्यवाणी इसका अर्थ प्रायः “परमेश्वर के ओर से कहना है।” किन्तु यहाँ इसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर की आत्मा ने उस व्यक्ति पर नियन्त्रण किया और उसे गाने व नाचने का कारण बताया।

हाँ ... मुखिया है “और जो उनका पिता है” प्रायः वह व्यक्ति जो अन्य नबियों को शिक्षा देता और मार्गदर्शन करता था “पिता” कहा जाता था।

²⁰शमूएल इम्राएल के सभी परिवार समूहों को निकट लाया। तब शमूएल ने नया राजा चुनना आरम्भ किया। प्रथम बिन्यामीन का परिवार समूह चुना गया। ²¹शमूएल ने बिन्यामीन के परिवार समूह के हर एक परिवार को एक-एक करके आगे से निकलने को कहा। मत्री का परिवार चुना गया। तब शमूएल ने मत्री के परिवार के हर एक व्यक्ति को एक-एक करके उसके आगे से निकलने को कहा। इस प्रकार कीश का पुत्र शाऊल चुना गया। किन्तु जब लोगों ने शाऊल की खोज की, तो वे उसे पा नहीं सके। ²²तब उन्होंने यहोवा से पूछा, "क्या शाऊल अभी तक यहाँ नहीं आया है?"

यहोवा ने कहा, "शाऊल भेंट सामग्री के पीछे छिपा है।"

²³लोग दौड़ पड़े और शाऊल को भेंट सामग्री के पीछे से ले आये। शाऊल लोगों के बीच खड़ा हुआ। शाऊल इतना लम्बा था कि सभी लोग बस उस के कंधे तक आ रहे थे।

²⁴शमूएल ने सभी लोगों से कहा, "उस व्यक्ति को देखो जिसे यहोवा ने चुना है। लोगों में कोई व्यक्ति शाऊल के समान नहीं है।" तब लोगों ने नारा लगाया, "राजा दीर्घायु हो!"

²⁵शमूएल ने राज्य के नियमों को लोगों को समझाया। उसने उन नियमों को एक पुस्तक में लिखा। उसने पुस्तक को यहोवा के सामने रखा। तब शमूएल ने लोगों को अपने-अपने घर जाने के लिये कहा।

²⁶शाऊल भी गिबा में अपने घर चला गया। परमेश्वर ने वीर पुरुषों के हृदय का स्पर्श किया और ये वीर व्यक्ति शाऊल का अनुसरण करने लगे। ²⁷किन्तु कुछ उत्पातियों ने कहा, "यह व्यक्ति हम लोगों की रक्षा कैसे कर सकता है?" उन्होंने शाऊल की निन्दा की और उसे उपहार देने से इन्कार किया। किन्तु शाऊल ने कुछ नहीं कहा।

अम्मोनियों का राजा नाहाश

अम्मोनियों का राजा नाहाश गिलाद और याबेश के परिवार समूह को कष्ट दे रहा था। नाहाश ने उनके हर एक पुरुष की दायीं आँख निकलवा डाली थी। नाहाश किसी को उनकी सहायता नहीं करने देता था। अम्मोनियों के राजा नाहाश ने यरदन नदी के पूर्व रहने वाले हर एक इम्राएली पुरुष की दायीं आँख निकलवा ली थी। किन्तु

सत्तर हजार इम्राएली पुरुष अम्मोनियों के यहाँ से भाग निकले और याबेश गिलाद में आ गये।*

11 लगभग एक महीने बाद अम्मोनी नाहाश और उसकी सेना ने याबेश गिलाद को घेर लिया। याबेश के सभी लोगों ने नाहाश से कहा, "यदि तुम हमारे साथ सन्धि करोगे तो हम तुम्हारी प्रजा बनेंगे।"

²किन्तु अम्मोनी नाहाश ने उत्तर दिया, "मैं तुम लोगों के साथ तब सन्धि करूँगा जब मैं हर एक व्यक्ति की दायीं आँख निकाल लूँगा। तब सारे इम्राएली लज्जित होंगे!"

³याबेश के प्रमुखों ने नाहाश से कहा, "हम लोग सात दिन का समय लेंगे। हम पूरे इम्राएल में दूत भेजेंगे। यदि कोई सहायता के लिये नहीं आएगा, तो हम लोग तुम्हारे पास आएं और अपने को समर्पित कर देंगे।"

शाऊल याबेश गिलाद की रक्षा करता है:

⁴सो वे दूत गिबा में आये जहाँ शाऊल रहता था। उन्होंने लोगों को समाचार दिया। लोग जोर से रो पड़े। ⁵शाऊल अपनी बैलों के साथ खेतों में गया हुआ था। शाऊल खेत से लौटा और उसने लोगों का रोना सुना। शाऊल ने पूछा, "लोगों को क्या कष्ट है? वे रो क्यों रहे हैं?" तब लोगों ने याबेश के दूतों ने जो कहा था शाऊल को बताया। ⁶शाऊल ने उनकी बातें सुनीं। तब परमेश्वर का आत्मा शाऊल पर जल्दी से उतरा। शाऊल अत्यन्त क्रोधित हुआ। ⁷शाऊल ने बैलों की जोड़ी ली और उसके टुकड़े कर डाले। तब उसने उन बैलों के टुकड़ों को उन दूतों को दिया। उसने दूतों को आदेश दिया कि वे इम्राएल के पूरे देश में उन टुकड़ों को ले जायें। उसने उनसे इम्राएल के लोगों को यह सन्देश देने को कहा, "आओ शाऊल और शमूएल का अनुसरण करो। यदि कोई व्यक्ति नहीं आता और उसकी सहायता नहीं करता तो उसके बैलों के साथ यही होगा।" यहोवा की ओर से लोगों में बड़ा भय छा गया। वे एक इकाई के रूप में एक साथ इकट्ठे हो गए। ⁸शाऊल ने सभी पुरुषों को बेजेक में एक साथ इकट्ठा किया। वहाँ इम्राएल के तीन लाख पुरुष और यहूदा के तीस हजार पुरुष थे।

नाहाश ... गिलाद आ गए यह अंश मानक हिब्रू पाठ में नहीं है, किन्तु कुछ प्राचीन अनुवादों में है और कुमरान से प्राप्त दण्ड में लिपटे एक हिब्रू पत्रक में है।

शाऊल और उसकी सेना ने याबेश के दूतों से कहा, "गिलाद में याबेश के लोगों से कहो कि कल दोपहर तक तुम लोगों की रक्षा हो जायेगी।" दूतों ने शाऊल का सन्देश याबेश के लोगों को दिया। याबेश के लोग बड़े प्रसन्न हुए।¹⁰ तब याबेश के लोगों ने अम्मोनी नाहाश से कहा, "हम लोग कल तुम्हारे पास आएं। तब तुम हम लोगों के साथ जो चाहो कर सकते हो।"

¹¹ अगली सुबह शाऊल ने अपनी सेना को तीन टुकड़ियों में बाँटा। सूरज निकलते ही शाऊल और उसके सैनिक अम्मोनियों के डेरे में जा घुसे। जब वे उस सुबह रक्षकों को बदल रहे थे, शाऊल ने आक्रमण किया। शाऊल और उसके सैनिकों ने अम्मोनियों को दो पहर से पहले पराजित कर दिया। सभी अम्मोनी सैनिक विभिन्न दिशाओं में भागे - दो सैनिक भी एक साथ नहीं रहे।¹² तब लोगों ने शमूएल से कहा, "वे लोग कहाँ हैं जो कहते थे कि हम शाऊल को राजा के रूप में शासन करने देना नहीं चाहते? उन लोगों को लाओ! हम उन्हें मार डालेंगे!"

¹³ किन्तु शाऊल ने कहा, "नहीं! आज किसी को मत मारो! आज यहोवा ने इब्राएल की रक्षा की!"

¹⁴ तब शमूएल ने लोगों से कहा, "आओ हम लोग गिलगाल चलो। गिलगाल में हम शाऊल को फिर राजा बनायेंगे।"

¹⁵ सो सभी लोग गिलगाल चले गये। वहाँ यहोवा के सामने लोगों ने शाऊल को राजा बनाया। उन्होंने यहोवा को मेलबलि दी। शाऊल और सभी इब्राएलियों ने खुशियाँ मनायी।

शमूएल का इब्राएलियों से बात करना

12 शमूएल ने सारे इब्राएलियों से कहा: "मैंने वह सब कुछ कर दिया है जो तुम लोग मुझ से चाहते थे। मैंने तुम लोगों के ऊपर एक राजा रखा है।² अब तुम्हारे मार्गदर्शन के लिये एक राजा है। मैं श्वेतकेशी बूढ़ा हूँ। मेरे पुत्र तुम्हारे साथ हैं। जब मैं एक छोटा बालक था तब से मैं तुम्हारा मार्ग दर्शक रहा हूँ।³ मैं यहाँ हूँ। यदि मैंने कोई बुरा काम किया है तो तुम्हें उसके बारे में यहोवा से और उनके चुने हुए राजा से कहना चाहिये। क्या मैंने कभी किसी का बैल या गधा चुराया है? क्या मैंने किसी को कभी धोखा दिया है या हानि पहुँचाई है? क्या मैंने किसी का कुछ बुरा करने के लिये कभी किसी से धन

या एक जोड़ा जूता भी लिया है? यदि मैंने इनमें से कोई बुरा काम किया है तो मैं उसको ठीक करूँगा।"

⁴ इब्राएलियों ने उत्तर दिया, "नहीं! तुमने हम लोगों के लिये कभी बुरा नहीं किया। तुमने न हम लोगों को ठगा, न ही तुमने हम लोगों से कभी कुछ लिया।"

⁵ शमूएल ने इब्राएलियों से कहा, "जो तुमने कहा, यहोवा उसका गवाह है। यहोवा का चुना राजा भी आज गवाह है। वे दोनों गवाह हैं कि तुमने मुझमें कोई दोष नहीं पाया।" लोगों ने कहा, "हाँ! यहोवा गवाह है।"

⁶ तब शमूएल ने लोगों से कहा, "यहोवा गवाह है। उसने मूसा और हारून को चुना। वह तुम्हारे पूर्वजों को मिश्र से बाहर ले आया।⁷ अब चुपचाप खड़े रहो अब मैं तुम्हें उन अच्छे कामों को बताऊँगा जो यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों और तुम्हारे लिये किये थे।⁸ याकूब मिश्र गया। बाद में, मिश्रियों ने उसके वंशजों का जीवन कष्टमय बना दिया। इसलिए वे सहायता के लिये यहोवा के सामने रोये। यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा। मूसा और हारून तुम्हारे पूर्वजों को मिश्र से बाहर निकाल ले आए और इस स्थान में रहने के लिये उनका मार्ग दर्शन किया।

⁹ किन्तु तुम्हारे पूर्वज, अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गये। इसलिए यहोवा ने उन्हें सीसरा का दास होने दिया। सीसरा, हासोर की सेना का सेनापति था। तब यहोवा ने उन्हें पलिशतियों और मोआब के राजा का दास बनाया। वे सभी तुम्हारे पूर्वजों के विरुद्ध लड़े।¹⁰ किन्तु तुम्हारे पूर्वज सहायता के लिये यहोवा के सामने गिड़गिड़ाए। उन्होंने कहा, 'हम लोगों ने पाप किया है। हम लोगों ने यहोवा को छोड़ा है और झूठे देवताओं बाल और अशतरेत की सेवा की है। किन्तु अब आप हमें हमारे शत्रुओं से बचायें, हम आपकी सेवा करेंगे।'

¹¹ इसलिए यहोवा ने येरुबाल (गिदोन), बदान, बरक, यिप्तह और शमूएल को वहाँ भेजा। यहोवा ने तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा की और तुम सुरक्षित रहे।¹² किन्तु तब तुमने अम्मोनियों के राजा नाहाश को अपने विरुद्ध लड़ने के लिये आते देखा। तुमने कहा, 'नहीं! हम अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं।' तुमने यही कहा, यद्यपि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा राजा पहले से ही था।¹³ अब, तुम्हारा चुना राजा यहाँ है। यहोवा ने इस राजा को तुम्हारे ऊपर नियुक्त किया है।¹⁴ परमेश्वर यहोवा तुम्हारी रक्षा करता रहेगा।

किन्तु परमेश्वर तुम्हारी रक्षा तभी करेगा जब तुम ये करोगे तुम्हें यहोवा का सम्मान और उसकी सेवा करनी चाहिए। तुम्हें उसके आदेशों के विरुद्ध लड़ना नहीं चाहिए और तुम्हें तथा तुम्हारे ऊपर शासन करने वाले राजा को, अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करना चाहिये। यदि तुम इन्हें करते रहोगे तो परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा। ¹⁵किन्तु यदि तुम यहोवा की आज्ञा पालन नहीं करते हो और उसके आदेशों के विरुद्ध लड़ते हो, तो वह तुम्हारे विरुद्ध होगा। यहोवा तुम्हें और तुम्हारे राजा को नष्ट कर देगा।

¹⁶अब चुपचाप खड़े रहो और उस अद्भुत काम को देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आँखों के सामने करेगा। ¹⁷यह गेहूँ की फसल कटने का समय है।* मैं यहोवा से प्रार्थना करूँगा। मैं उन से बिजली की कड़क और वर्षा की याचना करूँगा। तब तुम समझोगे कि तुमने उस समय यहोवा के विरुद्ध बुरा किया था जब तुमने एक राजा की माँग की थी।”

¹⁸अतः शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। उसी दिन यहोवा ने बिजली की कड़क और वर्षा भेजी। इससे लोग यहोवा तथा शमूएल से बहुत डर गये। ¹⁹सभी लोगों ने शमूएल से कहा, “अपने परमेश्वर यहोवा से तुम अपने सेवक, हम लोगों के लिये प्रार्थना करो। हम लोगों को मरने मत दो! हम लोगों ने बहुत पाप किये हैं और अब एक राजा के लिए माँग करके हम लोगों ने उन पापों को और बढ़ाया है।”

²⁰शमूएल ने उत्तर दिया, “डरो नहीं। यह सत्य है! तुमने वे सब बुरे काम किये। किन्तु यहोवा का अनुसरण करना बन्द मत करो। अपने सच्चे हृदय से यहोवा की सेवा करो। ²¹देवमूर्तियों मात्र मूर्तियाँ हैं, वे तुम्हारी सहायता नहीं करेगी। इसलिए उनकी पूजा मत करो। देवमूर्तियाँ न तुम्हारी सहायता कर सकती हैं, न ही रक्षा कर सकती हैं। वे कुछ भी नहीं हैं।

²²किन्तु यहोवा अपने लोगों को छोड़ेगा नहीं। यहोवा तुम्हें अपने लोग बनाकर प्रसन्न हुआ था। अतः, अपने अच्छे नाम की रक्षा के लिए वह तुमको छोड़ेगा नहीं। ²³यदि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना बन्द कर देता हूँ तो यह मेरे लिए अपमानजनक होगा। यदि मैं तुम्हारे लिये

प्रार्थना करना बन्द करता हूँ तो यह यहोवा के विरुद्ध पाप करना होगा। मैं तुम्हें वह शिक्षा दूँगा जो तुम्हारे लिये अच्छी व उचित है। ²⁴किन्तु तुम्हें भी यहोवा का सम्मान करते रहना चाहिये। तुम्हें पूरे हृदय से यहोवा की सेवा सच्चाई के साथ करनी चाहिये। उन अद्भुत कामों को याद रखो जिन्हें उसने तुम्हारे लिये किये। ²⁵किन्तु यदि तुम हठी हो, और बुरा करते हो तो परमेश्वर तुम्हें और तुम्हारे राजा को ऐसे झाड़ू फेंकेगा जैसे झाड़ू से कूड़े को फेंका जाता है।”

शाऊल अपनी पहली गलती करता है

13 अब तक, शाऊल एक वर्ष तक राज्य कर चुका था और फिर जब शाऊल इज़्राएल पर दो वर्ष शासन कर चुका, ²उसने इज़्राएल से तीन हजार व्यक्ति चुने। उनमें दो हजार वे व्यक्ति थे जो बेतेल के पहाड़ी प्रदेश के मिकमाश में उसके साथ ठहरे थे और एक हजार वे व्यक्ति थे जो बिन्यामीन के अंतर्गत गिबा में योनातान के साथ ठहरे थे। शाऊल ने सेना के अन्य सैनिकों को उनके अपने घर भेज दिया।

³योनातान ने गिबा में जाकर पलिशतियों को उनके डेरे में हराया। पलिशतियों ने इसके बारे में सुना। उन्होंने कहा, “हिब्रूओं ने किद्रोह किया है।” शाऊल ने कहा, “जो कुछ हुआ है उसे हिब्रू लोगों को सुनाओ।” अतः शाऊल ने लोगों से कहा कि वे पूरे इज़्राएल देश में तुरही बजायें। ⁴सभी इज़्राएलियों ने वह समाचार सुना। उन्होंने कहा, “शाऊल ने पलिशती सेना प्रमुख को मार डाला है। अब पलिशती सचमुच इज़्राएलियों से घृणा करते हैं।”

इज़्राएली लोगों को शाऊल से जुड़ने के लिये गिलगाल में बुलाया गया। ⁵पलिशती इज़्राएल से लड़ने के लिए इकट्ठे हुए। पलिशतियों के पास छः हजार रथ और तीन हजार* घुड़सवार थे। वहाँ इतने अधिक पलिशती सैनिक थे जितने सागर तट पर बालू के कण। पलिशतियों ने मिकमाश में डेरा डाला। (मिकमाश बेतावेन के पूर्व है।)

⁶इज़्राएलियों ने देखा कि वे मुसीबत में हैं। उन्होंने अपने को जाल में पँसा अनुभव किया। वे गुफाओं और चट्टानों के अन्तरालों में छिपने के लिए भाग गये। वे चट्टानों, कुँओं और जमीन के अन्य गढ़दों में छिप गये। ⁷कुछ हिब्रू यरदन नदी पार कर गाद और गिलाद प्रदेश में भी

तीन हजार हिब्रू पाठ में तीस हजार है।

यह गेहूँ ... समय है यह वर्ष सूखा मौसम था और उस समय वर्षा नहीं हो रही थी।

भाग गए। शाऊल तब तक गिलगाल में था। उसकी सेना के सभी सैनिक भय से काँप रहे थे।

⁸शमूएल ने कहा कि वह शाऊल से गिलगाल में मिलेगा। शाऊल ने वहाँ सात दिन तक प्रतीक्षा की। किन्तु शमूएल तब भी गिलगाल नहीं पहुँचा था और सैनिक शाऊल को छोड़ने लगे। ⁹इसलिए शाऊल ने कहा, “मेरे लिए होमबलि और मेलबलि लाओ।” तब शाऊल ने होमबलि चढ़ायी। ¹⁰ज्योंही शाऊल ने बलि-भेंट चढ़ानी समाप्त की, शमूएल आ गया। शाऊल उसके मिलने गया।

¹¹शमूएल ने पूछा, “यह तुमने क्या कर दिया?”

शाऊल ने उत्तर दिया, “मैंने सैनिकों को अपने को छोड़ते देखा और तुम तब तक यहाँ नहीं थे, और पलिशती मिकमाश में इकट्ठा हो रहे थे।” ¹²मैंने अपने मन में सोचा, “पलिशती यहाँ गिलगाल में आकर मुझ पर आक्रमण करेंगे और मैंने अब तक यहोवा से हमारी सहायता करने के लिये याचना नहीं की है। अतः मैंने अपने को विवश किया और मैंने होमबलि चढ़ाई।”

¹³शमूएल ने कहा, “तुमने मूर्खता का काम किया! तुमने अपने परमेश्वर यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। यदि तुमने परमेश्वर के आदेश का पालन किया होता तो परमेश्वर ने तुम्हारे परिवार को सदा के लिये इम्राएल पर शासन करने दिया होता। ¹⁴किन्तु अब तुम्हारा राज्य आगे नहीं चलेगा। यहोवा ऐसे व्यक्ति की खोज में था जो उसकी आज्ञा का पालन करना चाहता हो। यहोवा ने उस व्यक्ति को पा लिया है और यहोवा उसे अपने लोगों का नया प्रमुख होने के लिये चुनेगा। तुमने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया इसलिए यहोवा नया प्रमुख चुनेगा।” ¹⁵तब शमूएल उठा और उसने गिलगाल को छोड़ दिया।

मिकमाश का युद्ध

शाऊल और उसकी बची सेना ने गिलगाल को छोड़ दिया। वे बिन्यामीन में गिबा को गये। शाऊल ने उन व्यक्तियों को गिना जो अब तक उसके साथ थे। वहाँ लगभग छः सौ पुरुष थे। ¹⁶शाऊल, उसका पुत्र योनातान और सैनिक बिन्यामीन में गिबा को गए। पलिशतियों ने मिकमाश में डेरा डाला था। ¹⁷पलिशतियों ने उस क्षेत्र में रहने वाले इम्राएलियों को दण्ड देने का निश्चय किया। अतः उनकी शाक्तिशाली सेना ने आक्रमण करने के

लिए अपना स्थान छोड़ दिया। पलिशती सेना तीन टुकड़ियों में बँटी थी। एक टुकड़ी उत्तर को ओप्रा को जाने वाली सड़क से शुआल के क्षेत्र में गई। ¹⁸दूसरी टुकड़ी दक्षिण-पूर्व बेशोरोन को जाने वाली सड़क पर गई और तीसरी टुकड़ी पूर्व में सीमा तक जाने वाली सड़क से गई। यह सड़क सबोईम की घाटी में मरुभूमि की ओर खुलती थी।

¹⁹इम्राएली लोगों में से कोई भी लोहे की चीजें नहीं बना सकता था। उन दिनों इम्राएल में लोहार नहीं थे। पलिशती इम्राएलियों को लोहे की चीजें बनाना नहीं सिखते थे क्योंकि पलिशती डरते थे कि इम्राएली कहीं लोहे की तलवारों और भाले न बनाने लग जायें। ²⁰केवल पलिशती ही लोहे के औजारों पर धार चढ़ा सकते थे। अतः यदि इम्राएली अपने हल की फली, कुदाली, कुल्हाड़ी या दैराती पर धार चढ़ाना चाहते तो उन्हें पलिशतियों के पास जाना पड़ता था। ²¹पलिशती लोहार एक तिहाई औंस चाँदी हल की फली और कुदाली पर धार चढ़ाने के लिये लेते थे और एक छटाई औंस चाँदी फावड़ी, कुल्हाड़ी और बैलों को चलाने की साँटी के लोहे के सिरे पर धार चढ़ाने के लिये लेते थे। ²²इसलिए युद्ध के दिन शाऊल के इम्राएली सैनिकों में से किसी के पास लोहे की तलवार या भाले नहीं थे। केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास लोहे के शस्त्र थे।

²³पलिशती सैनिकों की एक टुकड़ी मिकमाश के दर्रे की रक्षा कर रही थी।

योनातान पलिशतियों पर आक्रमण करता है

14 उस दिन, शाऊल का पुत्र योनातान उस युवक से बात कर रहा था, जो उसके शस्त्रों को ले कर चलता था। योनातान ने कहा, “हम लोग घाटी की दूसरी ओर पलिशतियों के डेरे पर चलें।” किन्तु योनातान ने अपने पिता को नहीं बताया।

²शाऊल एक अनार के पेड़ के नीचे पहाड़ी के सिरे* पर मिग्रोन में बैठा था। यह उस स्थान पर खलिहान के निकट था। शाऊल के साथ उस समय लगभग छः सौ योद्धा थे। एक व्यक्ति का नाम अहिव्याह था। ³एली शीलो में यहोवा का याजक रह चुका था। अब वह अहिव्याह याजक था। अहिव्याह अब एपोद पहनता था। अहिव्याह

पहाड़ी का सिरा या “गिबा” का सिरा।”

ईकाबोद के भाई अहीतूब का पुत्र था। ईकाबोद पीनहास का पुत्र था। पीनहास एली का पुत्र था।

⁴दर्रे के दोनों ओर एक विशाल चट्टान थी। योनातान ने पलिशती डेरे में उस दर्रे से जाने की योजना बनाई। विशाल चट्टान के एक तरफ बोसेस था और उस विशाल चट्टान के दूसरी तरफ सेने था। ⁵एक विशाल चट्टान उत्तर की मिकमाश को देखती सी खड़ी थी। दूसरी विशाल चट्टान दक्षिण की तरफ गिबा की ओर देखती सी खड़ी थी।

⁶योनातान ने अपने उस युवक सहायक से कहा जो उस के शस्त्र को ले चलता था, “आओ, हम उन विदेशियों के डेरे में चले। संभव है यहोवा हम लोगों का उपयोग इन लोगों को पराजित करने में करे। यहोवा को कोई नहीं रोक सकता इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है कि हमारे पास बहुत से सैनिक हैं या थोड़े से सैनिक।”

⁷योनातान के शस्त्र वाहक युवक ने उससे कहा, “जैसा तुम सर्वोत्तम समझो करो। मैं सब तरह से तुम्हारे साथ हूँ।”

⁸योनातान ने कहा, “हम चलें! हम लोग घाटी को पार करेंगे और उन पलिशती रक्षकों तक जायेंगे। हम लोग उन्हें अपने को देखने देंगे। ⁹यदि वे हमसे कहते हैं ‘तुम वहीं रुको जब तक हम तुम्हारे पास आते हैं,’ तो हम लोग वहीं ठहरेंगे, जहाँ हम होंगे। हम उनके पास नहीं जायेंगे। ¹⁰किन्तु यदि पलिशती लोग यह कहते हैं, ‘हमारे पास आओ’ तो हम उनके पास तक चढ़ जायेंगे। क्यों? क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से एक संकेत होगा। उसका अर्थ यह होगा कि यहोवा हम लोगों को उन्हें हराने देगा।”

¹¹इसलिये योनातान और उसके सहायक ने अपने को पलिशती द्वारा देखने दिया। पलिशती रक्षकों ने कहा, “देखो! हिब्रू उन गड्डों से निकल कर आ रहे हैं जिनमें वे छिपे थे।” ¹²किले के पलिशती योनातान और उसके सहायक के लिये चिल्लाये “हमारे पास आओ। हम तुम्हें अभी पाठ पढ़ाते हैं।” योनातान ने अपने सहायक से कहा, “पहाड़ी के ऊपर तक मेरा अनुसरण करो। यहोवा ने इम्राएल के लिये पलिशतियों को दे दिया है।”

¹³⁻¹⁴इसलिये योनातान ने अपने हाथ और पैरों का उपयोग पहाड़ी पर चढ़ने के लिये किया। उसका सहायक ठीक उसके पीछे चढ़ा। योनातान और उसके सहायक ने उन पलिशतियों को पराजित किया। पहले आक्रमण में

उन्होंने लगभग आधे एकड़* क्षेत्र में बीस पलिशतियों को मारा। योनातान उन लोगों से लड़ा जो सामने से आक्रमण कर रहे थे और योनातान का सहायक उसके पीछे से आया और उन व्यक्तियों को मारता चला गया जो अभी केवल घायल थे।

¹⁵सभी पलिशती सैनिक, रणक्षेत्र के सैनिक, डेरे के सैनिक और किले के सैनिक आतंकित हो गये। यहाँ तक की सर्वाधिक वीर योद्धा भी आतंकित हो गये। धरती हिलने लगी और पलिशती सैनिक भयानक ढंग से डर गये।

¹⁶शाऊल के रक्षकों ने बिन्यामीन देश में गिबा के पलिशती सैनिकों को विभिन्न दिशाओं में भागते देखा। ¹⁷शाऊल ने अपने साथ की सेना से कहा, “सैनिकों को गिना। मैं यह जानना चाहता हूँ कि डेरे को किसने छोड़ा।” उन्होंने सैनिकों को गिना। योनातान और उसका सहायक चले गये थे।

¹⁸शाऊल ने अहिय्याह से कहा, “परमेश्वर की पवित्र सन्दूक लाओ!” (उस समय परमेश्वर का पवित्र सन्दूक इम्राएलियों के साथ था।) ¹⁹शाऊल याजक अहिय्याह से बातें कर रहा था। शाऊल परमेश्वर के मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहा था। किन्तु पलिशती डेरे में शोर और अव्यवस्था लगातार बढ़ती जा रही थी। शाऊल धैर्य खो रहा था। अन्त में शाऊल ने याजक अहिय्याह से कहा, “काफ़ी हो चुका! अपने हाथ को नीचे करो और प्रार्थना करना बन्द करो।”

²⁰शाऊल ने अपनी सेना इकट्ठी की और युद्ध में चला गया। पलिशती सैनिक सचमुच घबरा रहे थे! वे अपनी तलवारों से आपस में ही एक दूसरे से युद्ध कर रहे थे। ²¹वहाँ हिब्रू भी थे जो इसके पूर्व पलिशतियों की सेवा में थे और जो पलिशती डेरे में रुके थे। किन्तु अब उन हिब्रूओं ने शाऊल और योनातान के साथ के इम्राएलों का साथ दिया। ²²उन इम्राएलियों ने जो एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में छिपे थे, पलिशती सैनिकों के भागने की बात सुनी। सो इन इम्राएलियों ने भी युद्ध में साथ दिया और पलिशतियों का पीछा करना आरम्भ किया।

²³इस प्रकार यहोवा ने उस दिन इम्राएलियों की रक्षा की। युद्ध बेतावेन के परे पहुँच गया। सारी सेना शाऊल के साथ थी, उसके पास लगभग दस हजार पुरुष थे।

आधे एकड़ आधी जोत में।

एग्रैम के पहाड़ी प्रदेश के हर नगर में युद्ध का विस्तार हो गया था।*

शाऊल दूसरी गलती करता है

²⁴किन्तु शाऊल ने उस दिन एक बड़ी गलती की।* इम्राएली भूखे और थके थे। यह इसलिए हुआ कि शाऊल ने लोगों को यह प्रतिज्ञा करने को विवश किया: शाऊल ने कहा, “यदि कोई व्यक्ति सन्ध्या होने से पहले भोजन करता है अथवा मेरे द्वारा शत्रु को पराजित करने के पहले भोजन करता है तो वह व्यक्ति दण्डित किया जाएगा!” इसलिए किसी भी इम्राएली सैनिक ने भोजन नहीं किया।

²⁵⁻²⁶ युद्ध के कारण लोग जंगलों में चले गए। उन्होंने वहाँ भूमि पर पड़ा एक शहद का छत्ता देखा। इम्राएली उस स्थान पर आए जहाँ शहद का छत्ता था। लोग भूखे थे, किन्तु उन्होंने तनिक भी शहद नहीं पिया। वे उस प्रतिज्ञा को तोड़ने से भयभीत थे। ²⁷किन्तु योनातान उस प्रतिज्ञा के बारे में नहीं जानता था। योनातान ने यह नहीं सुना था कि उसके पिता ने उस प्रतिज्ञा को करने के लिये लोगों को विवश किया है। योनातान के हाथ में एक छड़ी थी। उसने शहद के छत्ते में उसके सिरे को धंसाया। उसने कुछ शहद निकाला और उसे चाटा और उसने अपने को स्वस्थ अनुभव किया।

²⁸सैनिकों में से एक ने योनातान से कहा, “तुम्हारे पिता ने एक विशेष प्रतिज्ञा करने के लिये सैनिकों को विवश किया है। तुम्हारे पिता ने कहा है कि जो कोई आज खायेगा, दण्डित होगा। यही कारण है कि पुरुषों ने कुछ भी खाया नहीं। यही कारण है कि पुरुष कमजोर हैं।”

²⁹योनातान ने कहा, “मेरे पिता ने लोगों के लिये परेशानी उत्पन्न की है! देखो इस जरा से शहद को चाटने से मैं कितना स्वस्थ अनुभव कर रहा हूँ! ³⁰बहुत अच्छा होता कि लोग वह भोजन करते जो उन्होंने आज शत्रुओं से लिया था। हम बहुत अधिक पलिशितियों को मार सकते थे!”

एग्रैम ... गया था यह वाक्य प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है, किन्तु हिब्रू में नहीं।

किन्तु ... गलती की यह वाक्य प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है, किन्तु हिब्रू में नहीं।

³¹उस दिन इम्राएलियों ने पलिशितियों को हराया। वे उनसे मिकमाश से अय्यालोन तक के पूरे मार्ग पर लड़े। क्योंकि लोग बहुत भूखे और थके हुए थे। ³²उन्होंने पलिशितियों से भेड़ें, गायें और बछड़े लिये थे। उस समय इम्राएल के लोग इतने भूखे थे कि उन्होंने उन जानवरों को जमीन पर ही मारा और उन्हें खाया। जानवरों में तब तक खून था।

³³एक व्यक्ति ने शाऊल से कहा, “देखो! लोग यहोवा के विरुद्ध पाप कर रहे हैं। वे ऐसा माँस खा रहे हैं जिसमें खून है!”

शाऊल ने कहा, “तुम लोगों ने पाप किया है! यहाँ एक विशाल पत्थर लुढ़काकर लाओ।” ³⁴तब शाऊल ने कहा, “लोगों के पास जाओ और कहो कि हर एक व्यक्ति अपना बैल और भेड़ें मेरे पास यहाँ लाये। तब लोगों को अपने बैल और भेड़ें यहाँ मारनी चाहिये। यहोवा के विरुद्ध पाप मत करो। वह माँस न खाओ जिसमें खून हो।” उस रात हर एक व्यक्ति अपने जानवरों को लाया और उन्हें वहाँ मारा। ³⁵तब शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई। शाऊल ने यहोवा के लिये स्वयं वह वेदी बनानी आरम्भ की।

³⁶शाऊल ने कहा, “हम लोग आज रात को पलिशितियों का पीछा करें। हम लोग हर वस्तु ले लेंगे। हम उन सभी को मार डालेंगे।” सेना ने उत्तर दिया, “वैसे ही करो जैसे तुम ठीक समझते हो।” किन्तु याजक ने कहा, “हमें परमेश्वर से पूछने दो।”

³⁷अतः शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, “क्या मुझे पलिशितियों का पीछा करने जाना चाहिए? क्या तू हमें पलिशितियों को हराने देगा?” किन्तु परमेश्वर ने शाऊल को उस दिन उत्तर नहीं दिया।

³⁸इसलिए शाऊल ने कहा, “मेरे पास सभी प्रमुखों को लाओ। हम लोग मालूम करें कि आज किसने पाप किया है।” ³⁹मैं इम्राएल की रक्षा करने वाले यहोवा की शपथ खा कर यह प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि मेरे अपने पुत्र योनातान ने भी पाप किया हो तो वह अवश्य मरेगा।” सेना में किसी ने भी कुछ नहीं कहा।

⁴⁰तब शाऊल ने सभी इम्राएलियों से कहा, “तुम लोग इस ओर खड़े हो। मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर खड़े होंगे।” सैनिकों ने उत्तर दिया, “महाराज! आप जैसा चाहें।”

41तब शाऊल ने प्रार्थना की, “इब्राएल के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा सेवक हूँ आज तू मुझे उत्तर क्यों नहीं दे रहा है? यदि मैंने या मेरे पुत्र योनातान ने पाप किया है तो इब्राएल के परमेश्वर यहोवा तू उरीम दे और यदि तेरे लोग इब्राएलियों ने पाप किया है तो तुम्मिम दें। शाऊल और योनातान धर लिए गए और लोग छूट गए। 42शाऊल ने कहा, “उन्हें फिर से फेंको कि कौन पाप करेवाला है मैं या मेरा पुत्र योनातान।” योनातान चुन लिया गया।

43शाऊल ने योनातान से कहा, “मुझे बताओ कि तुमने क्या किया है?” योनातान ने शाऊल से कहा, “मैंने अपनी छड़ी के सिरे से केवल थोड़ा सा शहद चाटा था। क्या मुझे वह करने के कारण मरना चाहिये?”

44शाऊल ने कहा, “यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरा नहीं करता हूँ तो परमेश्वर मेरे लिये बहुत बुरा करे। योनातान को मरना चाहिये!”

45किन्तु सैनिकों ने शाऊल से कहा, “योनातान ने आज इब्राएल को बड़ी विजय तक पहुँचाया। क्या योनातान को मरना ही चाहिए? कभी नहीं! हम लोग परमेश्वर की शपथ खाकर वचन देते हैं कि योनातान का एक बाल भी बाँका नहीं होगा। परमेश्वर ने आज पलिशितयों के विरुद्ध लड़ने में योनातान की सहायता की है।” इस प्रकार लोगों ने योनातान को बचाया। उसे मृत्युदण्ड नहीं दिया गया।

46शाऊल ने पलिशितयों का पीछा नहीं किया। पलिशती अपने स्थान को लौट गये।

शाऊल का इब्राएल के शत्रुओं से युद्ध

47शाऊल ने इब्राएल पर पूरा अधिकार जमा लिया और दिखा दिया कि वह राजा है। शाऊल इब्राएल के चारों ओर रहने वाले शत्रुओं से लड़ा। शाऊल, अम्मोनी, मोआबी, सोबा के राजा एदोम, और पलिशितयों से लड़ा। जहाँ कहीं शाऊल गया, उसने इब्राएल के शत्रुओं को पराजित किया। 48शाऊल बहुत वीर था। उसने अमालेकियों को हराया। शाऊल ने इब्राएल को उसके उन शत्रुओं से बचाया जो इब्राएल के लोगों से उनकी सम्पत्ति छीन लेना चाहते थे।

49शाऊल के पुत्र थे योनातान, यिशवी और मलकीश। शाऊल की बड़ी पुत्री का नाम मेरब था। शाऊल की छोटी पुत्री का नाम मीकल था। 50शाऊल की पत्नी का नाम अहीनोअम था। अहीनोअम अहीमास की पुत्री थी।

शाऊल की सेना के सेनापति का नाम अब्नेर था, जो नेर का पुत्र था। नेर शाऊल का चाचा था। 51शाऊल का पिता कीश और अब्नेर का पिता नेर, अबीएल के पुत्र थे।

52शाऊल अपने जीवन भर वीर रहा और पलिशितयों के विरुद्ध दृढ़ता से लड़ा। शाऊल जब भी कभी किसी व्यक्ति को ऐसा वीर देखता जो शक्तिशाली होता तो वह उसे ले लेता और उसे उन सैनिकों की टुकड़ी में रखता जो उसके समीप रहते और उसकी रक्षा करते थे।

शाऊल का अमालेकियों को नष्ट करना

15 शमूएल ने शाऊल से कहा, “यहोवा ने मुझे अपने इब्राएली लोगों पर राजा के रूप में तुम्हारा अभिषेक करने के लिये भेजा था। अब यहोवा का सन्देश सुनो। 2सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: ‘जब इब्राएली मिश्र से बाहर आये तब अमालेकियों ने उन्हें कनान पहुँचाने से रोकने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि अमालेकियों ने उन्हें क्या किया।’ 3अब जाओ और अमालेकियों से युद्ध करो। तुम्हें अमालेकियों और उनकी सभी चीजों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिये। कुछ भी जीवित न रहने दो, तुम्हें सभी पुरुषों और स्त्रियों को मार डालना चाहिये। तुम्हें सभी बच्चों और शिशुओं को मार डालना चाहिए। तुम्हें उनकी सभी गायों, भेड़ों, ऊँटों और गधों को मार डालना चाहिये।”

4शाऊल ने तलाईम में सेना एकत्रित की। उसमें दो लाख पैदल सैनिक और दस हजार अन्य सैन्य पुरुष थे। इनमें यहूदा के लोग भी सम्मिलित थे। 5तब शाऊल अमालेक नगर को गया और वहाँ उसने घाटी में उनकी प्रतीक्षा की। 6शाऊल ने केनियों से कहा, “चले जाओ, अमालेकियों को छोड़ दो। तब मैं तुम लोगों को अमालेकियों के साथ नष्ट नहीं करूँगा। तुम लोगों ने इब्राएलियों के प्रति दया दिखाई थी जब वे मिश्र से आये थे।” इसलिए केनी लोगों ने अमालेकियों को छोड़ दिया।

7शाऊल ने अमालेकियों को हराया। उसने उनसे हवीला से मिश्र की सीमा शूर तक निरन्तर युद्ध किया। 8शाऊल ने अगाग को जीवित पकड़ लिया। अगाग अमालेकियों का राजा था। अगाग की सेना के सभी व्यक्तियों को शाऊल ने मार डाला। 9किन्तु शाऊल और इब्राएल के सैनिकों ने अगाग को जीवित रहने दिया। उन्होंने सर्वोत्तम भेड़ों, मोटी तगड़ी गायों और मेमनों को भी रख लिया।

उन्होंने रखने योग्य सभी चीजों को रख लिया और उन्होंने उन सभी चीजों को नष्ट कर दिया जो किसी काम की न थी।

शमूएल का शाऊल को उसके पाप के बारे में बताना

¹⁰शमूएल को यहोवा का सन्देश आया। ¹¹यहोवा ने कहा, “शाऊल ने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया है। इसलिए मुझे इसका अफसोस है कि मैंने उसे राजा बनाया। वह उन कामों को नहीं कर रहा है जिन्हें करने का आदेश मैं उसे देता हूँ।” शमूएल भड़क उठा और फिर उसने रात भर यहोवा की प्रार्थना की।

¹²शमूएल आले सवेरे उठा और शाऊल से मिलने गया। किन्तु लोगों ने बताया, “शाऊल यहूदा में कर्मेल नामक नगर को गया है। शाऊल वहाँ अपने सम्मान में एक पत्थर की यादगार बनाने गया था। तब शाऊल ने कई स्थानों की यात्रा की और अन्त में गिलगाल को चला गया।”

इसलिये शमूएल वहाँ गया जहाँ शाऊल था। शाऊल ने अमालेकियों से ली गई चीजों का पहला भाग ही भेंट में चढ़ाया था।* शाऊल उन्हें होम बलि के रूप में यहोवा को भेंट चढ़ा रहा था। ¹³शमूएल शाऊल के पास पहुँचा। शाऊल ने कहा, “स्वागत, “यहोवा आपको आशीर्वाद दे: मैंने यहोवा के आदेशों का पालन किया है।” ¹⁴किन्तु शमूएल ने कहा, “तो मैं ये आवाजें क्या सुन रहा हूँ? मैं भेड़ और पशुओं की आवाज क्यों सुन रहा हूँ?”

¹⁵शाऊल ने उत्तर दिया, “सैनिकों ने उन्हें अमालेकियों से लिया। सैनिकों ने सर्वोत्तम भेड़ों और पशुओं को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि के रूप में जलाने के लिए बचा लिया है। किन्तु हम लोगों ने अन्य सभी चीजों को नष्ट कर दिया है।”

¹⁶शमूएल ने शाऊल से कहा, “रुको! मुझे तुमसे वही कहने दो जिसे पिछली रात यहोवा ने मुझसे कहा है।” शाऊल ने उत्तर दिया, “मुझे बताओ।”

¹⁷शमूएल ने कहा, “बीते समय में, तुमने यही सोचा था कि तुम महत्वपूर्ण नहीं हो। किन्तु तब भी तुम इज़्राएल के परिवार समूहों के प्रमुख बन गए। यहोवा ने तुम्हें इज़्राएल का राजा चुना। ¹⁸यहोवा ने तुम्हें एक विशेष सेवाकार्य के लिये भेजा। यहोवा ने कहा, ‘जाओ और उन सभी बुरे अमालेकियों को नष्ट करो! उनसे तब तक लड़ते रहो

जब तक वे नष्ट न हो जायें।’ ¹⁹किन्तु तुमने यहोवा की नहीं सुनी। तुम उन चीजों को रखना चाहते थे। इसलिये तुमने वह किया जिसे यहोवा ने बुरा कहा।”

²⁰शाऊल ने कहा, “किन्तु मैंने तो यहोवा की आज्ञा का पालन किया। मैं वहाँ गया जहाँ यहोवा ने मुझे भेजा। मैंने सभी अमालेकियों को नष्ट किया। मैं केवल उनके राजा अगाग को वापस लाया। ²¹सैनिकों ने सर्वोत्तम भेड़ें और पशु गिलगाल में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि देने के लिये चुने।”

²²किन्तु शमूएल ने उत्तर दिया, “यहोवा को इन दो में से कौन अधिक प्रसन्न करता है: होमबलियाँ और बलियाँ या यहोवा की आज्ञा का पालन करना? यह अधिक अच्छा है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया जाय इसकी अपेक्षा कि उसे बलि-भेंट की जाये। यह अधिक अच्छा है कि परमेश्वर की बातें सुनी जाये इसकी अपेक्षा कि मेडों से चर्बी-भेंट की जाय। ²³आज्ञा के पालन से इन्कार करना जादूगरी करने के पाप जैसा है। हठी होना और मनमानी करना मूर्तियों की पूजा करने जैसा पाप है। तुमने यहोवा की आज्ञा मानने से इन्कार किया। इसी कारण यहोवा अब तुम्हें राजा के रूप में स्वीकार करने से इन्कार करता है।”

²⁴तब शाऊल ने शमूएल से कहा, “मैंने पाप किया है। मैंने यहोवा के आदेशों को नहीं माना है और मैंने वह नहीं किया है जो तुमने करने को कहा। मैं लोगों से डरता था इसलिए मैंने वह किया जो उन्होंने कहा। ²⁵अब मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे पाप को क्षमा करो। मेरे साथ लौटो जिससे मैं यहोवा की उपासना कर सकूँ।”

²⁶किन्तु शमूएल ने शाऊल से कहा, “मैं तुम्हारे साथ नहीं लौटूँगा। तुमने यहोवा के आदेश को नकारा है और अब यहोवा तुम्हें इज़्राएल के राजा के रूप में नकार रहा है।”

²⁷जब शमूएल उसे छोड़ने के लिये मुड़ा, शाऊल ने शमूएल के लबादे को पकड़ लिया। लबादा फट गया। ²⁸शमूएल ने शाऊल से कहा, “तुमने मेरे लबादे को फाड़ दिया। इसी प्रकार यहोवा ने आज इज़्राएल के राज्य को तुमसे फाड़ दिया है। यहोवा ने राज्य तुम्हारे मित्रों में से एक को दे दिया है। वह व्यक्ति तुमसे अच्छा है। ²⁹यहोवा

शाऊल ने ... चढ़ाया था यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। यह हिब्रू मानक पाठ में नहीं है।

इज़्राएल का परमेश्वर है। यहोवा शाश्वत है। यहोवा न तो झूठ बोलता है, न ही अपना मन बदलता है। यहोवा मनुष्य की तरह नहीं है जो अपने इरादे बदलते हैं।”

³⁰शाऊल ने उत्तर दिया, “ठीक है, मैंने पाप किया! किन्तु कृपया मेरे साथ लौटो। इज़्राएल के लोगों और प्रमुखों के सामने मुझे कुछ सम्मान दो। मेरे साथ लौटो जिससे मैं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की उपासना कर सकूँ।” ³¹शमूएल शाऊल के साथ लौट गया और शाऊल ने यहोवा की उपासना की।

³²शमूएल ने कहा, “अमालेकियों के राजा अगाग, को मेरे पास लाओ।” अगाग शमूएल के सामने आया। अगाग जंजीरों में बंधा था। अगाग ने सोचा, “निश्चय ही यह मुझे मारेगा नहीं।”

³³किन्तु शमूएल ने अगाग से कहा, “तुम्हारी तलवारों ने बच्चों को उनकी माताओं से छीना। अतः अब तुम्हारी माँ का कोई बच्चा नहीं रहेगा।” और शमूएल ने गिलगाल में यहोवा के सामने अगाग के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। ³⁴तब शमूएल वहाँ से चला और रामा पहुँचा और शाऊल अपने घर गिबा को गया।

³⁵उसके बाद शमूएल ने अपने पूरे जीवन में शाऊल को नहीं देखा। शमूएल शाऊल के लिये बहुत दुःखी रहा और यहोवा को बड़ा दुःख था कि उसने शाऊल को इज़्राएल का राजा बनाया।

शमूएल का बेतलेहेम को जाना

16 यहोवा ने शमूएल से कहा, “तुम शाऊल के लिये कब तक दुःखी रहोगे? मैंने शाऊल को इज़्राएल का राजा होना अस्वीकार कर दिया है। अपनी सींग* तेल से भरो और चल पड़ो। मैं तुम्हें यिशै नाम के एक व्यक्ति के पास भेज रहा हूँ। यिशै बेतलेहेम में रहता है। मैंने उसके पुत्रों में से एक को नया राजा चुना है।”

²किन्तु शमूएल ने कहा, “यदि मैं जाऊँ, तो शाऊल इस समाचार को सुनेगा। तब वह मुझे मार डालने का प्रयत्न करेगा।”

यहोवा ने कहा, “बेतलेहेम जाओ। एक बछड़ा अपने साथ ले जाओ। यह कहो, ‘मैं यहोवा को बलि चढ़ाने

आया हूँ।’ यिशै को बलि के समय आमंत्रित करो। तब मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना है। तुम्हें उस व्यक्ति का अभिषेक करना चाहिये जिसे मैं दिखाऊँ।”

⁴शमूएल ने वही किया जो यहोवा ने उसे करने को कहा था। शमूएल बेतलेहेम गया। बेतलेहेम के बुजुर्ग भय से काँप उठे। वे शमूएल से मिले और उन्होंने उससे पूछा, “क्या आप शान्तिपूर्वक आए हैं?”

⁵शमूएल ने उत्तर दिया, “हाँ, मैं शान्तिपूर्वक आया हूँ। मैं यहोवा को बलि-भेंट करने आया हूँ। अपने को तैयार करो और मेरे साथ बलि-भेंट में आओ।” शमूएल ने यिशै और उसके पुत्रों को तैयार किया। तब शमूएल ने उन्हें आने और बलि-भेंट में भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया।

⁶जब यिशै और उसके पुत्र आए, तो शमूएल ने एलीआब को देखा। शमूएल ने सोचा, “निश्चय ही यही वह व्यक्ति है जिसे यहोवा ने चुना है।” किन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, “एलीआब लम्बा और सुन्दर है किन्तु उसके बारे में मत सोचो। एलीआब लम्बा है किन्तु उसके बारे में मत सोचो। परमेश्वर उस चीज को नहीं देखता जिसे साधारण व्यक्ति देखते हैं। लोग व्यक्ति के बाहरी रूप को देखते हैं, किन्तु यहोवा व्यक्ति के हृदय को देखता है। एलीआब उचित व्यक्ति नहीं है।”

⁸तब यिशै ने अपने दूसरे पुत्र अबीनादाब को बुलाया। अबीनादाब शमूएल के पास से गुजरा। किन्तु शमूएल ने कहा, “नहीं, यह भी वह व्यक्ति नहीं है कि जिसे यहोवा ने चुना है।”

⁹तब यिशै ने शम्मा को शमूएल के पास से गुजरने को कहा। किन्तु शमूएल ने कहा, “नहीं, यहोवा ने इस व्यक्ति को भी नहीं चुना है।”

¹⁰यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल को दिखाया। किन्तु शमूएल ने यिशै को कहा, “यहोवा ने इन व्यक्तियों में से किसी को भी नहीं चुना है।”

¹¹तब शमूएल ने यिशै से पूछा, “क्या तुम्हारे सभी पुत्र ये ही हैं?” यिशै ने उत्तर दिया, “नहीं, मेरा सबसे छोटा एक और पुत्र है, किन्तु वह भेड़ों की रखवाली कर रहा है।”

शमूएल ने कहा, “उसे बुलाओ। उसे यहाँ लाओ। हम लोग तब तक खाने नहीं बैठेंगे जब तक वह आ नहीं जाता।”

सींग एक खाली सींग जो किसी जानवर का होता था यह प्रायः एक बोतल की तरह काम में आता था।

¹²यिश्नै ने किसी को अपने सबसे छोटे पुत्र को लाने के लिये भेजा। यह पुत्र सुन्दर और सुनहरे बालों वाला* युवक था। यह बहुत सुन्दर था। यहोवा ने शमूएल से कहा, “उठो, इसका अभिषेक करो। यही है वह।”

¹³शमूएल ने तेल से भरा सींग उठाया और उस विशेष तेल को यिश्नै के सबसे छोटे पुत्र के सिर पर उसके भाईयों के सामने डाल दिया। उस दिन से यहोवा की आत्मा दाऊद पर तीव्रता से आती रही। तब शमूएल रामा को लौट गया।

दुष्टात्मा का शाऊल को परेशान करना

¹⁴यहोवा की आत्मा ने शाऊल को त्याग दिया। तब यहोवा ने शाऊल पर एक दुष्टात्मा* भेजी। उसने उसे बहुत परेशान किया।¹⁵सेवकों ने शाऊल से कहा, “परमेश्वर के द्वारा भेजी एक दुष्टात्मा तुमको परेशान कर रही है।¹⁶हम लोगों को आदेश दो कि हम लोग किसी की खोज करो जो वीणा बजायेगा। यदि दुष्टात्मा यहोवा के यहाँ से तुम्हारे ऊपर आई है तो जब वह व्यक्ति वीणा बजायेगा तब वह दुष्टात्मा तुमको अकेला छोड़ देगी और तुम स्वस्थ अनुभव करोगे।”

¹⁷अतः शाऊल ने अपने सेवकों से कहा, “ऐसे व्यक्ति की खोज करो जो वीणा अच्छी बजाता है और उसे मेरे पास लाओ।”

¹⁸सेवकों में से एक ने कहा, “बेतलेहेम में रहने वाला यिश्नै नाम का एक व्यक्ति है। मैंने यिश्नै के पुत्र को देखा है। वह जानता है कि वीणा कैसे बजाई जाती है। वह एक वीर व्यक्ति भी है और अच्छी प्रकार लड़ता है। वह जागरूक है। वह सुन्दर है और यहोवा उसके साथ है।”

¹⁹इसलिये शाऊल ने यिश्नै के पास दूत भेजा। उन्होंने यिश्नै से वह कहा जो शाऊल ने कहा था। “तुम्हारा पुत्र दाऊद नाम का है। वह तुम्हारी भेड़ों की रखवाली करता है। उसे मेरे पास भेजो।”

सुनहरेबालों वाला अथवा “पीत-रक्त रंग का” हिब्रू शब्द का अर्थ “लाल” है।

दुष्टात्मा हिब्रू भाषा के जिस शब्द का अनुवाद ‘दुष्टात्मा’ किया जाता है कुछ सन्दर्भों में ‘पाप-आत्मा’ या ‘पाप को प्रेरित करने वाली आत्मा’ के बजाय इसका अर्थ ‘कष्ट देने वाली आत्मा’ या ‘दण्ड देने वाली आत्मा’ भी हो सकता है।

²⁰फिर यिश्नै ने शाऊल को भेंट करने के लिये कुछ चीज़ें तैयार की। यिश्नै ने एक गधा, कुछ रोटियाँ और एक मशक दाखमधु और एक बकरी का बच्चा लिया। यिश्नै ने वे चीज़ें दाऊद को दी, और उसे शाऊल के पास भेज दिया।²¹इस प्रकार दाऊद शाऊल के पास गया और उसके सामने खड़ा हुआ। शाऊल ने दाऊद से बहुत स्नेह किया। फिर दाऊद ने शाऊल को अपना शस्त्रवाहक बना लिया।²²शाऊल ने यिश्नै के पास सूचना भेजी, “दाऊद को मेरे पास रहने और मेरी सेवा करने दो। वह मुझे बहुत पसन्द करता है।”

²³जब कभी परमेश्वर की ओर से आत्मा शाऊल पर आती, तो दाऊद अपनी वीणा उठाता और उसे बजाने लगता। दुष्ट आत्मा शाऊल को छोड़ देती और वह स्वस्थ अनुभव करने लगता।

गोलियत का इम्राएल को चुनौती देना

17 पलिशित्यों ने अपनी सेना युद्ध के लिये इकट्ठी की। वे यहूदा स्थित सोको में युद्ध के लिए एकत्र हुए। उनका डेरा सोको और अजेका के बीच एपेसदम्मी नामक नगर में था।

²शाऊल और इम्राएली सैनिक भी वहाँ एक साथ एकत्रित हुए। उनका डेरा एला की घाटी में था। शाऊल के सैनिक मोर्चा लगाये पलिशित्यों से युद्ध करने के लिये तैयार थे।³पलिशती एक पहाड़ी पर थे और इम्राएली दूसरी पर। घाटी इन दोनों पहाड़ियों के बीच में थी।

⁴पलिशित्यों में एक गोलियत नाम का अजेय योद्धा था। गोलियत गत का था। गोलियत लगभग नौ फीट ऊँचा था। गोलियत पलिशती डेरे से बाहर आया।⁵उसके सिर पर काँसे का टोप था। उसने पट्टीदार कवच का कोट पहन रखा था। वह कवच काँसे का बना था और इसका तौल लगभग एक सौ पच्चीस पौंड* था।⁶गोलियत ने अपने पैरों में काँसे के रक्षा कवच पहने थे। उसके पास काँसे का भाला था जो उसकी पीठ पर बंधा था।⁷गोलियत के भाले का फल जुलाहे की छड़ की तरह था। भाले की फल की तोल पन्द्रह पौंड थी। गोलियत का सहायक गोलियत की ढाल को लिये हुए उसके आगे-आगे चल रहा था।

एक सौ पच्चीस पौंड शाब्दिक “पाँच हजार शेकेल।”

१गोलियत बाहर निकला और उसने इम्राएली सैनिकों को जोर से पुकार कर कहा, “तुम्हारे सभी सैनिक युद्ध के लिये मोर्चा क्यों लगाये हुए हैं? तुम शाऊल के सेवक हो। मैं एक पलिशती हूँ। इसलिये किसी एक व्यक्ति को चुनों और उसे मुझसे लड़ने को भेजो। २यदि वह व्यक्ति मुझे मार डालता है तो हम पलिशती तुम्हारे दास हो जाएंगे। किन्तु यदि मैं उसे जीत लूँ और तुम्हारे व्यक्ति को मार डालूँ तो तुम हमारे दास हो जाना। तब तुम हमारी सेवा करोगे!”

१०पलिशती ने यह भी कहा, “आज मैं खड़ा हूँ और इम्राएल की सेना का मजाक उड़ा रहा हूँ। मुझे अपने में से एक के साथ लड़ने दो!”

११शाऊल और इम्राएली सैनिकों ने जो गोलियत कहा था, उसे सुना और वे बहुत भयभीत हो उठे।

दाऊद का युद्ध क्षेत्र को जाना

१२दाऊद यिशै का पुत्र था। यिशै एप्राती परिवार के यहूदा बेतलेहेम से था। यिशै के आठ पुत्र थे। शाऊल के समय में यिशै एक बड़ा आदमी था। १३यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के साथ युद्ध में गये थे। प्रथम पुत्र एलीआब था। दूसरा पुत्र अबीनादाब था और तीसरा पुत्र शम्मा था। १४दाऊद सबसे छोटा पुत्र था। तीनों पुत्र शाऊल की सेना में थे। १५किन्तु दाऊद कभी-कभी बेतलेहेम में अपने पिता की भेड़ों की रखवाली के लिये शाऊल के पास से चला जाता था।

१६पलिशती गोलियत हर एक प्रातः एवं सन्ध्या को बाहर आता था और इम्राएल की सेना के सामने खड़ा हो जाता था। गोलियत ने चालीस दिन तक इस प्रकार इम्राएल का मजाक उड़ाया।

१७एक दिन यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, “पके अन्न की टोकरी और इन दस रोटियों को डेरे में अपने भाईयों के पास ले जाओ। १८पनीर की इन दस पिंडियों को भी एक हजार सैनिकों वाली अपने भाई की टुकड़ी के संचालक अधिकारी के लिये ले जाओ। देखो कि तुम्हारे भाई कैसे हैं। कुछ ऐसा लाओ जिससे मुझे पता चले कि तुम्हारे भाई ठीक-ठाक हैं। १९तुम्हारे भाई शाऊल के साथ हैं और इम्राएल के सारे सैनिक एला घाटी में हैं। वे पलिशतियों के विरुद्ध लड़ रहे हैं।”

२०सवरे तड़के ही दाऊद, ने भेड़ों की रखवाली दूसरे गड़रिये को सौंपी। दाऊद ने भोजन लिया और वहाँ के लिए चल पड़ा जहाँ के लिये यिशै ने कहा था। दाऊद अपनी गाड़ी को डेरे में ले गया। उस समय सैनिक लड़ाई में अपने मोर्चे संभालने जा रहे थे जब दाऊद वहाँ पहुँचा। सैनिक अपना युद्ध उद्घोष करने लगे। २१इम्राएली और पलिशती अपने पुरुषों को युद्ध में एक-दूसरे से भिड़ने के लिये इकट्ठा कर रहे थे।

२२दाऊद ने भोजन और चीजों को उस व्यक्ति के पास छोड़ा जो सामग्री का वितरण करता था। दाऊद दौड़ कर उस स्थान पर पहुँचा जहाँ इम्राएली सैनिक थे। दाऊद ने अपने भाईयों के विषय में पूछा। २३दाऊद ने अपने भाईयों के साथ बात करनी आरम्भ की।

उसी समय वह पलिशती वीर योद्धा जिसका नाम गोलियत था और जो गत का निवासी था, पलिशती सेना से बाहर आया। पहले की तरह गोलियत ने इम्राएल के विरुद्ध वही बातें चिल्लाकर कहीं। २४इम्राएली सैनिकों ने गोलियत को देखा और वे भाग खड़े हुए। वे सभी उससे भयभीत थे।

२५इम्राएली व्यक्तियों में से एक ने कहा, “अरे लोगों, तुममें से किसी ने उसे देखा है! उसे देखो! वह गोलियत आ रहा है जो बार-बार इम्राएल का मजाक उड़ाता है। जो कोई उस व्यक्ति को मार देगा, धनी हो जायेगा! राजा शाऊल उसे बहुत धन देगा। शाऊल अपनी पुत्री का विवाह भी उस व्यक्ति से कर देगा, जो गोलियत को मारेगा और शाऊल उस व्यक्ति के परिवार को इम्राएल में स्वतन्त्र कर देगा।”

२६दाऊद ने समीप खड़े आदमी से पूछा, “उसने क्या कहा? इस पलिशती को मारने और इम्राएल के इस अपमान को दूर करने का पुरस्कार क्या है? अन्ततः यह गोलियत है ही क्या? यह बस एक विदेशी मात्र है। गोलियत एक पलिशती से अधिक कुछ नहीं। वह क्यों सोचता है कि वह साक्षात् परमेश्वर की सेना के विरुद्ध बोल सकता है?”

२७इसलिए इम्राएलियों ने गोलियत को मारने के लिये पुरस्कार के बारे में बताया। २८दाऊद के बड़े भाई एलीआब ने दाऊद को सैनिकों से बातें करते सुना। एलीआब दाऊद पर क्रोधित हुआ। एलीआब ने दाऊद से पूछा, “तुम यहाँ क्यों आये? मरुभूमि में उन थोड़ी सी भेड़ों को किस के पास छोड़कर आये हो? मैं जानता हूँ कि तुम यहाँ क्यों

आये हो! तुम वह करना नहीं चाहते जो तुमसे करने को कहा गया था। तुम केवल यहाँ युद्ध देखने के लिये आना चाहते थे!”

²⁹दाऊद ने कहा, “ऐसा मैंने क्या किया है? मैंने कोई गलती नहीं की! मैं केवल बातें कर रहा था।” ³⁰दाऊद दूसरे लोगों की तरफ मुड़ा और उनसे वे ही प्रश्न किये। उन्होंने दाऊद को वे ही पहले जैसे उत्तर दिये।

³¹कुछ व्यक्तियों ने दाऊद को बातें करते सुना। उन्होंने दाऊद के बारे में शाऊल से कहा। शाऊल ने आदेश दिया कि वे दाऊद को उसके पास लाएं।

³²दाऊद ने शाऊल से कहा, “किसी व्यक्ति को उसके कारण हतोत्साहित मत होने दो। मैं आपका सेवक हूँ। मैं इस पलिशती से लड़ने जाऊँगा।”

³³शाऊल ने उत्तर दिया, “तुम नहीं जा सकते और इस पलिशती गोलियत से नहीं लड़ सकते। तुम सैनिक भी नहीं हो! तुम अभी बच्चे हो और गोलियत जब बच्चा था, तभी से युद्धों में लड़ रहा है।”

³⁴किन्तु दाऊद ने शाऊल से कहा, “मैं आपका सेवक हूँ और मैं अपने पिता की भेड़ों की रखवाली भी करता रहा हूँ। यदि कोई शेर या रीछ आता और झुंड से किसी भेड़ को उठा ले जाता। ³⁵तो मैं उसका पीछा करता था। मैं उस जंगली जानवर पर आक्रमण करता था और उसके मुँह से भेड़ को बचा लेता था और उससे युद्ध करता था तथा उसे मार डालता था। ³⁶मैंने एक शेर और एक रीछ को मार डाला है। मैं उस विदेशी गोलियत को कैसे ही मार डालूँगा। गोलियत मरेगा, क्योंकि उसने साक्षात् परमेश्वर की सेना का मजाक उड़ाया है। ³⁷यहोवा ने मुझे शेर और रीछ से बचाया है। यहोवा इस पलिशती गोलियत से भी मेरी रक्षा करेगा।”

शाऊल ने दाऊद से कहा, “जाओ यहोवा तुम्हारे साथ हो।” ³⁸शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहनाये। शाऊल ने एक कँसे का टोप दाऊद के सिर पर रखा और उसके शरीर पर कवच पहनाया। ³⁹दाऊद ने तलवार ली और चारों ओर चलने का प्रयत्न किया। इस प्रकार दाऊद ने शाऊल की वर्दी को पहनने का प्रयत्न किया। किन्तु दाऊद को उन भारी चीजों को पहनने का अभ्यास नहीं था।

तुम सैनिक ... हो या “तुम केवल लड़के हो।” हिब्रू में प्रायः “लड़का” शब्द का अर्थ “सेवक” है या सैनिक का “शस्त्रवाहक” है।

दाऊद ने शाऊल से कहा, “मैं इन चीजों के साथ नहीं लड़ सकता। मेरा अभ्यास इनके लिये नहीं है।” इसलिये दाऊद ने उन सब को उतार दिया। ⁴⁰दाऊद ने अपनी छड़ी अपने हाथों में ली। घाटी से दाऊद ने पाँच चिकने पत्थर चुने। उसने पाँचों पत्थरों को अपने गड़रिये वाले थैले में रखा। उसने अपना गोफन (गुलेल) अपने हाथों में लिया और वह पलिशती (गोलियत) से मिलने चल पड़ा।

दाऊद, गोलियत को मार डालता है

⁴¹पलिशती (गोलियत) धीरे-धीरे दाऊद के समीप और समीपतर होता गया। गोलियत का सहायक उसकी ढाल लेकर उसके आगे चल रहा था। ⁴²गोलियत ने दाऊद को देखा और हँसा। गोलियत ने देखा कि दाऊद सैनिक नहीं है। वह तो केवल सुनहरे बालों वाला युवक है। ⁴³गोलियत ने दाऊद से कहा, “यह छड़ी किस लिये है? क्या तुम कुत्ते की तरह मेरा पीछा करके मुझे भगाने आये हो?” तब गोलियत ने अपने देवताओं का नाम लेकर दाऊद के विरुद्ध अपशब्द कहे। ⁴⁴गोलियत ने दाऊद से कहा, “यहाँ आओ, मैं तुम्हारे शरीर को पक्षियों और पशुओं को खिला दूँगा।”

⁴⁵दाऊद ने पलिशती (गोलियत) से कहा, “तुम मेरे पास तलवार, बर्छ और भाला चलाने आये हो। किन्तु मैं तुम्हारे पास इम्राएल की सेना के परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा के नाम पर आया हूँ। तुमने उसके विरुद्ध बुरी बातें कहीं हैं। ⁴⁶आज यहोवा तुमको मेरे द्वारा पराजित कराएगा। मैं तुमको मार डालूँगा। आज मैं तुम्हारा सिर काट डालूँगा और तुम्हारे शरीर को पक्षियों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। हम लोग अन्य पलिशतियों के साथ भी यही करेंगे। तब सारा संसार जानेगा कि इम्राएल में परमेश्वर है! ⁴⁷यहाँ इकट्ठे सभी लोग जानेंगे कि लोगों की रक्षा के लिये यहोवा को तलवार और भाले की आवश्यकता नहीं। युद्ध यहोवा का है और यहोवा तुम सभी पलिशतियों को हराने में हमारी सहायता करेगा।”

⁴⁸पलिशती (गोलियत) दाऊद पर आक्रमण करने उसके पास आया। दाऊद गोलियत से भिड़ने के लिये तेजी से दौड़ा। ⁴⁹दाऊद ने एक पत्थर अपने थैले से निकाला। उसने उसे अपने गोफन (गुलेल) पर चढ़ाया और उसे चला दिया। पत्थर गुलेल से उड़ा और उसने गोलियत के

माथे पर चोट की। पत्थर उसके सिर में गहरा घुस गया और गोलियत मुँह के बल गिर पड़ा।

⁵⁰इस प्रकार दाऊद ने एक गोफन और एक पत्थर से पलिशती को हरा दिया। उसने पलिशती पर चोट की और उसे मार डाला। दाऊद के पास कोई तलवार नहीं थी। ⁵¹इसलिए दाऊद दौड़ा और पलिशती की बगल में खड़ा हो गया। दाऊद ने गोलियत की तलवार उसकी म्यान से निकाली और उससे गोलियत का सिर काट डाला और इस तरह दाऊद ने पलिशती को मार डाला।

जब अन्य पलिशतियों ने देखा कि उनका वीर मारा गया तो वे मुड़े और भाग गए। ⁵²इम्राएल और यहूदा के सैनिकों ने जयघोष किया और पलिशतियों का पीछा करने लगे। इम्राएलियों ने लगातार गत की सीमा और एक्रोन के द्वार तक पलिशतियों का पीछा किया। उन्होंने अनेकों पलिशती मार गिराए। उनके शव शारैम सड़क पर गत और एक्रोन तक लगातार बिछ गए। ⁵³पलिशतियों का पीछा करने के बाद इम्राएली पलिशतियों के डेरे में लौटे। इम्राएली उस डेरे से बहुत सी चीज़ें ले गये।

⁵⁴दाऊद पलिशती का सिर यरूशलेम ले गया। दाऊद ने पलिशतियों के शस्त्रों को अपने पास अपने डेरे में रखा।

शाऊल दाऊद से डरने लगता है।

⁵⁵शाऊल ने दाऊद को गोलियत से लड़ने के लिये जाते देखा था। शाऊल ने सेनापति अब्नेर से बातें की, “अब्नेर, उस युवक का पिता कौन है?” अब्नेर ने उत्तर दिया, “महाराज, मैं शपथ खाकर कहता हूँ—मैं नहीं जानता।”

⁵⁶राजा शाऊल ने कहा, “पता लगाओ कि उस युवक का पिता कौन है?”

⁵⁷जब दाऊद गोलियत को मारने के बाद लौटा तो अब्नेर उसे शाऊल के पास लाया। दाऊद तब भी पलिशती का सिर हाथ में पकड़ा हुआ था।

⁵⁸शाऊल ने पूछा, “युवक तुम्हारा पिता कौन है?” दाऊद ने उत्तर दिया, “मैं आपके सेवक बेतलेहेम के यिश्शै का पुत्र हूँ।”

दाऊद और योनातान की घनिष्ठ मित्रता

18 दाऊद ने जब शाऊल से बात पूरी कर ली तब योनातान दाऊद का बहुत अभिन्न मित्र बन

गया। योनातान दाऊद से उतना ही प्रेम करने लगा जितना अपने से।

²शाऊल ने उस दिन के बाद से दाऊद को अपने पास रखा। शाऊल ने दाऊद को उसके घर पिता के पास नहीं जाने दिया।

³योनातान दाऊद से बहुत प्रेम करता था। योनातान ने दाऊद से एक सन्धि की। ⁴योनातान ने जो अंगरखा पहना हुआ था उसे उतारा और दाऊद को दे दिया। योनातान ने अपनी सारी वर्दी भी दाऊद को दे दी। योनातान ने अपना धनुष, अपनी तलवार और अपनी पेटी भी दाऊद को दी।

शाऊल का दाऊद की सफलता पर ध्यान देना

⁵शाऊल ने दाऊद को विभिन्न युद्धों में लड़ने भेजा। दाऊद बहुत सफल रहा। तब शाऊल ने उसे सैनिकों के ऊपर रख दिया। इससे सभी प्रसन्न हुये, यहाँ तक कि शाऊल के सभी अधिकारी भी इससे प्रसन्न हुए। ⁶दाऊद पलिशतियों के विरुद्ध लड़ने जाया करता था। युद्ध के बाद वह घर लौटता था। इम्राएल के सभी नगरों में स्त्रियाँ दाऊद के स्वागत में उससे मिलने आती थीं। वे हँसती नाचतीं और बोलक एवं सितार बजाती थीं। वे शाऊल के सामने ही ऐसा किया करती थीं। ⁷स्त्रियाँ गाती थीं, “शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा।

दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा।”

⁸स्त्रियों के इस गीत ने शाऊल को खिन्न कर दिया, वह बहुत क्रोधित हो गया। शाऊल ने सोचा, “स्त्रियाँ कहती हैं कि दाऊद ने दसियों हजार शत्रु मारे हैं और वे कहती हैं कि मैंने केवल हजार शत्रु ही मारे।” ⁹इसलिये उस समय से आगे शाऊल दाऊद पर निगाह रखने लगा।

शाऊल दाऊद से भयभीत हुआ

¹⁰अगले दिन, परमेश्वर के द्वारा भेजी एक दुष्टात्मा शाऊल पर बलपूर्वक हावी हो गई। शाऊल अपने घर में वहशी* हो गया। दाऊद ने पहले की तरह वीणा बजाई।

¹¹किन्तु शाऊल के हाथ में भाला था। शाऊल ने सोचा,

वहशी या “शाऊल ने भविष्यवाणी की” हिब्रू शब्द का अर्थ है कि उस व्यक्ति का नियन्त्रण अपने कहे और किये पर न रहा। प्रायः इसका अर्थ यह होता है कि परमेश्वर अन्य लोगों को विशेष संदेश देने के लिये उस व्यक्ति का उपयोग कर रहे है।

“मैं दाऊद को दीवार में टाँक दूँगा।” शाऊल ने दो बार भाला चलाया, किन्तु दाऊद बच गया।

¹²यहोवा दाऊद के साथ था और यहोवा ने शाऊल को त्याग दिया था। इसलिए शाऊल दाऊद से भयभीत था।¹³शाऊल ने दाऊद को अपने से दूर भेज दिया। शाऊल ने दाऊद को एक हजार सैनिकों का सेनापति बना दिया। दाऊद ने युद्ध में सैनिकों का नेतृत्व किया।¹⁴यहोवा दाऊद के साथ था। अतः दाऊद सर्वत्र सफल रहता था।¹⁵शाऊल ने देखा कि दाऊद को बहुत अधिक सफलता मिल रही है तो शाऊल दाऊद से और भी अधिक भयभीत रहने लगा।¹⁶किन्तु इज़्राएल और यहूदा के सभी लोग दाऊद से प्रेम करते थे। वे उससे प्रेम इसलिये करते थे क्योंकि वह युद्ध में उनका संचालन करता था और उनके लिये लड़ता था।

शाऊल की अपनी बेटी से दाऊद के विवाह की योजना

¹⁷शाऊल दाऊद को मार डालना चाहता था। शाऊल ने दाऊद को धोखा देने का एक उपाय सोचा। शाऊल ने दाऊद से कहा, “यह मेरी सबसे बड़ी पुत्री मेरब है। मैं तुम्हें इससे विवाह करने दूँगा। तब तुम शक्तिशाली योद्धा हो जाओगे। तुम हमारे पुत्र के समान होओगे। तब तुम जाना और यहोवा के युद्धों को लड़ना।” यह एक चाल थी। शाऊल सचमुच अब यह सोच रहा था, “इस प्रकार दाऊद को मुझे मारना नहीं पड़ेगा। मैं पलिशतियों से उसे अपने लिए मरवा दूँगा।”

¹⁸किन्तु दाऊद ने कहा, “मैं किसी महत्वपूर्ण परिवार से नहीं हूँ और मेरी हस्ती ही क्या है? मैं एक राजा की पुत्री के साथ विवाह नहीं कर सकता हूँ।”

¹⁹फिर जब शाऊल की पुत्री मेरब का दाऊद के साथ विवाह का समय आया तब शाऊल ने महोलाई अद्रीएल से उसका विवाह कर दिया।

²⁰शाऊल की दूसरी पुत्री मीकल दाऊद से प्रेम करती थी। लोगों ने शाऊल से कहा कि मीकल दाऊद से प्रेम करती है। इससे शाऊल को प्रसन्नता हुई।²¹शाऊल ने सोचा, “मैं मीकल का उपयोग दाऊद को फँसाने के लिये करूँगा। मैं मीकल को दाऊद से विवाह करने दूँगा और तब मैं पलिशतियों को इसे मार डालने दूँगा।” अतः शाऊल ने दाऊद से दूसरी बार कहा, “आज तुम मेरी पुत्री से विवाह कर सकते हो।”

²²शाऊल ने अपने अधिकारियों को आदेश दिया। उसने उनसे कहा, “दाऊद से अकेले में बातें करो। कहो, ‘देखो, राजा तुमको पसन्द करता है। उसके अधिकारी तुमको पसन्द करते हैं। तुम्हें उसकी पुत्री से विवाह कर लेना चाहिये।’”

²³शाऊल के अधिकारियों ने वे बात दाऊद से कही। किन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, “क्या तुम लोग समझते हो कि राजा का दामाद बनना सरल है? मेरे पास इतना धन नहीं कि राजा की पुत्री के लिये दे सकूँ। मैं तो एक साधारण गरीब व्यक्ति हूँ।”

²⁴शाऊल के अधिकारियों ने शाऊल को वह सब बताया जो दाऊद ने कहा था।²⁵ शाऊल ने उनसे कहा, “दाऊद से यह कहो, ‘दाऊद, राजा यह नहीं चाहता कि तुम उसकी पुत्री के लिये धन दो! * शाऊल अपने शत्रुओं से बदला लेना चाहता है। इसलिए विवाह करने के लिये कीमत के रूप में केवल सौ पलिशतियों की खलडियाँ हैं।’” यह शाऊल की गुप्त योजना थी। शाऊल ने सोचा कि पलिशती इस प्रकार दाऊद को मार डालेंगे।

²⁶शाऊल के अधिकारियों ने दाऊद से ये बातें कहीं। दाऊद राजा का दामाद बनना चाहता था, इसलिए उसने तुरन्त ही कुछ कर दिखाया।²⁷दाऊद और उसके व्यक्ति पलिशतियों से लड़ने गये। उन्होंने दो सौ * पलिशती मार डाले। दाऊद ने इनके खलडियों को लिया और शाऊल को दे दिये। दाऊद ने यह इसलिये किया क्योंकि वह राजा का दामाद बनना चाहता था। शाऊल ने दाऊद को अपनी पुत्री मीकल से विवाह करने दिया।²⁸शाऊल ने देखा कि यहोवा दाऊद के साथ था। किन्तु शाऊल ने यह भी ध्यान में रखा कि उसकी पुत्री मीकल दाऊद को प्यार करती है।²⁹ इसलिये शाऊल दाऊद से और भी अधिक भयभीत हुआ। शाऊल उस पूरे समय दाऊद के विरुद्ध रहा।

³⁰इज़्राएलियों के विरुद्ध लड़ने के लिये पलिशती सेनापति बाहर निकलते रहे। किन्तु हर बार दाऊद ने उनको हराया। दाऊद शाऊल के सभी अधिकारियों में सबसे अधिक सफल था सो दाऊद प्रसिद्ध हो गया।

उसकी पुत्री के लिये धन बाइबल के समय में जब कोई व्यक्ति विवाह करता था तो वधू के पिता को कुछ अवश्य देता था।

दो सौ प्राचीन ग्रीक अनुवाद में सौ है।

योनातान का दाऊद की सहायता करना

19 शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने अधिकारियों से दाऊद को मार डालने के लिये कहा। किन्तु योनातान दाऊद को बहुत चाहता था। ²⁻³योनातान ने दाऊद को सावधान किया, “सावधान रहो! शाऊल तुमको मार डालने के अवसर की तलाश में है। सवेरे मैदान में जाकर छिप जाओ। मैं अपने पिता के साथ मैदान में जाऊँगा। हम मैदान में वहाँ खड़े रहेंगे जहाँ तुम छिपे होगे। मैं तुम्हारे बारे में अपने पिता से बातें करूँगा। तब जो मुझे ज्ञात होगा मैं तुमको बताऊँगा।”

⁴योनातान ने अपने पिता शाऊल से बातें कीं। योनातान ने दाऊद के बारे में अच्छी बातें कहीं। योनातान ने कहा, “आप राजा हैं। दाऊद आपका सेवक है। दाऊद ने आपको कोई हानि नहीं पहुँचाई है। इसलिए उसके साथ कुछ बुरा न करें। दाऊद सदा आपके प्रति अच्छा रहा है। ⁵दाऊद अपने जीवन पर खेला था जब उसने पलिशती (गोलियत) को मारा था। यहोवा ने सारे इम्राएल के लिये एक बड़ी विजय प्राप्त की थी। आपने उसे देखा और आप उस पर बड़े प्रसन्न थे। आप दाऊद को हानि क्यों पहुँचाना चाहते हैं? वह निरपराध है। उसे मार डालने का कोई कारण नहीं है।”

⁶शाऊल ने योनातान की बात सुनी। शाऊल ने प्रतिज्ञा की। शाऊल ने कहा, “यहोवा के अस्तित्व के अटल सत्य की तरह, दाऊद भी मारा नहीं जाएगा।”

⁷अतः योनातान ने दाऊद को बुलाया। तब उसने दाऊद से वह सब कहा जो कहा गया था। तब योनातान, दाऊद को शाऊल के पास लाया। इस प्रकार शाऊल के साथ दाऊद पहले की तरह हो गया।

शाऊल, दाऊद को मारने का फिर प्रयत्न करता है

⁸युद्ध फिर आरम्भ हुआ और दाऊद पलिशतियों से युद्ध करने गया। उसने पलिशतियों को हराया और वे उसके आगे भाग खड़े हुए। ⁹किन्तु यहोवा द्वारा शाऊल पर भेजी दुष्टात्मा उतरी। शाऊल अपने घर में बैठा था। शाऊल के हाथ में उसका भाला था। दाऊद वीणा बजा रहा था। ¹⁰शाऊल ने अपने भाले को दाऊद के शरीर पर चला कर उसे दीवार पर टाँक देने का प्रयत्न किया। दाऊद भाले के रास्ते से कूद कर बच निकला और

भाला दीवार से टकरा कर रह गया। अतः उसी रात दाऊद वहाँ से भाग निकला।

¹¹शाऊल ने लोगों को दाऊद के घर भेजा। लोगों ने दाऊद के घर पर निगरानी रखी। वे रात भर वहीं ठहरे। वे सवेरे दाऊद को मार डालने की प्रतीक्षा कर रहे थे। किन्तु उसकी पत्नी मीकल ने उसे सावधान कर दिया। उसने कहा, “तुम्हें आज की रात भाग निकलना चाहिये और अपने जीवन की रक्षा करनी चाहिए। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो कल मार दिये जाओगे।” ¹²तब मीकल ने एक खिड़की से उसे नीचे उतार दिया। दाऊद बच गया और वहाँ से भाग निकला। ¹³मीकल ने अपने पारिवारिक देवता की मूर्ति को लिया और उसे बिस्तर पर लिटा दिया। मीकल ने उस मूर्ति पर कपड़े डाल दिये। उसने उसके सिर पर बकरी के बाल भी लगा दिये।

¹⁴शाऊल ने दाऊद को बन्दी बनाने के लिये दूत भेजे। किन्तु मीकल ने कहा, “दाऊद बीमार है।”

¹⁵सो वे लोग वहाँ से चले गये और उन्होंने शाऊल से जाकर यह बता दिया, किन्तु उसने दूतों को दाऊद को देखने के लिये वापस भेजा। शाऊल ने इन लोगों से कहा, “दाऊद को मेरे पास लाओ। यदि आवश्यकता पड़े तो उसे अपने बिस्तर पर लेटे हुये ही उठा लाओ। मैं उसे मार डालूँगा।”

¹⁶सो दूत फिर दाऊद के घर गये। वे दाऊद को पकड़ने भीतर गये, किन्तु वहाँ उन्होंने देखा कि बिस्तर पर केवल एक मूर्ति थी। उन्होंने देखा कि उसके बाल तो बस बकरी के बाल थे।

¹⁷शाऊल ने मीकल से कहा, “तुमने मुझे इस प्रकार धोखा क्यों दिया? तुमने मेरे शत्रु को भाग जाने दिया। दाऊद भाग गया है! मीकल ने शाऊल को उत्तर दिया, “दाऊद ने मुझे से कहा था कि वह मुझे मार डालेगा यदि मैं भाग जाने में उसकी सहायता नहीं करूँगा।”

दाऊद का रामा के डेरों में जाना

¹⁸दाऊद बच निकला। दाऊद शमूएल के पास रामा में भागकर पहुँचा। दाऊद ने शमूएल से वह सब बताया जो शाऊल ने उसके साथ किया था। तब दाऊद और शमूएल उन डेरों में गये जहाँ भविष्यवक्ता रहते थे। दाऊद वहीं रुका।

¹⁹शाऊल को पता चला कि दाऊद रामा के निकट डेरों में था। ²⁰शाऊल ने दाऊद को बन्दी बनाने के लिये लोगों को भेजा। किन्तु जब वे डेरों में आए तो उस समय नबियों का एक समूह भविष्यवाणी कर रहा था। शमूएल समूह का मार्ग दर्शन करता हुआ वहाँ खड़ा था। परमेश्वर की आत्मा शाऊल के दूतों पर उतरी और वे भविष्यवाणी करने लगे।

²¹शाऊल ने इस बारे में सुना, अतः उसने वहाँ अन्य दूत भेजे। किन्तु वे भी भविष्यवाणी करने लगे। इसलिये शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे और वे भी भविष्यवाणी करने लगे। ²²अन्ततः, शाऊल स्वयं रामा पहुँचा। शाऊल सेकू में खलिहान के समीप एक बड़े कुँए के पास आया। शाऊल ने पूछा, “शमूएल और दाऊद कहाँ है?” लोगों ने उत्तर दिया, “रामा के निकट डेरे में।”

²³तब शाऊल रामा के निकट डेरे में गया। परमेश्वर की आत्मा शाऊल पर भी उतरी और शाऊल ने भविष्यवाणी करनी आरम्भ की। शाऊल रामा के डेरे तक अधिकाधिक भविष्यवाणीयों लगातार करता गया। ²⁴तब शाऊल ने अपने वस्त्र उतारे। इस प्रकार शाऊल भी शमूएल के सामने भविष्यवाणी कर रहा था। शाऊल वहाँ सारे दिन और सारी रात नंगा लेटा रहा।

यही कारण है कि लोग कहते हैं, “क्या शाऊल नबियों में से कोई एक है?”

दाऊद और योनातान एक सन्धि करते हैं

20 दाऊद रामा के निकट के डेरे से भाग गया। दाऊद योनातान के पास पहुँचा और उससे पूछा, “मैंने कौन सी गलती की है? मेरा अपराध क्या है? तुम्हारा पिता मुझे मारने का प्रयत्न क्यों कर रहा है?”

²योनातान ने उत्तर दिया, “मेरे पिता तुमको मारने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। मेरे पिता मुझसे पहले कहे बिना कुछ नहीं करते। यह महत्वपूर्ण नहीं कि वह बात बहुत महत्वपूर्ण हो या तुच्छ, मेरे पिता सदा मुझे बताते हैं। मेरे पिता मुझसे यह बताने से क्यों इन्कार करेंगे कि वे तुमको मार डालना चाहते हैं? नहीं, यह सत्य नहीं है।”

³किन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, “तुम्हारे पिता अच्छी तरह जानते हैं कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ। तुम्हारे पिता ने अपने मन में यह सोचा है, ‘योनातान को इस विषय में जानकारी नहीं होनी चाहिये। यदि वह जानेगा तो दाऊद

से कह देगा।’ किन्तु जैसे यहोवा का होना सत्य है और तुम जीवित हो, उसी प्रकार यह भी सत्य है कि मैं मृत्यु के बहुत निकट हूँ।”

⁴योनातान ने दाऊद से कहा, “मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम मुझसे करवाना चाहो।”

⁵तब दाऊद ने कहा, “देखो, कल नया चाँद का महोत्सव* है और मुझे राजा के साथ भोजन करना है। किन्तु मुझे सन्ध्या तक मैदान में छिपे रहने दो। ⁶यदि तुम्हारे पिता को यह दिखाई दे कि मैं चला गया हूँ, तो उनसे कहो कि, ‘दाऊद अपने घर बेतलेहेम जाना चाहता था। उसका परिवार इस मासिक बलि के लिए स्वयं ही दावत कर रहा है। दाऊद ने मुझसे पूछा कि मैं उसे बेतलेहेम जाने और उसके परिवार से उसे मिलने दूँ? ⁷यदि तुम्हारे पिता कहते हैं, ‘बहुत अच्छा हुआ,’ तो मैं सुरक्षित हूँ। किन्तु यदि तुम्हारे पिता क्रोधित होते हैं तो समझो कि मेरा बुरा करना चाहते हैं। ⁸योनातान मुझ पर दया करो। मैं तुम्हारा सेवक हूँ। तुमने यहोवा के सामने मेरे साथ सन्धि की है। यदि मैं अपराधी हूँ तो तुम स्वयं मुझे मार सकते हो। किन्तु मुझे अपने पिता के पास मत ले जाओ।”

⁹योनातान ने उत्तर दिया, “नहीं, कभी नहीं। यदि मैं जान जाऊँगा कि मेरे पिता तुम्हारा बुरा करना चाहते हैं तो तुम्हें सावधान कर दूँगा।”

¹⁰दाऊद ने कहा, “यदि तुम्हारे पिता तुम्हें कठोरता से उत्तर देते हैं तो उसके बारे में मुझे कौन बताएगा?”

¹¹तब योनातान ने कहा, “आओ, हम लोग मैदान में चलें।” सो योनातान और दाऊद एक साथ मैदान में चले गए।

¹²योनातान ने दाऊद से कहा, “मैं इज़्राएल का परमेश्वर यहोवा के सामने यह प्रतिज्ञा करता हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं पता लगाऊँगा कि मेरे पिता तुम्हारे प्रति कैसा भाव रखते हैं। मैं पता लगाऊँगा कि वे तुम्हारे बारे में अच्छा भाव रखते हैं या नहीं। तब तीन दिन में, मैं तुम्हें मैदान में सूचना भेजूँगा। ¹³यदि मेरे पिता तुम पर चोट करना चाहते हैं तो मैं तुम्हें जानकारी दूँगा। मैं तुमको यहाँ से सुरक्षित

नया चाँद का महोत्सव यहूदी महीने का पहला दिन। यह विश्राम और उपासना के लिये विशेष दिन था। लोग एक साथ मिलते थे और मेलबलि में हिस्सा लेते थे जैसा कि लैव्य, 7:16-21 में वर्णित है।

जाने दूँगा। यहोवा मुझे दण्ड दे यदि मैं ऐसा न करूँ। यहोवा तुम्हारे साथ रहे जैसे वह मेरे पिता के साथ रहा है।¹⁴ जब तक मैं जीवित रहूँ मेरे ऊपर दया रखना और जब मैं मर जाऊँ तो¹⁵ मेरे परिवार पर दया करना बन्द न करना। यहोवा तुम्हारे सभी शत्रुओं को पृथ्वी पर से नष्ट कर देगा।¹⁶ यदि उस समय योनातान का परिवार दाऊद के परिवार से पृथक् किया जाना ही हो, तो उसे हो जाने देना। दाऊद के शत्रुओं को यहोवा दण्ड दे।”

¹⁷ तब योनातान ने दाऊद से कहा कि वह उसके प्रति प्रेम की प्रतिज्ञा को दुहराये। योनातान ने यह इसलिए किया क्योंकि वह दाऊद से उतना ही प्रेम करता था जितना अपने आप से।

¹⁸ योनातान ने दाऊद से कहा, “कल नया चाँद का उत्सव है। तुम्हारा आसन खाली रहेगा। इसलिए मेरे पिता समझ जायेंगे कि तुम चले गये हो।¹⁹ तीसरे दिन उसी स्थान पर जाओ जहाँ तुम इस परेशानी के प्रारम्भ होने के समय छिपे थे। उस पहाड़ी की बगल में प्रतीक्षा करो।²⁰ तीसरे दिन, मैं उस पहाड़ी पर ऐसे जाऊँगा जैसे मैं किसी लक्ष्य को बेध रहा हूँ। मैं कुछ बाणों को छोड़ूँगा।²¹ तब मैं, बाणों का पता लगाने के लिये, अपने शस्त्रवाहक लड़के से जाने के लिये कहूँगा। यदि सब कुछ ठीक होगा तो मैं लड़के से कहूँगा, ‘तुम बहुत दूर निकल गए हो! बाण मेरे करीब ही है। लौटो और उन्हें उठा लाओ।’ यदि मैं ऐसा कहूँ तो तुम छिपने के स्थान से बाहर आ सकते हो। मैं वचन देता हूँ कि जैसे यहोवा शाश्वत है वैसे ही तुम सुरक्षित हो। कोई भी खतरा नहीं है।²² किन्तु यदि खतरा होगा तो मैं लड़के से कहूँगा। ‘बाण बहुत दूर है, जाओ और उन्हें लाओ।’ यदि मैं ऐसा कहूँ तो तुम्हें चले जाना चाहिये। यहोवा तुम्हें दूर भेज रहा है।²³ तुम्हारे और मेरे बीच की इस सन्धि को याद रखो। यहोवा सदैव के लिये हमारा साक्षी है!”

²⁴ तब दाऊद मैदान में जा छिपा।

उत्सव में शाऊल के इरादे

नया चाँद के उत्सव का समय आया और राजा भोजन करने बैठा।²⁵ राजा दीवार के निकट वहीं बैठा जहाँ वह प्रायः बैठा करता था। योनातान शाऊल के दूसरी ओर सामने बैठा। अब्नेर शाऊल के बाद बैठा। किन्तु दाऊद का स्थान खाली था।²⁶ उस दिन शाऊल ने कुछ नहीं

कहा। उसने सोचा, “सम्भव है दाऊद को कुछ हुआ हो और वह शुद्ध* न हो।”

²⁷ अगले दिन, महीने के दूसरे दिन, दाऊद का स्थान फिर खाली था। तब शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से पूछा, “यिशै का पुत्र नया चाँद के उत्सव में कल या आज क्यों नहीं आया?”

²⁸ योनातान ने उत्तर दिया, “दाऊद ने मुझसे बेललेहेम जाने देने के लिये कहा था।²⁹ उसने कहा था, ‘मुझे जाने दो। मेरा परिवार बेललेहेम में एक बलि-भेंट कर रहा है। मेरे भाई ने वहाँ रहने का आदेश दिया है। अब यदि मैं तुम्हारा मित्र हूँ तो मुझे जाने दो और भाईयों से मिलने दो।’ यही कारण है कि दाऊद राजा की मेज पर नहीं आया है।”

³⁰ शाऊल योनातान पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने योनातान से कहा, “तुम उस एक दासी के पुत्र हो, जो आज्ञा पालन करने से इन्कार करती है और तुम ठीक उसी तरह के हो। मैं जानता हूँ कि तुम दाऊद के पक्ष में हो। तुम अपनी माँ और अपने लिये लज्जा का कारण हो।³¹ जब तक यिशै का पुत्र जीवित रहेगा तब तक तुम कभी राजा नहीं बनोगे, न तुम्हारा राज्य होगा। अब दाऊद को हमारे पास लाओ। वह एक मरा व्यक्ति है।”

³² योनातान ने अपने पिता से पूछा, “दाऊद को क्यों मार डाला जाना चाहिये? उसने क्या अपराध किया है?”

³³ किन्तु शाऊल ने अपना भाला योनातान पर चलाया और उसे मार डालने का प्रयत्न किया। अतः योनातान ने समझ लिया कि मेरा पिता दाऊद को निश्चित रूप से मार डालने का इच्छुक है।³⁴ योनातान क्रोधित हुआ और उसने मेज छोड़ दी। योनातान इतना घबरा गया और अपने पिता पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने दावत के दूसरे दिन कुछ भी भोजन करना अस्वीकार कर दिया। योनातान इसलिये क्रोधित हुआ क्योंकि शाऊल ने उसे अपमानित किया था और शाऊल दाऊद को मार डालना चाहता था।

दाऊद और योनातान का विदा लेना

³⁵ अगली सुबह योनातान मैदान में गया। वह दाऊद से मिलने गया, जैसा उन्होंने तय किया था। योनातान एक

शुद्ध “स्वीकार्य” पवित्र या परमेश्वर की उपासना में काम आने योग्य। देखें लैव्य. 11:15 जिसमें शुद्ध और अशुद्ध चीजों के विषय में पुराने नियम के नियम दिये गये हैं।

शस्त्रवाहक लड़के को अपने साथ लाया।³⁶ योनातान ने लड़के से कहा, “दौड़ो, और जो बाण मैं चलाता हूँ, उन्हें लाओ।” लड़के ने दौड़ना आरम्भ किया और योनातान ने उसके सिर के ऊपर से बाण चलाए।³⁷ लड़का उस स्थान को दौड़ा, जहाँ बाण गिरा था। किन्तु योनातान ने पुकारा, “बाण बहुत दूर है।”³⁸ तब योनातान जोर से चिल्लाया “जल्दी करो! उन्हें लाओ! वहाँ पर खड़े न रहो!” लड़के ने बाणों को उठाया और अपने स्वामी के पास वापस लाया।³⁹ लड़के को कुछ पता न चला कि हुआ क्या। केवल योनातान और दाऊद जान सके।⁴⁰ योनातान ने अपना धनुष बाण लड़के को दिया। तब योनातान ने लड़के से कहा, “नगर को लौट जाओ।”

⁴¹ लड़का चल पड़ा, और दाऊद अपने उस छिपने के स्थान से बाहर आया जो पहाड़ी के दूसरी ओर था। दाऊद ने भूमि तक अपने सिर को झुकाकर योनातान के सामने प्रणाम किया। दाऊद तीन बार झुका। तब दाऊद और योनातान ने एक दूसरे का चुम्बन लिया। वे दोनों एक साथ रोये, किन्तु दाऊद योनातान से अधिक रोया।

⁴² योनातान ने दाऊद से कहा, “शान्तिपूर्वक जाओ। हम लोगों ने यहोवा का नाम लेकर मित्र होने की प्रतिज्ञा की थी। हम लोगों ने कहा था कि यहोवा हम लोगों और हमारे वंशजों के बीच सदा साक्षी रहेगा।”

दाऊद का याजक अहीमेलेक से मिलने जाना

21 तब दाऊद चला गया और योनातान नगर को लौट गया।² दाऊद नोब नामक नगर में याजक अहीमेलेक से मिलने गया।

अहीमेलेक दाऊद से मिलने बाहर गया। अहीमेलेक भय से काँप रहा था। अहीमेलेक ने दाऊद से पूछा, “तुम अकेले क्यों हो? तुम्हारे साथ कोई व्यक्ति क्यों नहीं है?”

³ दाऊद ने अहीमेलेक को उत्तर दिया, “राजा ने मुझको विशेष आदेश दिया है। उसने मुझसे कहा है, ‘इस उद्देश्य को किसी को न जानने दो। कोई भी व्यक्ति उसे न जाने जिसे मैंने तुम्हें करने को कहा है।’ मैंने अपने व्यक्तियों से कह दिया है कि वे कहीं मिलें।⁴ अब यह बताओ कि तुम्हारे पास भोजन के लिये क्या है? मुझे पाँच रोटियाँ या जो कुछ खाने को है, दो।”

⁵ याजक ने दाऊद से कहा, “मेरे पास यहाँ सामान्य रोटियाँ नहीं हैं। किन्तु मेरे पास कुछ पवित्र रोटियाँ* तो हैं। तुम्हारे अधिकारी उसे खा सकते हैं, यदि उन्होंने किसी स्त्री के साथ इन दिनों शारीरिक सम्बन्ध न किया हो।”*

⁶ दाऊद ने याजक को उत्तर दिया, “हम लोग इन दिनों किसी स्त्री के साथ नहीं रहे हैं। हमारे व्यक्ति अपने शरीर को पवित्र रखते हैं जब कभी हम युद्ध करने जाते हैं, यहाँ तक कि सामान्य उद्देश्य के लिये जाने पर भी* और आज के लिए तो यह विशेष रूप से सच है क्योंकि हमारा काम अति विशिष्ट है।”

⁷ वहाँ पवित्र रोटियाँ के अतिरिक्त कोई रोटियाँ नहीं थी। अतः याजक ने दाऊद को वही रोटियाँ दी। यह वह रोटियाँ थीं जिसे याजक यहोवा के सामने पवित्र मेज पर रखते थे। वे हर एक दिन इस रोटियाँ को हटा लेते थे और उसकी जगह ताजी रोटियाँ रखते थे।

⁸ उस दिन शाऊल के अधिकारियों में से एक वहाँ था। वह एदोमी दोग था। दोग को वहाँ यहोवा के सामने रखा गया था।* दोग शाऊल के गड़ेरियों* का मुखिया था।

⁹ दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, “क्या तुम्हारे पास यहाँ कोई भाला या तलवार है? राजा का कार्य बहुत जरूरी है। मुझे शीघ्रता से जाना है और मैं अपनी तलवार या अन्य कोई शस्त्र नहीं ला सका हूँ।”

पवित्र रोटियाँ यह विशेष रोटियाँ होती थी जो पवित्र तम्बू में रखी जाती थी। इसे “दर्शनी रोटियाँ” या “उपस्थिति की रोटियाँ” भी कहते हैं। इसे केवल याजक ही खा सकते थे। देखें लैव्य. 24:5-9

किसी स्त्री ... हो यह व्यक्ति को अशुद्ध करने वाला था और ऐसा व्यक्ति परमेश्वर को भेंट में चढ़ाकर पवित्र बनाई गई किसी सामग्री को नहीं खा सकता था। देखें लैव्य. 7:21; 15:1-33

हमारे व्यक्ति ... पर भी देखें 2शमू 11:11 और व्यवस्था. 23:9-14 के नियम।

दोग ... गया था इसका अर्थ यह हो सकता है कि दोग परमेश्वर के लिये विशेष प्रतिज्ञा के एक भाग के रूप में वहाँ था या किसी अन्य धार्मिक कारण से वहाँ था। या इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह वहाँ इसलिये रोक़ा गया था कि उसने कोई अपराध किया था जैसे संयोगवश किसी को मार डालना। **गड़ेरिया** या दूत।

¹⁰याजक ने उत्तर दिया, “एक मात्र तलवार जो यहाँ है वह पलिशती (गोलियत) की है। यह वही तलवार है जिसे तुमने उससे तब लिया था जब तुमने उसे एला की घाटी में मारा था। वह तलवार एक कपड़े में लिपटी हुई एपोद के पीछे रखी है। यदि तुम चाहो तो उसे ले सकते हो।”

दाऊद ने कहा, “इसे मुझे दो। गोलियत की तलवार के समान कोई तलवार नहीं है।”

दाऊद का गत को जाना

¹¹उस दिन दाऊद शाऊल के यहाँ से भाग गया। दाऊद गत के राजा आकीश के पास गया। ¹²आकीश के अधिकारियों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कहा, “यह इम्राएल प्रदेश का राजा दाऊद है। यही वह व्यक्ति है जिसका गीत इम्राएली गाते हैं। वे नाचते हैं और यह गीत गाते हैं:

“शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा

दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा।”

¹³दाऊद को ये बातें याद थीं। दाऊद गत के राजा आकीश से बहुत भयभीत था। ¹⁴इसलिए दाऊद ने आकीश और उसके अधिकारियों के सामने अपने को विक्षिप्त दिखाने का बहाना किया। जब तक दाऊद उनके साथ रहा उसने विक्षिप्तों जैसा व्यवहार किया। वह द्वार के दरवाजों पर थूक देता था। वह अपने थूक को अपनी दाढ़ी पर गिरने देता था।

¹⁵आकीश ने अपने अधिकारियों से कहा, “इस व्यक्ति को देखो। यह तो विक्षिप्त है! तुम लोग इसे मेरे पास क्यों लाए हो?” ¹⁶मेरे पास तो वैसे ही बहुत से विक्षिप्त हैं। मैं तुम लोगों से यह नहीं चाहता कि तुम इस व्यक्ति को मेरे घर पर विक्षिप्त जैसा काम करने को लाओ। इस व्यक्ति को मेरे घर में फिर न आने देना।”

दाऊद का विभिन्न स्थानों पर जाना

22 दाऊद ने गत को छोड़ दिया। दाऊद अदुल्लाम की गुफा* में भाग गया। दाऊद के भाईयों और सम्बन्धियों ने सुना कि दाऊद अदुल्लाम में था। वे दाऊद को देखने वहाँ गए। ²बहुत से लोग दाऊद के साथ हो लिये। वे सभी लोग, जो किसी विपत्ति में थे या कर्ज में थे या असंतुष्ट थे, दाऊद के साथ हो लिए। दाऊद उनका

मुखिया बन गया। दाऊद के पास लगभग चार सौ पुरुष थे।

³दाऊद ने अदुल्लाम को छोड़ दिया और वह मोआब में स्थित मिस्या को चला गया। दाऊद ने मोआब के राजा से कहा, “कृपया मेरे माता-पिता को आने दें और अपने पास तब तक रहने दें जब तक मैं यह न समझ सकूँ कि परमेश्वर मेरे साथ क्या करने जा रहा है।” ⁴दाऊद ने अपने माता-पिता को मोआब के राजा के पास छोड़ा। दाऊद के माता-पिता मोआब के राजा के पास तब तक ठहरे जब तक दाऊद किले में रहा।

⁵किन्तु नबी गाद ने दाऊद से कहा, “गद्दी में मत ठहरो। यहूदा प्रदेश में जाओ।” इसलिये दाऊद वहाँ से चल पड़ा और हेरेत के जंगल में गया।

शाऊल का अहीमेलेक के परिवार को नष्ट करना

⁶शाऊल ने सुना कि लोग दाऊद और उसके लोगों के बारे में जान गए हैं। शाऊल गिबा में पहाड़ी पर एक पेड़ के नीचे बैठा था। शाऊल के हाथ में उसका भाला था। शाऊल के सभी अधिकारी उसके चारों ओर खड़े थे। ⁷शाऊल ने अपने उन अधिकारियों से कहा, जो उसके चारों ओर खड़े थे, “बिन्यामीन के लोगों सुनो! क्या तुम लोग समझते हो कि यिश्शै का पुत्र (दाऊद) तुम्हें खेत और अंगूरों के बाग देगा? क्या तुम समझते हो कि वह तुमको उन्नति देगा और तुम्हें एक हजार व्यक्तियों और एक सौ व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी बनाएगा। ⁸तुम लोग मेरे विरुद्ध षडयन्त्र रच रहे हो। तुमने गुप्त योजनारथे बनाई हैं। तुम में से किसी ने भी मेरे पुत्र योनातान के बारे में नहीं बताया है। तुम में से किसी ने भी यह नहीं बताया है कि उसने यिश्शै के पुत्र के साथ क्या सन्धि की है। तुम में से कोई भी मेरी परवाह नहीं करता। तुम में से किसी ने यह नहीं बताया कि मेरे पुत्र योनातान ने दाऊद को उकसाया है। योनातान ने मेरे सेवक दाऊद से कहा कि वह छिप जाए और मुझ पर आक्रमण करे और यह वही है जो दाऊद अब कर रहा है।”

⁹एदोमी दोग शाऊल के अधिकारियों के साथ खड़ा था। दोग ने कहा, “मैंने यिश्शै के पुत्र दाऊद को नोब में देखा है। दाऊद अहितूब के पुत्र अहीमेलेक से मिलने आया। ¹⁰अहीमेलेक ने यहोवा से दाऊद के लिये प्रार्थना की। अहीमेलेक ने दाऊद को भोजन भी दिया और

अहीमेलेक ने दाऊद को पलिशती (गोलियत) की तलवार भी दी।”

¹¹तब राजा शाऊल ने कुछ लोगों को आज्ञा दी कि वे याजक को उसके पास लेकर आएँ। शाऊल ने उनसे अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक और उसके सभी सम्बन्धियों को लाने को कहा। अहीमेलेक के सम्बन्धी नोब में याजक थे। वे सभी राजा के पास आए। ¹²शाऊल ने अहीमेलेक से कहा, “अहीतूब के पुत्र, अब सुन लो।” अहीमेलेक ने उत्तर दिया, “हाँ, महाराज।”

¹³शाऊल ने अहीमेलेक से कहा, “तुमने और यिश्शै के पुत्र (दाऊद) ने मेरे विरुद्ध गुप्त योजना क्यों बनाई? तुमने दाऊद को रोटी और तलवार दी! तुमने परमेश्वर से उसके लिये प्रार्थना की और अब सीधे, दाऊद मुझ पर आक्रमण करने की प्रतीक्षा कर रहा है!”

¹⁴अहीमेलेक ने उत्तर दिया, “दाऊद तुम्हारा बड़ा विश्वास पात्र है। तुम्हारे अधिकारियों में कोई उतना विश्वस्त नहीं है जितना दाऊद है। दाऊद तुम्हारा अपना दामाद है और दाऊद तुम्हारे अंगरक्षकों का नायक है। तुम्हारा अपना परिवार दाऊद का सम्मान करता है। ¹⁵वह पहली बार नहीं था, कि मैंने दाऊद के लिये परमेश्वर से प्रार्थना की। ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। मुझे या मेरे किसी सम्बन्धी को दोष मत लगाओ। हम तुम्हारे सेवक हैं। मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं है कि यह सब हो क्या रहा है?”

¹⁶किन्तु राजा ने कहा, “अहीमेलेक, तुम्हें और तुम्हारे सभी सम्बन्धियों को मरना है।” ¹⁷तब राजा ने अपने बगल में खड़े रक्षकों से कहा, “जाओ और यहोवा के याजकों को मार डालो। यह इसलिए करो क्योंकि वे भी दाऊद के पक्ष में हैं। वे जानते थे कि दाऊद भागा है, किन्तु उन्होंने मुझे बताया नहीं।” किन्तु राजा के अधिकारियों ने यहोवा के याजकों को मारने से इन्कार कर दिया।

¹⁸अतः राजा ने दोएग को आदेश दिया। शाऊल ने कहा, “दोएग, तुम जाओ और याजकों को मार डालो।” इसलिए एदोमी दोएग गया और उसने याजकों को मार डाला। उस दिन दोएग ने पचासी, सन के एपोद धारण करने वालों को मार डाला।

¹⁹नोब याजकों का नगर था। दोएग ने नोब के सभी लोगों को मार डाला। दोएग ने अपनी तलवार का उपयोग किया और उसने सभी पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों और छोटे

शिशुओं को भी मार डाला। दोएग ने उनकी गायों, खच्चरों और भेड़ों तक को मार डाला।

²⁰किन्तु एब्यातार वहाँ से बच निकला। एब्यातार अहीमेलेक का पुत्र था। अहीमेलेक अहीतूब का पुत्र था। एब्यातार बच निकला और दाऊद से मिल गया। ²¹एब्यातार ने दाऊद से कहा कि शाऊल ने यहोवा के याजकों को मार डाला है। ²²तब दाऊद ने एब्यातार से कहा, “मैंने एदोमी दोएग को उस दिन नोब में देखा था और मैं जानता था कि वह शाऊल से कहेगा। मैं तुम्हारे पिता के परिवार की मृत्यु के लिये उत्तरदायी हूँ। ²³जो व्यक्ति (शाऊल) तुमको मारना चाहता है वह मुझको भी मारना चाहता है। मेरे साथ ठहरो। डरो नहीं। तुम मेरे साथ सुरक्षित रहोगे।”

दाऊद कीला में

23 लोगों ने दाऊद से कहा, “देखो, पलिशती कीला के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं। वे खलिहानों से अन्न लूट रहे हैं।”

²दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं जाऊँ और इन पलिशतियों से लड़ूँ?” यहोवा ने दाऊद को उत्तर दिया, “जाओ और पलिशतियों पर आक्रमण करो। कीला को बचाओ।”

³किन्तु दाऊद के लोगों ने उससे कहा, “देखो, हम यहाँ यहूदा में हैं और हम भयभीत हैं। तनिक सोचो तो सही कि हम तब कितने भयभीत होंगे जब वहाँ जाएंगे जहाँ पलिशती सेना है।”

⁴दाऊद ने फिर यहोवा से पूछा। यहोवा ने दाऊद को उत्तर दिया, “कीला को जाओ। मैं तुम्हारी सहायता पलिशतियों को हराने में करूँगा।” ⁵इसलिये दाऊद और उसके लोग कीला को गये। दाऊद के लोग पलिशतियों से लड़े। दाऊद के लोगों ने पलिशतियों को हराया और उनकी गायें ले लीं। इस प्रकार दाऊद ने कीला के लोगों को बचाया। ⁶(जब एब्यातार दाऊद के पास भाग कर गया था तब एब्यातार अपने साथ एक एपोद ले गया था।)

⁷लोगों ने शाऊल से कहा कि अब दाऊद कीला में है। शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ने दाऊद को मुझे दे दिया है। दाऊद स्वयं जाल में फँस गया है। वह ऐसे नगर में गया है जिसके द्वार को बन्द करने के लिये दरवाजे और छेड़ें हैं।” ⁸शाऊल ने युद्ध के लिये अपनी सारी सेना को एक

साथ बुलाया। उन्होंने अपनी तैयारी कीला जाने और दाऊद तथा उसके लोगों पर आक्रमण के लिये की।

⁹दाऊद को पता लगा कि शाऊल उसके विरुद्ध योजना बना रहा है। दाऊद ने तब याजक एब्द्यातार से कहा, “एपोद लाओ।”

¹⁰दाऊद ने प्रार्थना की, “यहोवा इम्राएल के परमेश्वर, मैंने सुना है कि शाऊल कीला में आने और मेरे कारण इसे नष्ट करने की योजना बना रहा है। ¹¹क्या शाऊल कीला में आएगा? क्या कीला के लोग मुझे शाऊल को दे देंगे? यहोवा इम्राएल के परमेश्वर, मैं तेरा सेवक हूँ। कृपया मुझे बता।” यहोवा ने उत्तर दिया, “शाऊल आएगा।”

¹²दाऊद ने फिर पूछा, “क्या कीला के लोग मुझे और मेरे लोगों को शाऊल को दे देंगे।”

यहोवा ने उत्तर दिया, “वे ऐसा करेंगे।”

¹³इसलिये दाऊद और उसके लोगों ने कीला को छोड़ दिया। वहाँ लगभग छः सौ पुरुष थे जो दाऊद के साथ गए। दाऊद और उसके लोग एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते रहे। शाऊल को पता लग गया कि दाऊद कीला से बच निकला। इसलिए शाऊल उस नगर को नहीं गया।

शाऊल दाऊद का पीछा करता है

¹⁴दाऊद मरुभूमि में चला गया और वहाँ किलों* में ठहर गया। दाऊद जीप की मरुभूमि के पहाड़ी देश में भी गया। शाऊल प्रतिदिन दाऊद की खोज करता था, किन्तु यहोवा शाऊल को दाऊद को पकड़ने नहीं देता था।

¹⁵दाऊद जीप की मरुभूमि में होरेश में था। वह भयभीत था क्योंकि शाऊल उसे मारने आ रहा था।

¹⁶किन्तु शाऊल का पुत्र योनातान होरेश में दाऊद से मिलने गया। योनातान ने परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास रखने में दाऊद की सहायता की। ¹⁷योनातान ने दाऊद से कहा, “डरो नहीं। मेरे पिता शाऊल तुम्हें चोट नहीं पहुँचा सकते। तुम इम्राएल के राजा बनोगे। मैं तुम्हारे बाद दूसरे स्थान पर रहूँगा। मेरे पिता भी यह जानते हैं।”

¹⁸योनातान और दाऊद दोनों ने यहोवा के सामने सन्धि की। तब योनातान घर चला गया और दाऊद होरेश में टिका रहा।

किला कोई भवन या नगर जिसकी दीवारें सुरक्षा के लिये ऊँची और मजबूत हों।

जीप के लोग शाऊल को दाऊद के बारे में बताते हैं

¹⁹जीप के लोग गिबा में शाऊल के पास आए। उन्होंने शाऊल से कहा, “दाऊद हम लोगों के क्षेत्र में छिपा है। वह होरेश के किले में है। वह हकीला पहाड़ी पर यशीमोन के दक्षिण में है। ²⁰महाराज आप जब चाहें आएँ। यह हम लोगों का कर्तव्य है कि हम आपको दाऊद को दें।”

²¹शाऊल ने उत्तर दिया, “यहोवा आप लोगों को मेरी सहायता के लिये आशीर्वाद दे। ²²जाओ और उसके बारे में और अधिक पता लगाओ। पता लगाओ कि दाऊद कहाँ ठहरा है। पता लगाओ कि दाऊद को वहाँ किसने देखा है। शाऊल ने सोचा, ‘दाऊद चतुर है। वह मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है।’ ²³छिपने के जिन स्थानों का उपयोग दाऊद कर रहा है, उन सभी को पता लगाओ और मेरे पास वापस लौटो तथा मुझे सब कुछ बताओ। तब मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। यदि दाऊद उस क्षेत्र में होगा तो मैं उसका पता लगाऊँगा। मैं उसका पता तब भी लगा लूँगा यदि मुझे यहूदा के सभी परिवारों की तलाशी लेनी पड़े।”

²⁴तब जीपी निवासी जीप को लौट गए। शाऊल वहाँ बाद में गया।

दाऊद और उसके लोग माओन की मरुभूमि में थे। वे यशीमोन के दक्षिण में मरुभूमि क्षेत्र में थे। ²⁵शाऊल और उसके लोग दाऊद की खोज करने गये। किन्तु लोगों ने दाऊद को सावधान कर दिया। उन्होंने बताया कि शाऊल उसकी तलाश कर रहा है। दाऊद तब माओन की मरुभूमि में नीचे की ओर चट्टान पर गया। शाऊल ने सुना कि दाऊद माओन की मरुभूमि में गया है। इसलिये शाऊल उस स्थान पर दाऊद को पकड़ने गया।

²⁶शाऊल पर्वत की एक ओर था। दाऊद और उसके लोग उसी पर्वत की दूसरी ओर थे। दाऊद शाऊल से दूर निकल जाने के लिये शीघ्रता कर रहा था। शाऊल और उसके सैनिक पर्वत के चारों ओर दाऊद और उसके लोगों को पकड़ने जा रहे थे।

²⁷तभी शाऊल के पास एक दूत आया। दूत ने कहा, “शीघ्रता करो! पलिशती हम पर आक्रमण कर रहे हैं।”

²⁸इसलिये शाऊल ने दाऊद का पीछा करना छोड़ दिया और पलिशतियों से लड़ने निकल गया। यही कारण है कि लोग उस स्थान को “फिसलनी चट्टान”* कहते

फिसलनी चट्टान या “सेला-हम्महलकोत।”

हैं।²⁹ दाऊद ने माओन की मरुभूमि को छोड़ा और एनगदी के समीप के किले में गया।

दाऊद शाऊल को लज्जित करता है

24 जब शाऊल ने पलिशितियों को पीछा करके भगा दिया तब लोगों ने शाऊल से कहा, “दाऊद एनगदी के पास के मरुभूमि क्षेत्र में है।”

² इसलिये शाऊल ने पूरे इज़्राएल में से तीन हजार लोगों को चुना। शाऊल ने इन व्यक्तियों को साथ लिया और दाऊद तथा उसके लोगों की खोज आरम्भ की। उन्होंने “जंगली बकरियों की चट्टान” के समीप खोजा।³ शाऊल सड़क के किनारे भेड़ों के बाड़े के समीप आया। वहाँ समीप ही एक गुफा थी। शाऊल स्वयं गुफा में शौच करने गया। दाऊद और उसके लोग बहुत पीछे उस गुफा में छिपे थे।⁴ लोगों ने दाऊद से कहा, “आज वह दिन है जिसके विषय में यहोवा ने बातें की थीं। यहोवा ने तुमसे कहा था, ‘मैं तुम्हारे शत्रु को तुम्हें दूँगा, तब तुम जो चाहो अपने शत्रु के साथ कर सकोगे।’”

तब दाऊद रेंगकर शाऊल के पास आया। दाऊद ने शाऊल के लबादे का एक कोना काट लिया। शाऊल ने दाऊद को नहीं देखा।⁵ बाद में, दाऊद को शाऊल के लबादे के एक कोने के काटने का अपत्सोस हुआ।⁶ दाऊद ने अपने लोगों से कहा, “यहोवा मुझे अपने स्वामी के साथ कुछ भी ऐसा करने से रोके। शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा है। मुझे शाऊल के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिए वह यहोवा का चुना हुआ राजा है।”⁷ दाऊद ने ये बातें अपने लोगों को रोकने के लिये कहीं। दाऊद ने अपने लोगों को शाऊल पर आक्रमण करने नहीं दिया।

शाऊल ने गुफा छोड़ी और अपने मार्ग पर चल पड़ा।⁸ दाऊद गुफा से निकला। दाऊद ने शाऊल को जोर से पुकारा, “मेरे प्रभु महाराज।”

शाऊल ने पीछे मुड़ कर देखा। दाऊद ने अपना सिर भूमि पर रखकर प्रणाम किया।⁹ दाऊद ने शाऊल से कहा, “आप क्यों सुनते हैं जब लोग यह कहते हैं, ‘दाऊद आप पर चोट करने की योजना बना रहा है?’¹⁰ मैं आपको चोट पहुँचाना नहीं चाहता! आप इसे अपनी आँखों से देख सकते हैं! यहोवा ने आज आपको गुफा में मेरे हाथों में दे दिया था। किन्तु मैंने आपको मार डालने से इन्कार किया। मैंने आप पर दया की। मैंने कहा, ‘मैं अपने

स्वामी को चोट नहीं पहुँचाऊँगा। शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा है!’¹¹ मेरे हाथ में इस कपड़े के टुकड़े को देखें। मैंने आपके लबादे का टुकड़ा काट लिया। मैं आपको मार सकता था, किन्तु मैंने यह नहीं किया। अब मैं चाहता हूँ कि आप इसे समझें। मैं चाहता हूँ कि आप यह समझें कि मैं आपके विरुद्ध कोई योजना नहीं बना रहा हूँ। मैंने आपका कोई बुरा नहीं किया। किन्तु आप मेरा पीछा कर रहे हैं और मुझे मार डालना चाहते हैं।¹² यहोवा को न्याय करने दो। यहोवा आपको उस अन्याय के लिये दण्ड देगा जो आपने मेरे साथ किया। किन्तु मैं अपने आप आपसे युद्ध नहीं करूँगा।¹³ पुरानी कहावत है: ‘बुरी चीजें बुरे लोगों से आती हैं।’

“मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया है! मैं बुरा व्यक्ति नहीं हूँ। अतः मैं आप पर चोट नहीं करूँगा।¹⁴ आप किसका पीछा कर रहे हैं? इज़्राएल का राजा किसके विरुद्ध लड़ने आ रहा है? आप ऐसे किसी का पीछा नहीं कर रहे हैं जो आपको चोट पहुँचाएगा। यह ऐसा ही है जैसे आप एक मृत कुत्ते या मच्छर का पीछा कर रहे हैं।¹⁵ यहोवा को न्याय करने दो। उसको मेरे और अपने बीच निर्णय देने दो। यहोवा मेरा समर्थन करेगा और दिखायेगा कि मैं सच्चाई पर हूँ। यहोवा आपसे मेरी रक्षा करेगा।”

¹⁶ दाऊद ने अपना यह कथन समाप्त किया और शाऊल ने पूछा, “मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तुम्हारी आवाज है?” तब शाऊल रोने लगा। शाऊल बहुत रोया।¹⁷ शाऊल ने कहा, “तुम सही हो और मैं गलती पर हूँ। तुम हमारे प्रति अच्छे रहे। किन्तु मैं तुम्हारे प्रति बुरा रहा।¹⁸ तुमने उन अच्छी बातों को बताया जिन्हें तुमने मेरे प्रति किया। यहोवा मुझे तुम्हारे पास लाया, किन्तु तुमने मुझे नहीं मार डाला।¹⁹ यदि कोई अपने शत्रु को पकड़ता है तो वह उसे बच निकलने नहीं देता। वह अपने शत्रु के लिये अच्छे काम नहीं करता। यहोवा तुमको इसका पुरस्कार दे क्योंकि तुम आज मेरे प्रति अच्छे रहे।²⁰ मैं जानता हूँ कि तुम नये राजा होगे। तुम इज़्राएल के राज्य पर शासन करोगे।²¹ अब मुझसे एक प्रतिज्ञा करो। यहोवा का नाम लेकर यह प्रतिज्ञा करो कि तुम मेरे वंशजों को मारोगे नहीं। प्रतिज्ञा करो कि तुम मेरे पिता के परिवार से मेरा नाम मिटाओगे नहीं।”

²² इसलिये दाऊद ने शाऊल से प्रतिज्ञा की। दाऊद ने प्रतिज्ञा की कि वह शाऊल के परिवार को नहीं मारेगा।

तब शाऊल लौट गया। दाऊद और उसके लोग किले में चले गये।

दाऊद और नाबाल

25 शमूएल मर गया। इम्राएल के सभी लोग इकट्ठे हुए और उन्होंने शमूएल की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। उन्होंने शमूएल को उसके घर रामा में दफनाया। तब दाऊद पारान की मरुभूमि में चला गया।

²एक व्यक्ति था जो माओन में रहता था। वह व्यक्ति बहुत सम्पन्न था। उसके पास तीन हजार भेड़ें और एक हजार बकरियाँ थीं। वह कर्मेल में अपने धंधे की देखभाल करता था। वह कर्मेल में अपनी भेड़ों की ऊन काटता था। ³उस व्यक्ति का नाम नाबाल* था। उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था। अबीगैल बुद्धिमती और सुन्दर स्त्री थी। किन्तु नाबाल क्रूर और नीच था। नाबाल कालेब के परिवार से था।

⁴दाऊद मरुभूमि में था और उसने सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों की ऊन काट रहा है। ⁵इसलिये दाऊद ने दस युवकों को नाबाल से बातें करने के लिये भेजा। दाऊद ने कहा, “कर्मेल जाओ। नाबाल से मिलो और उसको मेरी ओर से ‘नमस्ते’ कहो।” ⁶दाऊद ने उन्हें नाबाल के लिये यह सन्देश दिया, “मुझे आशा है कि तुम और तुम्हारा परिवार सुखी है। मैं आशा करता हूँ कि जो कुछ तुम्हारा है, ठीक-ठाक है। ⁷मैंने सुना है कि तुम अपनी भेड़ों से ऊन काट रहे हो। तुम्हारे गड़रिये कुछ समय तक हम लोगों के साथ रहे थे और हम लोगों ने उन्हें कोई कष्ट नहीं दिया। जब तक तुम्हारे गड़रिये कर्मेल में रहे हमने उनसे कुछ भी नहीं लिया। ⁸अपने सेवकों से पूछो और वे बता देंगे कि यह सब सच है। कृपया मेरे युवकों पर दया करो। इस प्रसन्नता के अवसर पर हम तुम्हारे पास पहुँच रहे हैं। कृपया इन युवकों को तुम जो कुछ चाहो, दो। कृपया यह मेरे लिये, अपने मित्र* दाऊद के लिये करो।”

⁹दाऊद के व्यक्ति नाबाल के पास गए। उन्होंने दाऊद का सन्देश नाबाल को दिया। ¹⁰किन्तु नाबाल उनके प्रति नीचता से पेश आया। नाबाल ने कहा, “दाऊद है कौन? यह विश्वै का पुत्र कौन होता है? इन दिनों बहुत से दास हैं

जो अपने स्वामियों के यहाँ से भाग गये हैं! ¹¹मेरे पास रोटी और पानी है और मेरे पास वह मॉस भी है जिसे मैंने भेड़ों से ऊन काटने वाले सेवकों के लिये मारा है। किन्तु मैं उसे उन व्यक्तियों को नहीं दे सकता जिन्हें मैं जानता भी नहीं।”

¹²दाऊद के व्यक्ति लौट गये और नाबाल ने जो कुछ कहा था दाऊद को बता दिया। ¹³तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा, “अपनी तलवार उठाओ!” अतः दाऊद और उसके लोगों ने तलवारें कस ली। लगभग चार सौ व्यक्ति दाऊद के साथ गये और दो सौ व्यक्ति साज़ो सामान के साथ रुके रहे।

अबीगैल आपत्ति को टालती है

¹⁴नाबाल के सेवकों में से एक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल से बातें कीं। सेवक ने कहा, “दाऊद ने मरुभूमि से अपने दूतों को हमारे स्वामी (नाबाल) के पास भेजा। किन्तु नाबाल दाऊद के दूतों के साथ नीचता से पेश आया। ¹⁵ये लोग हम लोगों के प्रति बहुत अच्छे थे। हम लोग भेड़ों के साथ मैदानों में जाते थे। दाऊद के लोग हमारे साथ लगातार रहे और उन्होंने हमारे साथ कुछ भी बुरा नहीं किया। उन्होंने पूरे समय हमारा कुछ भी नहीं चुराया। ¹⁶दाऊद के लोगों ने दिन रात हमारी रक्षा की। वे हम लोगों के लिये रक्षक चहारदीवारी की तरह थे, उन्होंने हमारी रक्षा तब की जब हम भेड़ों की रखवाली करते हुए उनके साथ थे। ¹⁷अब इस विषय में सोचो और निर्णय करो कि तुम क्या कर सकती हो। नाबाल ने जो कुछ कहा वह मूर्खतापूर्ण था। हमारे स्वामी (नाबाल) और उनके सारे परिवार के लिये भयंकर आपत्ति आ रही है।”

¹⁸अबीगैल ने शीघ्रता की और दो सौ रोटियाँ, दाखमधु की दो भरी मशकें, पाँच पकी भेड़ें, लगभग एक बुशल पका अन्न, दो क्वार्ट मुनक्के और दो सौ सूखे अंजीर की टिकिया लीं। उसने उन्हें गधों पर लादा। ¹⁹तब अबीगैल ने अपने सेवकों से कहा, “आगे चलते रहो मैं तुम्हारे पीछे आ रही हूँ।” किन्तु उसने अपने पति से कुछ न कहा।

²⁰अबीगैल अपने गधे पर बैठी और पर्वत की दूसरी ओर पहुँची। वह दूसरी ओर से आते हुए दाऊद और उसके आदमियों से मिली।

²¹अबीगैल से मिलने के पहले दाऊद कह रहा था, “मैंने नाबाल की सम्पत्ति की रक्षा मरुभूमि में की। मैंने यह

नाबाल इस नाम का अर्थ “मूर्ख” है।
मित्र शाब्दिक “पुत्र।”

व्यवस्था की कि उसकी कोई भेड़ खोए नहीं। मैंने यह सब कुछ बिना लिये किया। मैंने उसके लिये अच्छा किया। किन्तु मेरे प्रति वह बुरा रहा। ²²परमेश्वर मुझे दण्डित करे यदि मैं नाबाल के परिवार के किसी व्यक्ति को कल सवेरे तक जीवित रहने दूँ।”

²³किन्तु जब अबीगैल ने दाऊद को देखा वह शीघ्रता से अपने गधे पर से उतर पड़ी। वह दाऊद के सामने प्रणाम करने को झुकी। उसने अपना माथा धरती पर टिकाया। ²⁴अबीगैल दाऊद के चरणों पर पड़ गई। उसने कहा, “मान्यवर, कृपा कर मुझे कुछ कहने दें। जो मैं कहूँ उसे सुनें। जो कुछ हुआ उसके लिये मुझे दोष दें। ²⁵मैंने उन व्यक्तियों को नहीं देखा जिन्हें आपने भेजा। मान्यवर, उस नालायक आदमी (नाबाल) पर ध्यान न दें। वह ठीक वही है जैसा उसका नाम है। उसके नाम का अर्थ ‘मूर्ख’ है और वह सचमुच मूर्ख ही है। ²⁶यहोवा ने आपको निरपराध व्यक्तियों को मारने से रोका है। यहोवा शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसकी शपथ खाकर मैं आशा करती हूँ कि आपके शत्रु और जो आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं, वे नाबाल की स्थिति में होंगे। ²⁷अब, मैं आपको यह भेंट लाई हूँ। कृपया इन चीजों को उन लोगों को दें जो आपका अनुसरण करते हैं। ²⁸अपराध करने के लिये मुझे क्षमा करें। मैं जानती हूँ कि यहोवा आपके परिवार को शक्तिशाली बनायेगा, आपके परिवार से अनेक राजा होंगे। यहोवा यह करेगा क्योंकि आप उसके लिये युद्ध लड़ते हैं। लोग तब आप में कभी बुराई नहीं पाएंगे जब तक आप जीवित रहेंगे। ²⁹यदि कोई व्यक्ति आपको मार डालने के लिये आपका पीछा करता है तो यहोवा आपका परमेश्वर आपके जीवन की रक्षा करेगा। किन्तु यहोवा आपके शत्रुओं के जीवन को ऐसे दूर फेंकेगा जैसे गुलेल से पत्थर फेंका जाता है।

³⁰यहोवा ने आपके लिये बहुत सी अच्छी चीजों को करने का वचन दिया है और यहोवा अपने सभी वचनों को पूरा करेगा। परमेश्वर आपको इम्राएल का शासक बनाएगा। ³¹और आप इस जाल में नहीं फँसेंगे। आप बुरा काम करने के अपराधी नहीं होंगे। आप निरपराध लोगों को मारने का अपराध नहीं करेंगे। कृपया मुझे उस समय याद रखें जब यहोवा आपको सफलता प्रदान करे।”

³²दाऊद ने अबीगैल को उत्तर दिया, “इम्राएल के परमेश्वर, यहोवा की स्तुति करो! परमेश्वर ने तुम्हें मुझसे मिलने भेजा है। ³³तुम्हारे अच्छे निर्णय के लिये परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे। तुमने आज मुझे निरपराध लोगों को मारने से बचाया। ³⁴निश्चय ही, जैसे इम्राएल का परमेश्वर, यहोवा शाश्वत है, यदि तुम शीघ्रता से मुझसे मिलने न आई होती तो कल सवेरे तक नाबाल के परिवार का कोई भी पुरुष जीवित नहीं बच पाता।”

³⁵तब दाऊद ने अबीगैल की भेंट को स्वीकार किया। दाऊद ने उससे कहा, “शान्ति से घर जाओ। मैंने तुम्हारी बातें सुनी हैं और मैं वही करूँगा जो तुमने करने को कहा है।”

नाबाल की मृत्यु

³⁶अबीगैल नाबाल के पास लौटी। नाबाल घर में था। नाबाल एक राजा की तरह खा रहा था। नाबाल ने छक कर दाखमधु पी रखी थी और वह प्रसन्न था। इसलिये अबीगैल ने नाबाल को अगले सवेरे तक कुछ भी नहीं बताया। ³⁷अगली सुबह नाबाल का नशा उतरा। अतः उसकी पत्नी ने हर बात बता दी और नाबाल को दिल का दौरा पड़ गया। वह चट्टान की तरह कड़ा हो गया। ³⁸करीब दस दिन बाद यहोवा ने नाबाल को मर जाने दिया।

³⁹दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया है। दाऊद ने कहा, “यहोवा की स्तुति करो! नाबाल ने मेरे विरुद्ध बुरी बातें कीं, किन्तु यहोवा ने मेरा समर्थन किया। यहोवा ने मुझे पाप करने से बचाया और यहोवा ने नाबाल को मर जाने दिया क्योंकि उसने अपराध किया था।” तब दाऊद ने अबीगैल को एक सन्देश भेजा। दाऊद ने उसे अपनी पत्नी होने के लिये कहा। ⁴⁰दाऊद के सेवक कर्मल गए और अबीगैल से कहा, “दाऊद ने हम लोगों को तुम्हें लाने के लिये भेजा है। दाऊद चाहता है कि तुम उसकी पत्नी बनो।”

⁴¹अबीगैल ने धरती तक अपना माथा झुकाया। उसने कहा, “मैं आपकी दासी हूँ। मैं आपकी सेवा करने के लिये तैयार हूँ। मैं अपने स्वामी (दाऊद) के सेवकों के पैरों को धोने को तैयार हूँ।*”

मैं अपने ... हूँ यह दिखाता है कि अबीगैल नम्र थी और दासी की तरह रहने की इच्छा रखती थी।

⁴²अबीगैल शीघ्रता से गधे पर बैठी और दाऊद के दूतों के साथ चल दी। अबीगैल अपने साथ पाँच दासियाँ ले गई। वह दाऊद की पत्नी बनी।

⁴³दाऊद ने यिज़्रेल की अहिनोअम से भी विवाह किया था। अहिनोअम और अबीगैल दोनों दाऊद की पत्नियाँ थीं। ⁴⁴शाऊल की पुत्री मीकल भी दाऊद की पत्नी थी। किन्तु शाऊल ने उसे गल्लीम के निवासी लैश के पुत्र पलती को दे दिया था।

दाऊद और अबीशै शाऊल के डेरे में प्रवेश करते हैं

26 जीप के लोग शाऊल से मिलने गिबा गये। उन्होंने शाऊल से कहा, “दाऊद हकीला की पहाड़ी में छिपा है। यह पहाड़ी यशीमोन के उस पार है।”

²शाऊल जीप की मरुभूमि में गया। शाऊल ने पूरे इम्राएल से अपने द्वारा चुने गए तीन हजार सैनिकों को लिया। शाऊल और ये लोग जीप की मरुभूमि में दाऊद को खोज रहे थे। ³शाऊल ने अपना डेरा हकीला की पहाड़ी पर डाला। डेरा सड़क के किनारे यशीमोन के पार था। दाऊद मरुभूमि में रह रहा था। दाऊद को पता लगा कि शाऊल ने उसका वहाँ पीछा किया है। ⁴तब दाऊद ने अपने जासूसों को भेजा और दाऊद को पता लगा कि शाऊल हकीला आ गया है। ⁵तब दाऊद उस स्थान पर गया जहाँ शाऊल ने अपना डेरा डाला था। दाऊद ने देखा कि शाऊल और अब्नेर वहाँ सो रहे थे। (नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का सेनापति था।) शाऊल डेरे के बीच सो रहा था। सारी सेना शाऊल के चारों ओर थी।

⁶दाऊद ने हिती अहीमेलेक और यरूयाह के पुत्र अबीशै से बातें की। (अबीशै योआब का भाई था।) उसने उनसे कहा, “मेरे साथ शाऊल के पास उसके डेरे में कौन चलेगा?” अबीशै ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।”

⁷रात हुई। दाऊद और अबीशै शाऊल के डेरे में गए। शाऊल डेरे के बीच में सोया हुआ था। उसका भाला उसके सिर के पास जमीन में गड़ा था। अब्नेर और दूसरे सैनिक शाऊल के चारों ओर सोए थे। ⁸अबीशै ने दाऊद से कहा, “आज परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु को पराजित करने दिया है। मुझे शाऊल को उसके भाले से ही जमीन में टॉक देने दो। मैं इसे एक ही बार में कर दूँगा।”

⁹किन्तु दाऊद ने अबीशै से कहा, “शाऊल को न मारो! जो कोई यहोवा के चुने राजा को मारता है वह अवश्य दण्डित होता है! ¹⁰यहोवा शाश्वत है, अतः वह शाऊल को स्वयं दण्ड देगा। संभव है शाऊल स्वाभाविक मृत्यु प्राप्त करे या संभव है शाऊल युद्ध में मारा जाये। ¹¹किन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा मुझे अपने चुने हुए राजा को मुझसे चोट न पहुँचवाये। अब पानी के घड़े और भाले को उठाओ जो शाऊल के सिर के पास है। तब हम लोग चलें।”

¹²इसलिये दाऊद ने भाले और पानी के घड़े को लिया जो शाऊल के सिर के पास थे। तब दाऊद और अबीशै ने शाऊल के डेरे को छोड़ दिया। किसी ने यह होते नहीं देखा। कोई व्यक्ति इसके बारे में न जान सका। कोई भी व्यक्ति जागा भी नहीं। शाऊल और उसके सैनिक सोते रहे क्योंकि यहोवा ने उन्हें गहरी नींद में डाल दिया था।

दाऊद शाऊल को फिर लज्जित करता है

¹³दाऊद दूसरी ओर पार निकल गया। शाऊल के डेरे से घाटी के पार दाऊद पर्वत की चोटी पर खड़ा था। दाऊद और शाऊल के डेरे बहुत दूरी पर थे। ¹⁴दाऊद ने सेना को और नेर के पुत्र अब्नेर को जोर से पुकारा, “अब्नेर मुझे उत्तर दो!” अब्नेर ने पूछा, “तुम कौन हो? तुम राजा को क्यों बुला रहे हो?”

¹⁵दाऊद ने उत्तर दिया, “तुम पुरुष हो। क्यों क्या तुम नहीं हो? और तुम इम्राएल में किसी भी अन्य व्यक्ति से बेहतर हो। क्यों यह ठीक है? तब तुमने अपने स्वामी राजा की रक्षा क्यों नहीं की? एक साधारण व्यक्ति तुम्हारे डेरे में तुम्हारे स्वामी राजा को मारने आया। ¹⁶तुमने भयंकर भूल की। यहोवा शाश्वत है! अतः तुम्हें और तुम्हारे सैनिकों को मर जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि तुमने अपने स्वामी यहोवा के चुने राजा की रक्षा नहीं की। शाऊल के सिर के पास भाले और पानी के घड़े की खोज करो। वे कहाँ हैं?”

¹⁷शाऊल दाऊद की आवाज पहचानता था। शाऊल ने कहा, “मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तुम्हारी आवाज है?” दाऊद ने उत्तर दिया, “मेरे स्वामी और राजा, हाँ, यह मेरी आवाज है।” ¹⁸दाऊद ने यह भी पूछा, “महाराज, आप मेरा पीछा क्यों कर रहे हैं? मैंने कौन सी गलती की है? मैं क्या करने का अपराधी हूँ? ¹⁹मेरे स्वामी और राजा,

मेरी बात सुनें! यदि यहोवा ने आपको मेरे विरुद्ध क्रोधित किया है तो उन्हें एक भेंट स्वीकार करने दें। किन्तु यदि लोगों ने मेरे विरुद्ध आपको क्रोधित किया है तो यहोवा द्वारा उनके लिए कुछ बुरी आपत्ति आने दें। लोगों ने मुझे इस देश को छोड़ने पर विवश किया, जिसे यहोवा ने मुझे दिया है। लोगों ने मुझसे कहा, 'जाओ विदेशियों के साथ रहो। जाओ अन्य देवताओं की पूजा करो।' ²⁰मुझे अब यहोवा की उपस्थिति से दूर न मरने दो। इम्राएल का राजा एक मच्छर की खोज में निकला है। आप उस व्यक्ति की तरह हैं जो पहाड़ों में तीतर का शिकार करने निकला हो।"*

²¹तब शाऊल ने कहा, "मैंने पाप किया है। मेरे पुत्र दाऊद लौट आओ। आज तुमने दिखा दिया कि मेरा जीवन तुम्हारे लिये महत्व रखता है। इसलिये मैं तुम्हें चोट पहुँचाने का प्रयत्न नहीं करूँगा। मैंने मूर्खतापूर्ण काम किया है। मैंने एक भयंकर भूल की है।"

²²दाऊद ने उत्तर दिया, "राजा का भाला यह है। अपने किसी युवक को यहाँ आने दो और वह ले जाए। ²³यहोवा मनुष्यों के कर्म का फल देता है, यदि वह अच्छा करता है तो उसे पुरस्कार देता है, और वह उसे दण्ड देता है जो बुरा करता है। यहोवा ने आज मुझे आपको पराजित करने दिया, किन्तु मैं यहोवा के चुने हुए राजा पर चोट नहीं करूँगा। ²⁴आज मैंने आपको दिखा दिया कि आपका जीवन मेरे लिये महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार यहोवा दिखायेगा कि मेरा जीवन उसके लिये महत्वपूर्ण है। यहोवा मेरी रक्षा हर एक आपत्ति से करेगा।"

²⁵शाऊल ने दाऊद से कहा, "मेरे पुत्र दाऊद, परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे। तुम महान कार्य करोगे और सफल होओगे।" दाऊद अपनी राह गया, और शाऊल घर लौट गया।

दाऊद पलिशितियों के साथ रहता है:

27 किन्तु दाऊद ने अपने मन में सोचा, "शाऊल मुझे किसी दिन पकड़ लेगा। सर्वोत्तम बात मैं

आप ... निकला हो जब लोग तीतर का शिकार पहाड़ों में करते थे तो वे उनका पीछा इतना करते थे कि पक्षी इतने थक जाते थे कि भाग न सकें। तब वे पक्षियों को मारते थे। शाऊल दाऊद का पीछा वैसे ही कर रहा था। यह श्लेष भी है। हिब्रू शब्द तीतर के लिये उस शब्द की तरह है जिसका अर्थ पद 14 में 'बुलाना' है।

यही कर सकता हूँ कि पलिशितियों के देश में बच निकलूँ। तब शाऊल मेरी खोज इम्राएल में बन्द कर देगा। इस प्रकार मैं शाऊल से बच निकलूँगा।"

²इसलिए दाऊद और उसके छः सौ लोगों ने इम्राएल छोड़ दिया। वे माओक के पुत्र आकीश के पास गए। आकीश गत का राजा था। ³दाऊद, उसके लोग और उनके परिवार आकीश के साथ गत में रहने लगे। दाऊद के साथ उसकी दो पत्नियाँ थीं। वे यिज़ेली की अहीनोअम और कर्मेल की अबीगैल थी। अबीगैल नाबाल की विधवा थी। ⁴लोगों ने शाऊल से कहा कि दाऊद गत को भाग गया है और शाऊल ने उसकी खोज बन्द कर दी।

⁵दाऊद ने आकीश से कहा, "यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अपने देश के नगरों में से एक में स्थान दे दें। मैं आपका केवल सेवक मात्र हूँ। मुझे वहाँ रहना चाहिये, आपके साथ यहाँ राजधानी नगर में नहीं।"

⁶उस दिन आकीश ने दाऊद को सिकलंग नगर दिया और तब से सिकलंग सदा यहूदा के राजाओं का रहा है। ⁷दाऊद पलिशितियों के साथ एक वर्ष और चार महीने रहा।

दाऊद का आकीश राजा को बहकाना

⁸दाऊद और उसके लोग अमालेकी तथा गशूर में रहने वाले लोगों के साथ युद्ध करने गये। दाऊद के लोगों ने उनको हराया और उनकी सम्पत्ति ले ली। लोग उस क्षेत्र में शूर के निकट तेलम से लेकर लगातार मिश्र तक रहते थे। ⁹दाऊद उस क्षेत्र में लोगों से लड़ा। दाऊद ने किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा। दाऊद ने उनकी सभी भेड़ें, पशु, गधे, ऊँट और कपड़े लिये। तब वह इसे वापस आकीश के पास लाया।

¹⁰दाऊद ने यह कई बार किया। हर बार आकीश पूछता कि वह कहाँ लड़ा और उन चीजों को कहाँ से लाया। दाऊद ने कहा, "मैं यहूदा के दक्षिणी भाग में लड़ा।" या "मैं यरहमेलियों के दक्षिणी भाग में लड़ा या मैं केनियों के दक्षिणी भाग में लड़ा।"* ¹¹दाऊद गत में कभी जीवित स्त्री या पुरुष नहीं लाया। दाऊद ने सोचा, "यदि हम किसी व्यक्ति को जीवित रहने देते हैं तो वह

मैं यहूदा ... में लड़ा ये सभी स्थान इम्राएल के हैं। दाऊद आकीश को यह विश्वास दिलाता था कि वह अपने ही लोगों इम्राएलियों के विरुद्ध लड़ रहा है।

आकीश से कह सकता है कि वस्तुतः मैंने क्या किया है।" दाऊद ने पूरे समय, जब तक पलिशतियों के देश में रहा, यही किया।¹² आकीश ने दाऊद पर विश्वास करना आरम्भ कर दिया। आकीश ने अपने आप सोचा, "अब दाऊद के अपने लोग ही उससे घृणा करते हैं। इज़्राएली दाऊद से बहुत अधिक घृणा करते हैं। अब दाऊद मेरी सेवा करता रहेगा।"

पलिशती युद्ध की तैयारी करते हैं:

28 बाद में पलिशतियों ने अपनी सेना को इज़्राएल के विरुद्ध लड़ने के लिये इकट्ठा किया। आकीश ने दाऊद से कहा, "क्या तुम समझते हो कि तुम्हें और तुम्हारे व्यक्तियों को इज़्राएलियों के विरुद्ध मेरे साथ लड़ने जाना चाहिये?"

²दाऊद ने उत्तर दिया, "निश्चय ही! तब आप स्वयं ही देखें कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

आकीश ने कहा, "बहुत अच्छा, मैं तुम्हें अपना अंगरक्षक बनाऊँगा। तुम सदा मेरी रक्षा करोगे।"

शाऊल और स्त्री एन्दोर में

³शम्भूल मर गया था। सभी इज़्राएलियों ने शम्भूल की मृत्यु पर शोक मनाया था। उन्होंने शम्भूल के निवास स्थान रामा में उसे दफनाया था। इसके पहले शाऊल ने ओझाओं और भाग्यफल बताने वालों को इज़्राएल छोड़ने को विवश किया था।

⁴पलिशतियों ने युद्ध की तैयारी की। वे शूनेम आए और उस स्थान पर उन्होंने अपना डेरा डाला। शाऊल ने सभी इज़्राएलियों को इकट्ठा किया और अपना डेरा गिलबो में डाला।⁵ शाऊल ने पलिशती सेना को देखा और वह भयभीत हो गया। उसका हृदय भय से धड़कने लगा।⁶ शाऊल ने यहोवा से प्रार्थना की, किन्तु यहोवा ने उसे उत्तर नहीं दिया। परमेश्वर ने शाऊल से स्वप्न में बातें नहीं कीं। परमेश्वर ने उसे उत्तर देने के लिये ऊरीम का उपयोग भी नहीं किया और परमेश्वर ने शाऊल से बात करने के लिये भविष्यवक्ताओं का उपयोग नहीं किया।⁷ अन्त में शाऊल ने अपने अधिकारियों से कहा, "मेरे लिये ऐसी स्त्री का पता लगाओ जो ओझा हो। तब मैं उससे पूछने जा सकता हूँ कि इस युद्ध में क्या होगा।"

उसके अधिकारियों ने उत्तर दिया, "एन्दोर में एक ओझा है।"

⁸शाऊल ने भिन्न प्रकार के वस्त्र पहने। शाऊल ने यह इसलिये किया कि कोई व्यक्ति यह न जान सके कि वह कौन है। रात को वह अपने दो व्यक्तियों के साथ उस स्त्री से मिलने गया। शाऊल ने उस स्त्री से कहा, "प्रेत के द्वारा मुझे मेरा भविष्य बताओ। उस व्यक्ति को बुलाओ जिसका मैं नाम लूँ।"

⁹किन्तु उस स्त्री ने शाऊल से कहा, "तुम जानते ही हो कि शाऊल ने क्या किया है! उसने ओझाओं और भाग्यफल बताने वालों को इज़्राएल देश को छोड़ने को विवश किया है। तुम मुझे जाल में फँसाना और मार डालना चाहते हो।"

¹⁰शाऊल ने यहोवा का नाम लिया और उस स्त्री से प्रतिज्ञा की, "निश्चय ही यहोवा शाश्वत है, अतः तुमको यह करने के लिये दण्ड नहीं मिलेगा।"

¹¹स्त्री ने पूछा, "तुम किसे चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहाँ बुलाऊँ?" शाऊल ने उत्तर दिया, "शम्भूल को बुलाओ।"

¹²और यह हुआ! स्त्री ने शम्भूल को देखा और जोर से चीख उठी। उसने शाऊल से कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया! तुम शाऊल हो!"

¹³राजा ने स्त्री से कहा, "तुम डरो नहीं! तुम क्या देख रही हो?" उस स्त्री ने कहा, "मैं एक आत्मा को जमीन* से निकल कर आती देख रही हूँ।"

¹⁴शाऊल ने पूछा, "वह कैसा दिखाई पड़ता है?" स्त्री ने उत्तर दिया, "वह लबादा पहने एक बूढ़े की तरह दिखाई पड़ता है।"

शाऊल ने समझ लिया कि वह शम्भूल था। शाऊल ने प्रणाम किया। उसका माथा जमीन से जा लगा।¹⁵ शम्भूल ने शाऊल से कहा, "तुमने मुझे क्यों परेशान किया? तुमने मुझे ऊपर क्यों बुलाया?"

शाऊल ने उत्तर दिया, "मैं मुसीबत में हूँ। पलिशती मेरे विरुद्ध लड़ने आए हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है। परमेश्वर अब मुझको उत्तर नहीं देगा। वह मुझे उत्तर देने के लिये नबी या स्वप्न का उपयोग नहीं करेगा। यही कारण है कि मैंने तुमको बुलाया। मैं चाहता हूँ कि तुम बताओ कि मैं क्या करूँ।"

जमीन या "मृत्यु का स्थान शोओल।"

¹⁶शमूएल ने कहा, “यहोवा ने तुमको छोड़ दिया। अब वह तुम्हारे पड़ोसी (दाऊद) के साथ है। इसलिये तुम मुझको तंग क्यों करते हो? ¹⁷यहोवा ने वही किया जो उसने करने को कहा था। उसने मेरा उपयोग तुम्हें इन चीजों को बताने के लिये किया। यहोवा तुम से राज्य छीन रहा है और उसने वह तुम्हारा राज्य तुम्हारे पड़ोसियों को दे रहा है। वह पड़ोसी दाऊद है। ¹⁸तुमने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने अमालेकियों को नष्ट नहीं किया और उन्हें नहीं दिखाया कि यहोवा उन पर कितना क्रोधित है। यही कारण है कि यहोवा ने तुम्हारे साथ आज यह किया है। ¹⁹यहोवा तुम्हें और इम्राएल को, पलिशतियों को देगा। यहोवा इम्राएल की सेना को पलिशतियों से पराजित करायेगा और कल तुम और तुम्हारे पुत्र यहाँ मेरे साथ होंगे!”

²⁰शाऊल तेजी से भूमि पर गिर पड़ा और वहाँ पड़ा रहा। शाऊल, शमूएल द्वारा कही गई बातों से डरा हुआ था। शाऊल बहुत कमजोर भी था क्योंकि उसने उस पूरे दिन रात भोजन नहीं किया था।

²¹स्त्री शाऊल के पास आई। उसने देखा कि शाऊल सचमुच भयभीत था। उसने कहा, “देखो, मैं आपकी दासी हूँ। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। मैंने अपने जीवन को खतरे में डाला और जो आपने कहा, किया। ²²अब कृपया मेरी सुनो। मुझे आपको कुछ भोजन देने दें। आपको अवश्य खाना चाहिये। तब आप में इतनी शक्ति आयेगी कि आप अपने रास्ते जा सकें।”

²³लेकिन शाऊल ने इन्कार किया। उसने कहा, “मैं खाऊँगा नहीं।”

शाऊल के अधिकारियों ने उस स्त्री का साथ दिया और उससे खाने के लिये प्रार्थना की। शाऊल ने उनकी बात सुनी। वह भूमि से उठा और बिस्तर पर बैठ गया। ²⁴उस स्त्री के घर में एक मोटा बछड़ा था। उसने शीघ्रता से बछड़े को मारा। उसने कुछ आटा लिया और उसे अपने हाथों से गूँदा। तब उसने बिना खमीर की कुछ रोटियाँ बनाईं। ²⁵स्त्री ने भोजन शाऊल और उसके अधिकारियों के सामने रखा। शाऊल और उसके अधिकारियों ने खाया। तब वे उसी रात को उठे और चल पड़े।

“दाऊद हमारे साथ नहीं आ सकता है!”

29 पलिशतियों ने अपने सभी सैनिकों को आपे में इकट्ठा किया। इम्राएलियों ने चश्मे के पास यिज़्रेल में डेरा डाला। ²पलिशती शासक अपनी सौ एवं हजार पुरुषों की टुकड़ियों के साथ कदम बढ़ा रहे थे। दाऊद और उसके लोग आकीश के साथ कदम बढ़ाते हुए चल रहे थे।

³पलिशती अधिकारियों ने पूछा, “ये हिब्रू यहाँ क्या कर रहे हैं?”

आकीश ने पलिशती अधिकारियों से कहा, “यह दाऊद है। दाऊद शाऊल के अधिकारियों में से एक था। दाऊद मेरे पास बहुत समय से है। मैं दाऊद में कोई दोष तब से नहीं देखता जब से इसने शाऊल को छोड़ा और मेरे पास आया।”

⁴किन्तु पलिशती अधिकारी आकीश पर क्रोधित हुए। उन्होंने कहा, “दाऊद को वापस भेजो! दाऊद को उस नगर में वापस जाना चाहिये जिसे तुमने उसको दिया है। वह हम लोगों के साथ युद्ध में नहीं जा सकता। यदि वह यहाँ है तो हम अपने डेरे में अपने एक शत्रु को रखे हुए हैं। वह हमारे अपने आदमियों को मार कर अपने राजा (शाऊल) को प्रसन्न करेगा। ⁵दाऊद वही व्यक्ति है जिसके लिये इस गाने में इम्राएली गाते और नाचते हैं:

“शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा।

किन्तु दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा।”

⁶इसलिये आकीश ने दाऊद को बुलाया। आकीश ने कहा, “यहोवा शाश्वत है, तुम हमारे भक्त हो। मैं प्रसन्न होता कि तुम मेरी सेना में सेवा करते। जिस दिन से तुम मेरे पास आए हो, मैंने तुममें कोई दोष नहीं पाया है। पलिशती शासक भी समझते हैं कि तुम अच्छे व्यक्ति हो* ⁷शान्ति से लौट जाओ। पलिशती शासकों के विरुद्ध कुछ न करो।”

⁸दाऊद ने पूछा, “मैंने क्या गलती की है? तुमने मेरे भीतर जब से मैं तुम्हारे पास आया तब से आज तक कौन सी बुराई देखी? मेरे प्रभु, राजा के शत्रुओं के विरुद्ध तुम मुझे क्यों नहीं लड़ने देते?”

⁹आकीश ने उत्तर दिया, “मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हें पसन्द करता हूँ। तुम परमेश्वर के यहाँ से स्वर्गदूत के

पलिशती ... व्यक्ति हो पलिशती शासक दाऊद से प्रसन्न हैं, पलिशती सेना के अधिकारी ही उसके विरुद्ध हैं।

समान हो। किन्तु पलिशती अधिकारी अब भी कहते हैं, 'दाऊद हम लोगों के साथ युद्ध में नहीं जा सकता।' ¹⁰सबेरे भोर होते ही तुम और तुम्हारे लोग वापस जायेंगे। उस नगर को लौट जाओ जिसे मैंने तुम्हें दिया है। उन पर ध्यान न दो जो बुरी बातें अधिकारी लोग तुम्हारे बारे में कहते हैं। अतः ज्योंही सूर्य निकले तुम चल पड़ो।"

¹¹इसलिये दाऊद और उसके लोग सबेरे तड़के उठे। वे पलिशतियों के देश में लौट गए और पलिशती थिज़्नेल को गये।

अमालेकी सिकलग पर आक्रमण करते हैं

30 तीसरे दिन, दाऊद और उसके लोग सिकलग पहुँच गए। उन्होंने देखा कि अमालेकियों ने सिकलग पर आक्रमण कर रखा है। अमालेकियों ने नेगव क्षेत्र पर आक्रमण कर रखा था। उन्होंने सिकलग पर आक्रमण किया था और नगर को जला दिया था। ²वे सिकलग की स्त्रियों को बन्दी बना कर ले गये थे। वे जवान और बूढ़े सभी लोगों को ले गए थे। उन्होंने किसी व्यक्ति को मारा नहीं। वे केवल उनको लेकर चले गए थे।

³दाऊद और उसके लोग सिकलग आए और उन्होंने नगर को जलते पाया। उनकी पत्नियाँ, पुत्र और पुत्रियाँ जा चुके थे। अमालेकी उन्हें ले गए थे। ⁴दाऊद और उसकी सेना के अन्य लोग जोर से तब तक रोते रहे जब तक वे कमजोरी के कारण रोने के लायक नहीं रह गये। ⁵अमालेकी दाऊद की दो पत्नियाँ थिज़्नेल की अहीनोअम तथा कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल को ले गए थे।

⁶सेना के सभी लोग दुःखी और क्रोधित थे क्योंकि उनकी पुत्र-पुत्रियाँ बन्दी बना ली गई थीं। वे पुरुष दाऊद को पत्थरों से मार डालने की बात कर रहे थे। इससे दाऊद बहुत घबरा गया। किन्तु दाऊद ने अपने यहोवा परमेश्वर में शक्ति पाई। ⁷दाऊद ने याजक एब्यातार से कहा, "एपोद लाओ।"

⁸तब दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की, "क्या मुझे उन लोगों का पीछा करना चाहिये जो हमारे परिवारों को ले गये हैं? क्या मैं उन्हें पकड़ लूँगा।"

यहोवा ने उत्तर दिया, "उनका पीछा करो। तुम उन्हें पकड़ लोगे। तुम अपने परिवारों को बचा लोगे।"

दाऊद और उसके व्यक्ति मिश्री दासों को पकड़ते हैं

⁹दाऊद ने अपने छः सौ व्यक्तियों को साथ लिया और बसोर की घाटियों में गया। उनमें से कुछ लोग उसी स्थान पर ठहर गये। ¹⁰लगभग दो सौ व्यक्ति ठहर गये क्योंकि वे अत्याधिक थके और कमजोर होने से जा नहीं सकते थे। इसलिये दाऊद और चार सौ व्यक्तियों ने अमालेकी का पीछा किया।

¹¹दाऊद के व्यक्तियों ने एक मिश्री को खेत में देखा। वे मिश्री को दाऊद के पास ले गये। उन्होंने पीने के लिये थोड़ा पानी और खाने के लिये भोजन दिया। ¹²उन्होंने मिश्री को अंजीर की टिकिया और सूखे अंगूर के दो गुच्छे दिये। भोजन के बाद वह कुछ स्वस्थ हुआ। उसने तीन दिन और तीन रात से न कुछ खाया था, न ही पानी पीया था।

¹³दाऊद ने मिश्री से पूछा, "तुम्हारा स्वामी कौन है? तुम कहाँ से आये हो?" मिश्री ने उत्तर दिया, "मैं मिश्री हूँ। मैं एक अमालेकी का दास हूँ। तीन दिन पहले मैं बीमार पड़ गया और मेरे स्वामी ने मुझे छोड़ दिया। ¹⁴हम लोगों ने नेगव पर आक्रमण किया जहाँ करते-रहते हैं। हम लोगों ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण किया और नेगव क्षेत्र पर भी जहाँ कालेब लोग रहते हैं। हम लोगों ने सिकलग को भी जलाया।"

¹⁵दाऊद ने मिश्री से पूछा, "क्या तुम उन लोगों के पास हमें पहुँचाओगे जो हमारे परिवारों को ले गए हैं?" मिश्री ने उत्तर दिया, "तुम परमेश्वर के सामने प्रतिज्ञा करो कि तुम मुझे न मारोगे, न ही मुझे मेरे स्वामी को दोगे। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं उनको पकड़वाने में तुम्हारी सहायता करूँगा।"

दाऊद अमालेकी को हरता है

¹⁶मिश्री ने दाऊद को अमालेकियों के यहाँ पहुँचाया। वे चारों ओर जमीन पर मदिरा पीते और भोजन करते हुए पड़े थे। वे पलिशतियों और यहूदा के प्रदेश से जो बहुत सी चीजें लाए थे, उसी से उत्सव मना रहे थे। ¹⁷दाऊद ने उन्हें हराया और उनको मार डाला। वे सूरज निकलने के अगले दिन की शाम तक लड़े। अमालेकियों में से चार सौ युवकों के अतिरिक्त जो ऊँटों पर चढ़कर भाग निकले, कोई बच न सका।

करेती या "क्रीट के लोग" ये संभवतः पलिशती थे।

¹⁸दाऊद को अपनी दोनों पत्नियाँ वापस मिल गई। दाऊद ने वे सभी चीज़ें वापस पाई जिन्हें अमालेकी ले आए थे। ¹⁹कोई चीज़ नहीं खोई। उन्होंने सभी बच्चे और बूढ़ों को पा लिया। उन्होंने अपने सभी पुत्रों और पुत्रियों को प्राप्त किया। उन्हें अपनी कीमती चीज़ें भी मिल गई। उन्होंने अपनी हर एक चीज़ वापस पाई जो अमालेकी ले गए थे। दाऊद हर चीज़ लौटा लाया। ²⁰दाऊद ने सारी भेड़ें और पशु ले लिये। दाऊद के व्यक्तियों ने इन जानवरों को आगे चलाया। दाऊद के लोगो ने कहा, “ये दाऊद के पुरस्कार हैं।”

सभी लोगों का भाग बराबर होगा

²¹दाऊद वहाँ आया जहाँ दो सौ व्यक्ति बसोर की घाटियों में ठहरे थे। ये वे व्यक्ति थे जो अत्याधिक थके और कमजोर थे। अतः दाऊद के साथ नहीं जा सके थे। वे लोग दाऊद और उन सैनिकों का स्वागत करने बाहर आये जो उसके साथ गये थे। बसोर की घाटियों में ठहरे व्यक्तियों ने दाऊद और उसकी सेना को बधाई दी जैसे ही वे निकट आए। ²²किन्तु जो टुकड़ी दाऊद के साथ गई थी उसमें कुछ बुरे और परेशानी उत्पन्न करने वाले व्यक्ति भी थे। उन परेशानी उत्पन्न करने वालों ने कहा, “ये दो सौ व्यक्ति हम लोगों के साथ नहीं गये। इसलिये जो चीज़ें हम लाये हैं उनमें से कुछ भी हम इन्हें नहीं देंगे। ये व्यक्ति केवल अपनी पत्नियाँ और बच्चों को ले सकते हैं।”

²³दाऊद ने उत्तर दिया, “नहीं, मेरे भाईयों ऐसा मत करो! इस विषय में सोचो कि यहोवा ने हमें क्या दिया है! यहोवा ने हम लोगों को उस शत्रु को पराजित करने दिया है जिसने हम पर आक्रमण किया। ²⁴जो तुम कहते हो उसे कोई नहीं सुनेगा। उन व्यक्तियों का हिस्सा भी, जो वितरण सामग्री के साथ ठहरे, उतना ही होगा जितना उनका जो युद्ध में गए। सभी का हिस्सा एक समान होगा।” ²⁵दाऊद ने इसे इम्राएल के लिये आदेश और नियम बना दिया। यह नियम अब तक लागू है और चला आ रहा है।

²⁶दाऊद सिकलम में आया। तब उसने उन चीज़ों में से, जो अमालेकियों से ली थीं, कुछ को अपने मित्रों यहूदा नगर के प्रमुखों के लिये भेजा। दाऊद ने कहा, “ये भेटे आप लोगों के लिए उन चीज़ों में से है जिन्हें हम लोगों ने यहोवा के शत्रुओं से प्राप्त कीं।”

²⁷दाऊद ने उन चीज़ों में से जो अमालेकियों से प्राप्त हुई थीं। कुछ को बेटेल के प्रमुखों, नेगेव के रामोत, यत्तीर, ²⁸अरोएर, सिपमोत, एशतमो, ²⁹राकाल, यरहमेलियों और केनियों के नगरों, ³⁰होर्मा, बोराशान, अताक, ³¹और हेब्रोन को भेजा। दाऊद ने उन चीज़ों में से कुछ को उन सभी स्थानों के प्रमुखों को भेजा जहाँ दाऊद और उसके लोग रहे थे।

शाऊल की मृत्यु

31 पलिशती इम्राएल के विरुद्ध लड़े, और इम्राएली पलिशतियों के सामने से भाग खड़े हुए। बहुत से इम्राएली गिलबो पर्वत पर मारे गये। ²पलिशती शाऊल और उसके पुत्रों से बड़ी वीरता से लड़े। पलिशतियों ने शाऊल के पुत्रों योनातान, अबीनादाब और मलकीश को मार डाला।

³युद्ध शाऊल के विरुद्ध बहुत बुरा रहा। धनुधारियों ने शाऊल पर बाण बरसाये और शाऊल बुरी तरह घायल हो गया। ⁴शाऊल ने अपने उस नौकर से, जो कवच ले कर चल रहा था, कहा, “अपनी तलवार निकालो और मुझे मार डालो। तब वे विदेशी मुझे चोट पहुँचाने और मेरा मजाक उड़ाने नहीं आएंगे।” किन्तु शाऊल के कवचवाहक ने ऐसा करना अस्वीकार कर दिया। शाऊल का सहायक बहुत भयभीत था।

इसलिये शाऊल ने अपनी तलवार ली और अपने को मार डाला। ⁵कवचवाहक ने देखा कि शाऊल मर गया। इसलिये उसने भी अपनी तलवार से अपने को मार डाला। वह वहीं शाऊल के साथ मर गया। ⁶इस प्रकार शाऊल, उसके तीन पुत्र और उसका कवचवाहक सभी एक साथ उस दिन मरे।

पलिशती शाऊल की मृत्यु से प्रसन्न हैं

⁷इम्राएलियों ने जो घाटी की दूसरी ओर रहते थे, देखा, कि इम्राएली सेना भाग रही थी। उन्होंने देखा कि शाऊल और उसके पुत्र मर गए हैं। इसलिये उन इम्राएलियों ने अपने नगर छोड़े और भाग निकले। तब पलिशती आए और उन्होंने उन नगरों को ले लिया।

⁸अगले दिन, पलिशती शवों से चीज़ें लेने आए। उन्होंने शाऊल और उसके तीनों पुत्रों को गिलबो पर्वत पर मरा पाया। ⁹पलिशतियों ने शाऊल का सिर काट लिया और

उसका कवच ले लिया। वे इस समाचार को पलिशती लोगों और अपनी देवमूर्तियों के पूजास्थल तक ले गये। ¹⁰उन्होंने शाऊल के कवच को आशतोरेत के पूजास्थल में रखा। पलिशतियों ने शाऊल का शव बेतशान की दीवार पर लटका दिया।

¹¹याबेश गिलाद के लोगों ने उन सभी कारनामों को सुना जो पलिशतियों ने शाऊल के साथ किये। ¹²इसलिये याबेश के सभी सैनिक बेतशान पहुँचे। वे सारी रात

चलते रहे! तब उन्होंने शाऊल के शव को बेतशान की दीवार से उतारा। उन्होंने शाऊल के पुत्रों के शवों को भी उतारा। तब वे इन शवों को याबेश ले आए। वहाँ याबेश के लोगों ने शाऊल और उसके तीनों पुत्रों के शवों को जलाया। ¹³तब इन लोगों ने शाऊल और उसके पुत्रों की अस्थियाँ लीं और याबेश में पेड़ के नीचे दफनायीं। तब याबेश के लोगों ने शोक मनाया। याबेश के लोगों ने सात दिन तक खाना नहीं खाया।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center

Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center

All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online ad space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center

P.O. Box 820648

Fort Worth, Texas 76182, USA

Telephone: 1-817-595-1664

Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE

E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: <http://www.wbtc.org>

Order online – To order a copy of our texts online, go to: <http://www.wbtc.org>

Current license agreement – This license is subject to change without notice. The current license can be found at: <http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm>

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from: <http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html>

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from: <http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html>